।। सिद्धाचलमंडन श्री आदिनाथाय नमः ।।

।। श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथाय नमः ।।

।। सिरसा वंदे महावीरं ।। ।। ऐं नमः सिद्धम् ।।

।। श्रीमद् विजय प्रेम-भुवनभानु-जयघोष-धर्मजित्-जयशेखर-अभयशेखरसूरि सद्गुरुभ्यो नमः ।।

जय जय श्री पार्श्व जिणंदा...

श्री १०८ पार्श्वनाथ प्रभु के चैत्यवंदन-स्तवन-स्तुति का संग्रह

कृपादाता

पूज्यपाद न्यायविशारद आ.दे.श्री.वि. **भुवनभानुसूरीश्वरजी** महाराज

पूज्यपाद गच्छाधिपति आ.दे.श्री.वि. **जयघोषसूरीश्वरजी** महाराज

पूज्यपाद सहजानंदी आ.दे.श्री.वि. **धर्मजित्सूरीश्वरजी** महाराज

पूज्यपाद सूरिमंत्रसमाराधक आ.दे.श्री.वि. **जयशेखरसूरीश्वरजी** महाराज

पूज्यपाद श्रमणीगणनायक आ.दे.श्री.वि. **अभयशेखरसूरीश्वरजी** महाराज

संकलन प्रेरक

पूज्य आचार्यदेव श्री वि. अजितशेखरसूरीश्वरजी महाराज

॥अर्हम्॥

प्रकाशक :

अर्हम् परिवार ट्रस्ट

प्रकाशन वर्ष : सं. 2076

आवृत्ति : प्रथम

मूल्य : श्री १०८ पार्श्वनाथ आराधना तपके आराधक के लिए प्रभावना

प.पू. आचार्य श्रीमद् विजय अजितशेखरसूरीश्वरजी म.सा. प्रेरित

श्री 108

पार्श्वनाथ आराधना तप

आयोजक

Inspired by Pujaniya Shri Ajitshekharsuri M.S.

प्रारंभ 21-12-2019

॥ अर्हम् ॥

पूर्णाहुति 09-01-2021

संपर्क

91300 00800

Deepak Furia :

E-mail : arhamparivar@gmail.com

Website : www.arhamparivar.com

/ arhamparivar / arhamparivar / arhamparivar

मुद्रक : परम ग्राफीक्स, मुंबई. | info@paramgraphics.com

।। श्री १०८ पार्श्वनाथेभ्यो नम:।।

प्रभावनुं प्रभावंतु वर्त्तुळ...

जेना विचार-वाणी-वर्त्तनमां पैसो केन्द्रस्थाने होय ते पैसाना प्रभावमां छे अेम कहेवाय छे. जे सत्ता-खुरशी-राजकारणनी वातोमां ज डूबेलो छे, ते सत्ताना प्रभावमां गणाय. घणाओ आवा घणा दुष्ट तत्त्वोना प्रभावमां वर्षो सुधी डूबेला रही जिंदगी ने परलोक बंनेने बगाडे छे.

घणा श्रद्धावंतो दरेक स्थळे प्रभुश्री पार्श्वनाथनो महिमा गाता होय छे. रोज १०८ पार्श्वनाथ दादाना आल्बमना दर्शन करता होय छे.

१०८ पार्श्वनाथना तीर्थोनी यात्रा करता होय छे.

१०८ पार्श्वनाथना अेकासणा पण करता होय छे.

अेम कही शकाय आ भक्तगण प्रभुश्री पार्श्वनाथना प्रभावमां छे.

मोटा प्रभावक माणसना संबंधमां-संपर्कमां रहेला घणा लोको अे संबंधने En-cash करता होय छे. लाभ उठावता होय छे.

मने पण थयुं, घणा जैनो प्रभुश्री पार्श्वनाथ दादाना प्रभावमां छे ने कलिकाळमां अलग-अलग नामे ने ते नामे प्रगटेला धामे प्रभुश्री पार्श्वनाथ दादाना प्रभाव वारंवार जोवा मळे छे. तो चलो, अर्हं ग्रुप पण प्रभुश्री १०८ पार्श्वनाथ दादाना आ प्रभावनो लाभ उठावे.

केवी रीते ? समग्र भारतना श्रद्धाळु जैनोने अेमना १०८ अेकासणामां जोडीने. सामुदायिक आ तपमां बधा जोडाय तो प्रभुनो विशेष महिमा-प्रभाव अनुभववानो थाय. लाभ ? जैनोना घर-जीवनमां शांति-समता-क्षमता वधे. जैन संघोमां परस्पर प्रेम वधे. जैन तीर्थोनी सुरक्षा वधे. जैन तीर्थो केस-कावादावाओथी मुक्त थाय. अहिंसा-जीवदयाना कार्यो मोटा थाय. सारा थाय. सरळ थाय.

आ तपमां जोडायेला भक्तो ते-ते पार्श्वनाथ प्रभुना अेकासणाना दिवसे विशेषथी ते-ते पार्श्वनाथ प्रभुनी भक्ति करी शके अे आशयथी, १०८ चैत्यवंदन, स्तवन, थोयो ते बधा भक्तोने उपलब्ध थाय अे आशयथी अेक भगीरथ प्रयत्न कर्यो मुनिश्री जयधर्मशेखर विजयजी महाराजे. अे बधा चैत्यवंदन वगेरे जुदा-जुदा संग्रहोमांथी अेकठ्ठा कर्या. शक्य शुद्ध पाठ माटे भारे पुरुषार्थ कर्यो.

परिणामे आ अेक सरस ग्रंथ तैयार थयो छे. प्रभुश्री पार्श्वनाथनो दरेक भक्त आनो उपयोग करी प्रभुमय बने अे कामना छे. आ समग्र तपना मुख्य आधारभूत श्री दिपकभाइ फुरिया अे तथा श्री सतीषभाइ गींदरा अने हीरजीभाइ अे आ कार्य पूर्ण करवा दिवस-रात अेक कर्या छे.

परम ग्राफिक्स-जिगरभाइअे शीघ्र प्रकाशन माटे घणो परिश्रम कर्यो छे. धन्यवाद. आ प्रकाशनमां जे कांइ अशुद्धि रही गइ होय ते बदल मिच्छा मि दुक्कडं.

सहु कारज सरे प्रभु पार्श्वना नामे
शीघ्र भवजल तरे प्रभु पार्श्वना नामे...

- आचार्य विजय अजितशेखर सूरि महाराजना धर्मलाभ

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ
A	श्री अंतरिक्ष-पार्श्व वंदना	१
B	श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ वंदनावली	३
C	श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ स्तुति	६
D	ते पार्श्व शंखेश्वर नाथ मारो	८
E	देववंदनकी विधि - सूत्र सहित	१०
F	**श्री पार्श्वनाथ भगवान के**	
	चैत्यवंदन - स्तवन और स्तुति	
१	श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ	२८
२	श्री जीरावला पार्श्वनाथ	३१
३	श्री दोकडीया पार्श्वनाथ	३३
४	श्री केसरिया पार्श्वनाथ	३५
५	श्री वरकाणा पार्श्वनाथ	३८
६	श्री अमीझरा पार्श्वनाथ	४०
७	श्री कुकडेश्वर पार्श्वनाथ	४३
८	श्री गंभीरा पार्श्वनाथ	४५
९	श्री पोसीना पार्श्वनाथ	४८
१०	श्री वही पार्श्वनाथ	५०
११	श्री जोटींगडा पार्श्वनाथ	५२
१२	श्री नारंगा पार्श्वनाथ	५४

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ
१३	श्री उवसग्गहरं पार्श्वनाथ	५८
१४	श्री अलौकिक पार्श्वनाथ	६१
१५	श्री अवंति पार्श्वनाथ	६३
१६	श्री मनमोहन पार्श्वनाथ	६५
१७	श्री लोढण पार्श्वनाथ	६८
१८	श्री टांकला पार्श्वनाथ	७१
१९	श्री स्वयंभू पार्श्वनाथ	७३
२०	श्री अमृतझरा पार्श्वनाथ	७५
२१	श्री विघ्नहरा पार्श्वनाथ	७९
२२	श्री स्तंभन पार्श्वनाथ	८२
२३	श्री भीलडीया पार्श्वनाथ	८५
२४	श्री नवपल्लव पार्श्वनाथ	८७
२५	श्री कामितपूरण पार्श्वनाथ	८९
२६	श्री गाडलिया पार्श्वनाथ	९२
२७	श्री रावण पार्श्वनाथ	९४
२८	श्री धिंगडमल्ल पार्श्वनाथ	९६
२९	श्री जगवल्लभ पार्श्वनाथ	९८
३०	श्री मनोरंजन पार्श्वनाथ	१००
३१	श्री अंतरीक्ष पार्श्वनाथ	१०२
३२	श्री भद्रेश्वर पार्श्वनाथ	१०५
३३	श्री करेडा पार्श्वनाथ	१०८
३४	श्री फलवृद्धि पार्श्वनाथ	१११

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ
३५	श्री बलेजा पार्श्वनाथ	११३
३६	श्री अजाहरा पार्श्वनाथ	११५
३७	श्री मुहरी पार्श्वनाथ	११७
३८	श्री धृतकल्लोल पार्श्वनाथ	१२०
३९	श्री सहस्त्रफणा पार्श्वनाथ	१२३
४०	श्री कोका पार्श्वनाथ	१२५
४१	श्री स्फुलिंग पार्श्वनाथ	१२७
४२	श्री नवखंडा पार्श्वनाथ	१२९
४३	श्री नवसारी पार्श्वनाथ	१३२
४४	श्री चोरवाड पार्श्वनाथ	१३४
४५	श्री पंचासरा पार्श्वनाथ	१३६
४६	श्री चारुप पार्श्वनाथ	१३९
४७	श्री भीडभंजन पार्श्वनाथ	१४१
४८	श्री मक्षी पार्श्वनाथ	१४५
४९	श्री शंखला पार्श्वनाथ	१४८
५०	श्री चंपा पार्श्वनाथ	१५०
५१	श्री भटेवा पार्श्वनाथ	१५२
५२	श्री नवलखा पार्श्वनाथ	१५४
५३	श्री प्रगटप्रभावी पार्श्वनाथ	१५७
५४	श्री सेसली पार्श्वनाथ	१५९
G	**भावना गीतो**	
१	आंख मारी उघडे त्यां	१६२

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ
२	आणि मन शुद्ध आसथा	१६३
३	आ पारस मारा पोताना	१६३
४	ओ पालनहारे, निर्गुण ओर न्यारे	१६४
५	एवुं लागे छे आजे मने प्रभु	१६५
६	ऊँचा अंबरथी आवोने	१६६
७	चोक पुरावो, मंगल गावो	१६७
८	तुं मने भगवान एक	१६७
९	जिनवर ! तारुं शासन...	१६८
१०	तुज करुणाधार मां	१७०
११	तुजने जोया करुं	१७०
१२	मारो धन्य बन्यो	१७१
१३	दर्शन देजो नाथ	१७२
१४	प्रभु राखजे उघाडा द्वार	१७३
१५	तने रात-दिवस हुं याद करुं	१७३
१६	तमे आवजो रे शंखेश्वर मुकामे	१७४
१७	नागेश्वर का नाथ है हमारा तुम्हारा	१७५
१८	तारुं नाम जगतमां	१७६
१९	मने व्हालु लागे पारसनाम	१७६
२०	मेवा मुक्ति मेवा	१७७
२१	आश भरीने आव्यो स्वामी	१७८
२२	हे शंखेश्वर स्वामी	१७८
२३	मन रमे मन रमे...	१७९
२४	पास शंखेश्वरा (छंद)	१८०

अंतरिक्ष- पार्श्व वंदना

अध्धर रही करता सध्धर ते पार्श्वनाथने वंदना...
गाजे महीमा विश्वमां ते पार्श्वनाथने वंदना...
विदर्भमंडन सुखकरं ते पार्श्वनाथने वंदना...
विघ्नहरा श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथने वंदना ...१

लाखो वरसथी भक्त जननी भीडने जे भांगता...
ने शरणागतवत्सल प्रभु जे पाप दुरित निवारता...
शीरपूर मंडन हितकरा ते पार्श्वनाथने वंदना...
विघ्नहरा श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथने वंदना ...२

दर्शन करे ते नयनयुगने निर्विकार बनावता...
दर्शन करे ते नयनयुगने हर्ष अमृत आपता....
दर्शन करे ते नयनयुगने ज्योतिर्मयी जे सर्जता...
विघ्नहरा श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथने वंदना ...३

वंदन करे ते भक्तगणने वांछितो जे अर्पता...
वंदन करे ते भक्तगणने दुरगति जता रोकता...
वंदन करे ते भक्तगणने वंदनीय बनावता...
विघ्नहरा श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथने वंदना ...४

पूजा करे ते भक्तगणना, अशिव उपद्रव टाळता...
पूजा करे ते भक्त गणने, लक्ष्मी सघळी अर्पता....
पूजा करे ते भक्तगणने, परमपदे पहोंचाडता...
विघ्नहरा श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथने वंदना ...५

छो प्राणमां धबकारमां, ने वसो सदा मुज श्वासमां....
तारा ने मारा नयन मळतां प्रेम प्रगट्यो उरमां....
सेवा करुं हुं हर घडी, आवो पधारो हृदयमां...
विघ्नहरा श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथने वंदना . . . ६

श्री पार्श्वयक्ष सहाय करशे, स्तवन करे जे आपनुं
पद्मावती पूरे छे परचा, रटण करे जे आपनुं...
धरणेन्द्र प्रत्यक्ष तेहने, जे ध्यान धरतो आपनुं...
विघ्नहरा श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथने वंदना . . . ७

परमार्थना अे तेजपूरो स्वार्थ क्षण अेक ना टके...
सामर्थ्य आपो हृदयमां के, काम क्रोध कदी ना टके...
भूलो पडुं ना मार्गथी, आशीष मळजो आपना...
विघ्नहरा श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथने वंदना . . . ८

संसार जंगले भोमिया श्री पार्श्वनाथ जिनेश्वरं...
संसार सागरे नावडी छे, पार्श्वनाथ जिनेश्वरं...
संसार रोगमां वैद मोटा, पार्श्वनाथ जिनेश्वरं....
विघ्नहरा श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथने वंदना . . . ९

श्री अंतरिक्ष नाम सुणता, देह रोमांचित बने,
श्री अंतरिक्ष नाम वदता, जीभ आनंदित बने...
श्री अंतरिक्ष नाम स्मरणे, हृदय मुज भावित बने...
विघ्नहरा श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथने वंदना ...१०

हे देव देजो जीवनमां, समताना सुखनो स्वाद रे...
हे देव देजो मरण काळे, शुभ समाधिनो साथ रे...
हे देव देजो परगतिमां, वर बोधि शुभ संग रे...
विघ्नहरा श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथने वंदना ...११

अध्यात्मना शुभ रंग पूरो, नाथ मारा हृदयमां....
वैराग्य गंगा वहो सदा, हे नाथ हर प्रसंगमां....
ने मोहथी '**अजित**' करवा, देजो दरिशन आपना...
विघ्नहरा श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथने वंदना ...१२

श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ वंदनावली

जेना स्मरणथी जीवनना संकट बधा दूरे टले,
जेना स्मरणथी मनतणा वांछित सहु आवी मले,
जेना स्मरणथी आधि व्याधि ने उपाधि न टके,
एवा श्री शंखेश्वर प्रभुना चरणोमां प्रेमे नमुं... १

विघ्नो तणा वादल भले, चोमेर घेराई जतां,
आपत्तिना कंटक भले, चोमेर वेराई जतां,
विश्वास छे जस नामथी ए दूर फेंकाई जतां,
एवा श्री शंखेश्वर प्रभुना चरणोमां प्रेमे नमुं... २

त्रण कालमां त्रण भुवनमां, विख्यात महिमा जेहनो,
अद्‌भुत छे देदार जेहना, दर्शनीय आ देहनो,
लाखों करोडो सूर्य पण जस आगले झांखा पडे,
एवा श्री शंखेश्वर प्रभुना चरणोमां प्रेमे नमुं... ३

धरणेन्द्र पद्मावती जेनी सदा सेवा करे,
भक्तो तणा वांछित सघला, भक्तिथी पूरा करे,
इन्द्रो नरेन्द्रो ने मुनिन्द्रो, जाप करतां जेहनो,
एवा श्री शंखेश्वर प्रभुना चरणोमां प्रेमे नमुं... ४

जेना प्रभावे जगतना, जीवो बधा सुख पामतां,
जेना न्हवणथी जादवोना, रोग दूरे भागतां,
जेना चरणना स्पर्शने निशदिन भक्तो झंखतां,
एवा श्री शंखेश्वर प्रभुना चरणोमां प्रेमे नमुं... ५

बे काने कुंडल जेहना, माथे मुगट बिराजतो,
आंखो महि करुणा अने, निज हैये हार विराजतो,
दर्शन प्रभुनुं पामी मननो, मोरलो नाचतो,
एवा श्री शंखेश्वर प्रभुना चरणोमां प्रेमे नमुं... ६

ॐह्रीं पदोने जोडीने, शंखेश्वराने जे जपे,
धरणेन्द्र पद्मावती सहित, शंखेश्वराने जे जपे,
जन्मो जनमना पापने, सहु अंतरायो तस तुटे,
एवा श्री शंखेश्वर प्रभुना चरणोमां प्रेमे नमुं... ७

कलिकालमां हाजराहजुर, देवो तणाये देव जे,
भक्तो तणी भव भावठोने, भांगनारा देव जे,
'मुक्तिकिरण' नी ज्योतने, प्रगटावनारा देव जे,
एवा श्री शंखेश्वर प्रभुना चरणोमां प्रेमे नमुं... ८

प्रगटप्रभावी नाम तारुं नाथ साचुं होय जो,
कलिकालमां मुजने प्रभुजी, मुक्ति सुख देखाड तो,
तुज नाम सत्य ठरे ज छे, मुज आतम आनंद तो,
एवा श्री शंखेश्वर प्रभुना चरणोमां प्रेमे नमुं... ९

जे प्रभुना दर्शनथी सहु आपदा दूरे थती,
ने जे प्रभुना स्पर्शथी, लहु सम्पदाओ मली जती,
विघ्नो हरी शिवमार्गना, जे मुक्ति सुखने आपता,
एवा श्री शंखेश्वर प्रभुना चरणोमां प्रेमे नमुं... १०

जेना गुणों ने वर्णवा श्रुत-सागर ओछा पडे,
गंभीरता ने मापवा सहु सागरो पाछा पडे,
जेनी धवलता आगले क्षीरसागरो झांखा पडे,
शंखेश्वरा प्रभु पार्श्व ने भावे करु हुं वंदना... १

जेना वदन नुं तेज निरखी सूर्य आकाश में,
वली नेत्रना शुभ पियुष पामी चन्द्र निशाए जगे,
जेनी कृपा वृष्टि थकी आ वादलाओ वरसतां,
शंखेश्वरा प्रभु पार्श्व ने भावे करु हुं वंदना... २

अतीत चोवीशी तणा नवमा श्री दामोदर प्रभु,
अषाढी श्रावक पूछता को मारा तारक विभु,
ह्या जागा प्रभु पार्श्व ने प्रतिमा भरावी पूजा,
शंखेश्वरा प्रभु पार्श्व ने भावे करु हुं वंदना... ३

सौधर्म कल्पादि विमान पूज्यता जैन रहो,
वली सूर्य चन्द्र विमान मा पूजा थइ जेनी सही,
जे नागलोक नाथ बनीने शांति सुखने अर्पित,
शंखेश्वरा प्रभु पार्श्व ने भावे करु हुं वंदना... ४

आलोकमां आ काली मां पूजा आदिकाल थी
वली नमि विनमि विद्याधरो जेने सेवे बहुमानथी,
त्यांथी धरणपति लही प्रभुने निज भवन पधरावता,
शंखेश्वरा प्रभु पार्श्व ने भावे करु हुं वंदना... ५

जरासंध विद्या जरा ज्यां जादवो ने घेरती,
नेमि प्रभु उपदेशथी श्री कृष्ण अट्ठमने तपी,
पद्मावती बहुमानथी प्रभु पार्श्व प्रतिमा आपती,
शंखेश्वरा प्रभु पार्श्व ने भावे करु हुं वंदना... ६

जेना न्हवणथी जादवोनी जरा दूरे भागती,
शंखध्वनि करी स्थापता त्यां पार्श्वनी प्रतिमा खरी,
जेना प्रभाव नृपगणो ना रोग सहु दूरे थता,
शंखेश्वरा प्रभु पार्श्व ने भावे करु हुं वंदना... ७

जेना स्मरण थी भाविक ना इच्छित कार्यो सिद्धि,
जे नाम था पण विषधरोना विष अमृत बनी जता,
जेना पूजनथी पापीओना पाप ताप शमी जता,
शंखेश्वरा प्रभु पार्श्व ने भावे करु हुं वंदना... ८

ज्यां कामधेनु काम घटना सुरतरु पाछा पडे,
चिंतामणी पारसमणीना तेज ज्यां झांसी पडे,
मनी मंत्र तंत्र ने यंत्र जेना नामथी फल आपता,
शंखेश्वरा प्रभु पार्श्व ने भावे करु हुं वंदना... ९

श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ स्तुति

(छंद : शार्दुल विक्रीकीत) (राग : स्नातस्या)

राजे छे गुण बारथी जिनवरो, सिद्धो गुणे आठथी,
आचार्यो जिनशासने गुण थकी, छे पूज्य छत्रीशथी,
उपाध्याय पचीश ने मुणि गुणे, सत्तावीशे शोभता,
अे पांचे परमेष्ठिने प्रतिदिनं पामो नमी धन्यता... १

ब्रह्मा विष्णु महेश्वर प्रभु तमे, छो बुद्ध ने सांइ छो,
राम श्याम जिनेश्वर गुरु सखा छो मात ने तात छो,
दास्य प्रेष्य गुलाम रुप ज मने स्वीकारजो आपना,
श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ तमने ! मारी हजो वंदना !... २

लोकालोक विभासक प्रभु तमे, भंडार छो पुण्यना,
देवोना पण देव छो जगतमां, साचा दयानिधि छो,
इच्छुं छुं शुभभावथी चरणनी, सेवा मळो आपना,
श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ तमने ! मारी हजो वंदना !... ३

पूजा दान तप व्रतों जप तथा सम्यक्त्व चरित्र ने,
ज्ञान ध्यान बधुं धरुं प्रभु तने आशिष देजो मने,
मारा पाप बधा कृपाळु ! बळशे, सद्भावथी आपना,
श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ तमने ! मारी हजो वंदना !... ४

अेवी द्यो समता मने शुभ सदा, आनंद हैये रहे,
आंखोमां वसजो अमी जग सुखे, वात्सल्य जेथी वहे,
वाणी तत्पर हो सदा मुज विभो, गावा गुणो आपना,
श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ तमने ! मारी हजो वंदना !... ५

जीवो ने क्षण अेक जे सुख मळे, कल्याणके आपना,
तेमां कारण जे गणाय करुणा, भावी तमे भावना,
वरसो ते करुणा कृपाळु करुं छुं, हुं आपने प्रार्थना,
श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ तमने ! मारी हजो वंदना !... ६

वांछे चंद्र चकोर ने मधुकरो, पुष्पो गरीबो धनं,
आंबो कोयल मोर मेघ महिला, झंखे सदा भूषणं,
चाहुं छुं तमने ज हुं प्रभु मळो ! निश्रा थजो दूर ना,
श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ तमने ! मारी हजो वंदना !... ७

तूटे छे नमतां तने जिन बधा, संस्कारो दुर्भावना,
आपे छे तुज वंदनं जिन बधा, लाभो सदा पुण्यना,
खोले छे तुज पूजनं जिन बधी, संसिद्धिना बारणा,
श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ तमने ! मारी हजो वंदना !... ८

सिद्धि निर्मल चित्तनी मुगटशी, शोभे शिरे आपना,
मैत्री जीवशु कर्णकुंडळ अहो, बे राजता आपना,
शोभे श्रेष्ठ **'अजित'** हार करुणा, हैये सदा आपना,
श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ तमने ! मारी हजो वंदना !... ९

ते पार्श्व शंखेश्वर नाथ मारो

(छंद : संसार दावा)

जे नामनो छे महिमा अनेरो,
लेता करे जे गुणमां वधारो,
दे छे सदा जे दु:खमां सहारो,
ते पार्श्व शंखेश्वर नाथ मारो... १

जेना प्रभावे कलिकाळ मांहे,
आनंद शाता सुखने मजा छे,
जेनी कृपा दे शिवनो किनारो,
ते पार्श्व शंखेश्वर नाथ मारो... २

अध्यात्म मार्गे तमने भजे जे,
संसारने शीघ्र तरी जशे ते,
होजो सदा साथ मने तमारो,
ते पार्श्व शंखेश्वर नाथ मारो... ३

हुं दास ने चाकर छुं तमारो,
स्वीकारजो नाथ गणी बिचारो,
आंखो तमारी करुणा फुवारो,
ते पार्श्व शंखेश्वर नाथ मारो... ४

स्वामी तमे सेवक हुं तमारो,
छो देव ने दास छुं हुं तमारो,
पिता तमे पुत्र छुं हुं तमारो,
ते पार्श्व शंखेश्वर नाथ मारो... ५

छुं भक्त तारो भगवान मारा,
तो दूर थाओ अपराध मारा,
मानी विनंती हृदये पधारो,
ते पार्श्व शंखेश्वर नाथ मारो... ६

छो सूर्य तो पंकज हुं विकासी, छो
चंद्र तो हुं छु चकोर पक्षी,
पापी मने आप जरा सुधारो...
ते पार्श्व शंखेश्वर नाथ मारो... ७

दो रागनीवैद दवा तमारी,
देखाडजो आप ज मोक्षपुरी,
साचा सुकानी भववारि तारो... **ते**
पार्श्व शंखेश्वर नाथ मारो... ८

प्यारा तमे मोह **'अजित'** मारा,
मानो तमे जीव बधा ज सारा,
उगारो तो आ पळ ना विचारो...
ते पार्श्व शंखेश्वर नाथ मारो... ९

श्री आदि शांति नेमि जिनने पार्श्व वीरने वंदना,
चोवीश वीश अनंत जिनने भावथी करुं वंदना,
मातंग सिद्धायिका सुणो देव देवी प्रार्थना,
रक्षो श्रमण ने श्रमणी गणने करता विहार साधना.

देववंदनकी विधि के सूत्र

(प्रथम एक खमासमण दिजीए)

इच्छामि खमासमण सूत्र

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, मत्थएण वंदामि.

ईरियावहियं सूत्र

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! ईरियावहियं पडिक्कमामि? इच्छं, इच्छामि पडिक्कमिउं १. ईरियावहियाए, विराहणाए २. गमणागमणे. ३. पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे, ओसाउत्तिंग -पणगदग-मट्टीमक्कडा संताणा-संकमणे ४. जे मे जीवा विराहिया, ५. एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया ६. अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ७.

तस्स उत्तरी सूत्र

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं.

अन्नत्थ सूत्र

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए १. सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं २. एवमाईएहिं, आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ,

हुज्ज मे काउस्सग्गो ३. जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि. ४. ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ५.

(यहाँ १ लोगस्स सूत्र 'चंदेसु निम्मलयरा' तक बोलना है यदि लोगस्स न आता हो तो चार नवकार गिन कर 'नमो अरिहताणं' करके काउसग्ग पूर्ण करना है फिर दो हाथ जोडकर लोग्गससूत्र बोलना है)

लोगस्स सूत्र

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे,
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली १

उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च;
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे. २

सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंस वासुपुज्जं च;
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ३

कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च;
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ४

एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीण जरमरणा;
चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ५

कित्तिय - वंदिय - महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा;
आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ६

चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा,
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ७

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, मत्थएण वंदामि.

(इस सूत्र को तीन बार बोलकर खमासमण देकर बायें पैर को खडा करके हाथ जोडकर बेठिए)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! चैत्यवंदन करुं ? इच्छं.

(योगमुद्रामें)

सकलकुशलवल्ली, पुष्करावर्त्त मेघो,
दुरिततिमिरभानुः, कल्पवृक्षोपमानः,
भवजलनिधि पोतः, सर्वसंपत्तिहेतुः
स भवतु सततं वः, श्रेयसे शांतिनाथः, श्रेयसे पार्श्वनाथः.

श्री पार्श्वनाथ जिन चैत्यवंदन

आश पूरे प्रभु पासजी त्रोडे भव पास,
वामा माता जनमिया अहि लंछन जास ...१
अश्वसेन सुत सुखकरु नव हाथनी काया,
काशी देश वाणारसी पुण्ये प्रभु आया ...२
अेकसो वरसनुं आउखुं अे पाळी पास कुमार,
पद्म कहे मुगते गया नमता सुख निरधार ...३

जंकिंचि (योगमुद्रामें)

जं किंचि नामतित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए,
जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि. ।।१।।

नमुत्थुणं (योगमुद्रामें)

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ।।१।। आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ।।२।। पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ।।३।। लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपइवाणं, लोग-पज्जोअगराणं ।।४।। अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ।।५।। धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं,

धम्मसारहीणं, धम्मवर-चाउरंत-चक्कवट्टीणं ।।६।। अप्पडिहय-वरनाण-दंसणधराणं, वियट्टछउमाणं ।।७।। जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ।।८।। सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिव-मयल-मरुअ-मणंत-मक्खय-मव्वाबाह-मपुणरावित्ति सिद्धिगइनामधेयं, ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं, जिअभयाणं ।।९।। जे अ अईया सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले, संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ।।१०।।

(दो हाथ उँचे जोडकर बोलो / बहेनो को हाथ उंचा करना नहीं)

जय वीयराय (मुक्ताशुक्ति मुद्रामें)

जयवीयराय! जगगुरु! होउ ममं तुह पभावओ भयवं!; भवनिव्वेओ, मग्गा-णुसारिया, इट्ठफलसिद्धि...१, लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च सुहगुरु जोगो तव्वयण - सेवणा आभवमखंडा ...२, (बाद में १ खमासमण देकर दुसरा चैत्यवंदन)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, मत्थएण वंदामि.

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! चैत्यवंदन करुं ? इच्छं.

श्री पार्श्वनाथ जिन चैत्यवंदन

यहाँ पर जो पार्श्वनाथ भगवान की आराधना करनी हो
वह पार्श्वनाथ भगवान का चैत्यवंदन पुस्तकमें देखकर वोले.

जंकिंचि (योगमुद्रामें)

जं किंचि नामतित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए,
जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि. ।।१।।

नमुत्थुणं (योगमुद्रामें)

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ।।१।। आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ।।२।। पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ।।३।। लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपइवाणं, लोग-पज्जोअगराणं ।।४।। अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ।।५।। धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवर-चाउरंत-चक्कवट्टीणं ।।६।। अप्पडिहय-वरनाण-दंसणधराणं, वियट्टछउमाणं ।।७।। जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ।।८।। सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिव-मयल-मरुअ-मणंत-मक्खय-मव्वाबाह-मपुणरावित्ति सिद्धिगइनामधेयं, ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं, जिअभयाणं ।।९।। जे अ अईया सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले, संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ।।१०।।

अरिहंत चेइयाणं

अरिहंतचेइयाणं, करेमि काउस्सग्गं ...१ वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए ...२ सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ...३

अन्नत्थ

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं,

उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए १. सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं २. एवमाईएहिं, आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ३. जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि. ४. ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ५.

(एक नवकार का काउस्सग्ग करे और पारकर)

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः

(यहाँ पर जो पार्श्वनाथ भगवान की आराधना करनी हो वह पार्श्वनाथ भगवान की स्तुति पुस्तकमें देखकर क्रमशः बोले)

स्तुति

शंखेश्वर पासजी पूजीअे, नरभवनो लाहो लीजीअे;
मनवांछित पूरण सुरतरु, जय वामासुत अलवेसरुं. १

लोगस्स सूत्र

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे,
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली १

उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च;
पउमप्पहं सुपासं, जिणंच चंदप्पहं वंदे. २

सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंस वासुपुज्जं च;
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ३

कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च;
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ४

एवं मएअभिथुआ, विहुयरयमला पहीण जरमरणा;
चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ५

कित्तिय - वंदिय - महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा;
आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ६

चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा,
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ७

(बाद में)

सव्वलोए अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए ...२ सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ...३

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए १. सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं २. एवमाईएहिं, आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ३. जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि. ४. ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ५.

(एक नवकार का काउस्सग्ग करे और पारकर स्तुति बोले...)

स्तुति

दोया राता जिनवर अति भला, दोय धोळा जिनवर गुणनीला;
दोय नीला दोय शामल कह्या, सोळे जिन कंचनवर्ण लह्या. २

पुक्खर-वर-दीवड्ढे (श्रुतस्तव) सूत्र

पुक्खर-वर-दीवड्ढे, धायइ-संडे अ जंबू-दीवे अ; भरहेरवय-विदेहे, धम्माइ-गरे नमंसामि ।।१।। तम-तिमिर पडल-विद्धंसणस्स सुरगण-नरिंद-महिअस्स; सीमाधरस्स वंदे पप्फोडिअ-मोहजालस्स ।।२।। जाइ-जरा-मरण-सोग-पणासणस्स, कल्लाण -पुक्खलविसाल-सुहावस्स; को देव-दाणव-नरिंद-गणच्चिअस्स, धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं ।।३।। सिद्धे भो पयओ णमो जिणमऐ, नंदि सया संजमे; देवं नाग-सुवन्न-किन्नर-गण, -स्सब्भूअ-भावच्चिए, लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं, तेलुक्क्-मच्चासुरं; धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ, धम्मुत्तरं वड्ढउ ।।४।।

सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं, वंदण-वत्तिआअे वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए... सद्धाए, मेहाए, धिइए, धारणाए, अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ...

अन्नत्थ

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए १. सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं २. एवमाईएहिं, आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ३. जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि. ४. ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ५.

(एक नवकार का काउस्सग्ग करे और पारकर स्तुति बोले...)

स्तुति

आगम ते जिनवर भाखीयो, गणधर ते हैडे राखीयो;
तेहनो रस जेणे चाखीयो, ते हुवो शिवपुर साखीयो. ३

सिद्धाणं बुद्धाणं (सिद्धस्तव) सूत्र

सिद्धाणं बुद्धाणं, पार-गयाणं परंपरगयाणं, लोअग्गमुवगयाणं, नमो सया सव्व-सिद्धाणं ।।१।। जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति; तं देव-देव-महिअं, सिरसा वंदे महावीरं ।।२।। इक्को वि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स; संसार-सागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ।।३।। उज्जिंत-सेल-सिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स; तं धम्म-चक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ।।४।। चत्तारि अट्ठ दस दोय, वंदिया जिणवरा चउव्वीसं; परमट्ठ-निट्ठि अट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।५।।

वेयावच्चगराणं सूत्र

वेयावच्चगराणं, संतिगराणं, सम्मद्दिट्ठि - समाहिगराणं, करेमि काउस्सग्गं... अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए १. सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं २. एवमाईएहिं, आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ३. जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि. ४. ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ५.

(एक नवकार का काउस्सग्ग करे और पारकर)

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः

बोलकर स्तुति बोले...

स्तुति

धरणेन्द्रराय पद्मावती, प्रभु पार्श्वतणा गुण गावती;
सहु संघना संकट चूरती, **नयनविमल**नां वांछित पूरती. ४

नमुत्थुणं (योगमुद्रामें)

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ।।१।। आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ।।२।। पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ।।३।। लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपइवाणं, लोग-पज्जोअगराणं ।।४।। अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ।।५।। धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवर-चाउरंत-चक्कवट्टीणं ।।६।। अप्पडिहय-वरनाण-दंसणधराणं, वियट्टछउमाणं ।।७।। जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ।।८।। सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिव-मयल-मरुअ-मणंत-मक्खय-मव्वाबाह-मपुणरावित्ति सिद्धिगइनामधेयं, ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं, जिअभयाणं ।।९।। जे अ अईया सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले, संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ।।१०।।

अरिहंत चेइयाणं

अरिहंतचेइयाणं, करेमि काउस्सग्गं...१ वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए ...२ सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ...३

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए १. सुहुमेहिं

अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं २. एवमाईएहिं, आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ३. जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि. ४. ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ५.

(एक नवकार का काउस्सग्ग करे और पारकर)

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः

बोलकर स्तुति बोले...

श्री पार्श्वनाथ स्तुति

पासजिणंदा वामानंदा, जब गरभे फली,
सुपनां देखे अर्थ विशेषे, कहे [१]मघवा मली;
जिनवर जाया सुर हुलराया, हुआ रमणी प्रिये,
[२]नेमिराजी चित्र विराजी, विलोकित व्रत लीये. १

---

१. इन्द्र. २. नेमिनाथ अने राजीमतिना चित्र.

लोगस्स सूत्र

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे,
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली १
उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च;
पउमप्पहं सुपासं, जिणंच चंदप्पहं वंदे. २
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंस वासुपुज्जं च;
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ३
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च;
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ४

एवं मएअभिथुआ, विहुयरयमला पहीण जरमरणा;
चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ५
कित्तिय - वंदिय - महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा;
आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ६
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा,
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ७

(बाद में)

सव्वलोए अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सग्गं ...१ वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए ...२ सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ...३

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए १. सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं २. एवमाईएहिं, आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ३. जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि. ४. ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ५.

(एक नवकार का काउस्सग्ग करे और पारकर स्तुति बोले...)

स्तुति

वीर अेकाकी चार हजारे, दीक्षा धुर जिनपति,
पास ने मल्लि त्रयशत साथे, बीजा सहसे व्रती;
षट् शत साथे संयम धरता, वासुपूज्य जगधणी,
अनुपम लीला ज्ञान रसीला, देजो मुजने घणी. २

पुक्खर-वर-दीवड्ढे (श्रुतस्तव) सूत्र

पुक्खर-वर-दीवड्ढे, धायइ-संडे अ जंबू-दीवे अ; भरहेरवय-विदेहे, धम्माइ-गरे नमंसामि ।।१।। तम-तिमिर पडल-विद्धंसणस्स सुरगण-नरिंद-महिअस्स; सीमाधरस्स वंदे पप्फोडिअ-मोहजालस्स ।।२।। जाइ-जरा-मरण-सोग-पणासणस्स, कल्लाण -पुक्खलविसाल-सुहावस्स; को देव-दाणव-नरिंद-गणच्चिअस्स, धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं ।।३।। सिद्धे भो पयओ णमो जिणमऐ, नंदि सया संजमे; देवं नाग-सुवन्न-किन्नर-गण, -स्सब्भूअ-भावच्चिए, लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं, तेलुक्क्-मच्चासुरं; धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ, धम्मुत्तरं वड्ढउ ।।४।।

सुअस्स भगवओ... करेमि काउस्सग्गं, वंदण-वत्तिआअे वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए... सद्धाए, मेहाए, धिइए, धारणाए, अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ...अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए १. सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं २. एवमाईएहिं, आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ३. जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि. ४. ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ५.

(एक नवकार का काउस्सग्ग करे और पारकर स्तुति बोले...)

स्तुति

जिनमुख दीठी वाणी मीठी, सुरतरु वेलडी,
द्राख विहासे गई वनवासे, पीले रस सेलडी;
साकर सेंती तरणा लेती, मुखे पशु चावती,
अमृत मीठुं स्वर्गे दीठुं, सुरवधू गावती. ३

सिद्धाणं बुद्धाणं (सिद्धस्तव) सूत्र

सिद्धाणं बुद्धाणं, पार-गयाणं परंपरगयाणं, लोअग्गमुवगयाणं, नमो सया सव्व-सिद्धाणं ।।१।। जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति; तं देव-देव-महिअं, सिरसा वंदे महावीरं ।।२।। इक्को वि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स; संसार-सागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ।।३।। उज्जिंत-सेल-सिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स; तं धम्म-चक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ।।४।। चत्तारि अट्ठ दस दोय, वंदिया जिणवरा चउव्वीसं; परमट्ठ-निट्ठि अट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।५।।

वेयावच्चगराणं सूत्र

वेयावच्चगराणं, संतिगराणं, सम्मद्दिट्ठि - समाहिगराणं, करेमि काउस्सग्गं.... अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए १. सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं २. एवमाईएहिं, आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ३. जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि. ४. ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ५. (एक नवकार का काउस्सग्ग करे ओर पारकर)

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः

बोलकर स्तुति बोले...

स्तुति

गजमुख दक्षो वामन यक्षो, मस्तके फणावली,
चार ते बांही [3]कच्छप वाही, काया जस शामली;
चउकर प्रौढा नागारुढा, देवी पद्मावती,
सोवन कान्ति प्रभु गुण गाती, वीर घरे आवती. ४

---

३. काचबो.

नमुत्थुणं (योगमुद्रामें)

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ।।१।। आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ।।२।। पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ।।३।। लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपइवाणं, लोग-पज्जोअगराणं ।।४।। अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ।।५।। धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवर-चाउरंत-चक्कवट्टीणं ।।६।। अप्पडिहय-वरनाण-दंसणधराणं, वियट्टछउमाणं ।।७।। जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ।।८।। सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिव-मयल-मरुअ-मणंत-मक्खय-मव्वाबाह-मपुणरावित्ति सिद्धिगइनामधेयं, ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं, जिअभयाणं ।।९।। जे अ अईया सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले, संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ।।१०।।

जावंति चेइआइं (मुक्ताशुक्ति मुद्रामें)

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ,

सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं! जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि.

जावंत केवि साहू (मुक्ताशुक्ति मुद्रामें)

जावंत केवि साहू, भरहेरवय महाविदेहे अ
सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः

(यहाँ पर जो पार्श्वनाथ भगवान की आराधना करनी हो वह पार्श्वनाथ भगवान का स्तवन पुस्तक में देखकर बोले)

जिन स्तवन (योगमुद्रामें)

(राग - वामानंदन वंदना)

पार्श्व जिन मुझ प्रार्थना, तुं हृदयमां अवधार रे...
जगदानंदन छो धणी... कर मुजने तुं भवपार रे ... १
अवनीतले तुं उपन्यो करवा जगत उपकार रे...
एम जाणीने हुं विभो, आवी उभो दरबार रे ... २
धमधमुं हुं क्रोधथी जिम, धगधगे अंगार रे...
शांत रस वरसाव तुं, करुणारस भंडार रे ... ३
अहंकार पथ्थर छुं विभो, दस मुखनो अवतार रे...
मृदुतासागर तुं मने, कर विनयथी भरपुर रे ... ४
माया वल्ली कारमी, छुं कपटनो आगार रे...
कर सरल मन माहरुँ, हे भुवनना शणगार रे ... ५
मुज लोभने नही थोभ रे, आशाओ छे हजार रे...
तुष्टि दईने दे मने, तुं सुख अनंत अपार रे ... ६

छुं विषयघेलो मननो मेलो, शुद्धि नहीं लगार रे....
अजित करो मने दोषथी, सुणी नाथ मुज पोकार रे ... ७

(दो हाथ उँचे जोडकर बोलो / बहेनो को हाथ उंचा करना नहीं)

जय वीयराय (मुक्ताशुक्ति मुद्रामें)

जयवीयराय! जगगुरु! होउ ममं तुह पभावओ भयवं!; भवनिव्वेओ, मग्गा-णुसारिया, इट्ठफलसिद्धि...१, लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च सुहगुरु जोगो तव्वयण - सेवणा आभवमखंडा ...२

(एक खमासमण दिजीए)

इच्छामि खमासमण सूत्र

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, मत्थएण वंदामि.

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! चैत्यवंदन करुं ? इच्छं.

पार्श्व जिन चैत्यवंदन

जय चिंतामणी पार्श्वनाथ जय त्रिभुवन स्वामी,
अष्ट कर्म रिपु जीतीने पंचमी गति पामी ...१

प्रभु नामे आनंद कंद, सुख संपत्ति लहीअे,
प्रभु नामे भव भव तणा पातिक सवि दहीअे ...२

ॐ ह्रीं वर्ण जोडी करी जपीअे पार्श्व नाम,
विष अमृत थई परिणमे लहिअे अविचल ठाम ...३

जंकिंचि (योगमुद्रामें)

जं किंचि नामतित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए,
जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि.

नमुत्थुणं (योगमुद्रामें)

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ।।१।। आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ।।२।। पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवर पुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ।।३।। लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपइवाणं, लोग-पज्जोअगराणं ।।४।। अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ।।५।। धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं, धम्मवर-चाऊरंत-चक्कवट्टीणं ।।६।। अप्पडिहय-वरनाण-दंसणधराणं, वियट्टछउमाणं ।।७।। जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ।।८।। सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिव-मयल-मरुअ-मणंत-मक्खय-मव्वाबाह-मपुणरावित्ति सिद्धिगइनामधेयं, ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जिअभयाणं ।।९।। जे अ अईया सिद्धा, जे अ भविस्संति, णागए काले, संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ।।१०।।

जय वीयराय (मुक्ताशुक्ति मुद्रामें)

जयवीयराय! जगगुरु! होउ ममं तुह पभावओ भयवं!; भवनिव्वेओ, मग्गा-णुसारिया, इट्ठफलसिद्धि...१, लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च सुहगुरु जोगो तव्वयण - सेवणा आभवमखंडा ...२, (दो हाथ नीचा करके) वारिज्जइ जइवि नियाण, बंधणं वीयराय तुह समये; तहवि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं ...३, दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, समाहि मरणं च बोहिलाभो अ; संपज्जउ मह एअं, तुह नाह पणामकरणेणं ...४, सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याण कारणं, प्रधानं सर्वधर्माणाम्, जैनं जयति शासनम् ...५ (बाद में खमासमण देकर अविधि आशातना मिच्छामि दुक्कडं - कहे)

१ श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ

चैत्यवंदन

सकल भविजन चमत्कारी, भारी महिमा जेहनो,
निखिल आतमराम राजित, नाम जपीअे तेहनो;
दुष्ट कर्माष्टक गंजरी जे, भविक जन मन सुख करो,
नित्य जाप जपीअे पाप खपीअे स्वामी नाम **शंखेश्वरो**. ...१

बहु पुन्यराशि देश काशी तथ्थ नयरी वाणारसी,
अश्वसेन राजा राणी वामा रुपे रति तनु सारिखी;
तस कुखे सुपन चौद सूचित स्वर्गथी प्रभु अवतर्यो,
नित्य जाप जपीअे पाप खपीअे स्वामी नाम **शंखेश्वरो**. ...२

पोष मासे कृष्ण पक्षे, दशमी दिन प्रभु जनमिया,
सुरकुमरी सुरपति भक्ति भावे, मेरु श्रृंगे स्नापिया;
प्रभाते पृथ्वीपति प्रमोदे, जन्म महोत्सव अति कर्यो,
नित्य जाप जपीअे पाप खपीअे स्वामी नाम **शंखेश्वरो**. ...३

त्रण लोक तरुणी मन प्रमोदी, तरुण वय जब आवीया,
तव मात ताते प्रसन्न चित्ते, भामिनी परणावीया;
कमठ शठ कृत अग्नि कुंडे, नाग बळतो उद्धर्यो,
नित्य जाप जपीअे पाप खपीअे स्वामी नाम **शंखेश्वरो**. ...४

पोष वदि अेकादशी दिने, प्रवज्या जिन आदरे,
सुर असुर राजा भक्ति साजा, सेवना झाझी करे;
काउसग्ग करतां देखी कमठे, कीधो परिसह आकरो,
नित्य जाप जपीअे पाप खपीअे स्वामी नाम **शंखेश्वरो**. ...५

तव ध्यान धारारुढ जिनपति, मेघ धारे नवि चळ्यो,
तिहां चलित आसन धरण आयो, कमठ परिषह अटकळ्यो;
देवाधिदेवनी करे सेवा, कमठ ने काढी परो,
नित्य जाप जपीअे पाप खपीअे स्वामी नाम **शंखेश्वरो**. ...६

क्रमे पामी केवलज्ञान कमला, संघ चउविह स्थापीने,
प्रभु गया मोक्षे समेतशिखरे, मास अणसण पाळीने;
शिवरमणी रंगे रमे रसियो, भविक तस सेवा करो,
नित्य जाप जपीअे पाप खपीअे स्वामी नाम **शंखेश्वरो**. ...७

भूत प्रेत पिशाच व्यंतर, जलण जलोदर भय टले,
राज राणी रमा पामे, भक्ति भावे जो मले;
कल्पतरुथी अधिक दाता, जगत त्राता जय करो,
नित्य जाप जपीअे पाप खपीअे स्वामी नाम **शंखेश्वरो**. ...८

जरा जर्जरी भूत यादव, सैन्य रोग निवारता,
वढीयार देशे नित्य बिराजे, भविक जीवने तारता;
अे प्रभु तणां पद पद्म सेवा, **रुप** कहे प्रभुता वरो,
नित्य जाप जपीअे पाप खपीअे स्वामी नाम **शंखेश्वरो**. ...९

स्तवन

(राग - अेसी करो बक्षीस/शिवरंजनी/अब मोहे अैसी आय)

आइ बसो भगवान मेरे मन... आइ बसो भगवान...!
मे निर्गुणी इतना मागत हुं, होवे मेरा कल्याण...
मेरे मन० १

मेरे मन की तुम सब जानो, क्या करुं आप से ब्यान;
विश्व हितैषी दीन दयाळु, रखीये मुज पर ध्यान...
मेरे मन० २

भोगाधीन होवत मन मेलुं, बिसरी तुम गुणगान;
वहां से छुडावो हृदये आइ, अरिभंजक भगवान...
मेरे मन० ३

आप कृपासे तर गये केइ, रह गया मैं दर्दवान;
निगाह रख के निर्मळ कीजीअे, धनवंतरी भगवान...
मेरे मन० ४

श्री **शंखेश्वर** पार्श्व जिनेश्वर दीजिये तुम गुण गान
इनही सहारे **चिद्घन** देवा, बनुंगा आप समान...
मेरे मन० ५

स्तुति

(राग - वीर जिनेसर अति अलवेसर)

श्री शंखेश्वर पासजिणेसर, विनति मुज अवधारो जी,
दुरमति कापी समकित आपी, निज सेवकने तारो जी;
तुं जगनायक शिवसुखदायक, तुं त्रिभुवन सुखकारी जी,
[१]हरि हितकारी प्रभु उपगारी, यादव जरा निवारी जी. १

श्री शंखेश्वरपुर अति सुंदर, जिहां जिन आप बिराजे जी,
सुरगिरि सम अति धवल प्रासादे, दंड कलश ध्वज राजे जी;
चिहुं दिसि बावन जिनमंदिर में, चोवीसे जिन वंदो जी,
भीडभंजन जगगुरु मुख नीरखो, जिम चिरकाले नंदो जी. २

श्री शंखेश्वर साहिब दरिसन, संघ बहु तिहां आवे जी,
[२]घन [३]केकी जिम जिनमुख नीरखी, गोरी मंगल गीत गावे जी;
आठ सत्तर अेकवीस प्रकारे, अठोत्तर बहु भेदे जी,
आगम रीते जगगुरु पूजे, कर्म कठीनने छेदे जी. ३

शंखेश्वरने जिमणें पासे, मा पद्मावती दीपे जी,
सुरपति धरणराज पटराणी, तेजे रवि शशी जीपे जी;
तपगच्छपति श्री विजयजिनेन्द्रसूरि, अहनिसि तस आराधे जी,
कृष्णविजय जिन सेवा करतां, **रंग** अधिक जस वाधे जी. ४

१. कृष्ण. २. मेघ. ३. मोर.

२ श्री जीरावला पार्श्वनाथ

चैत्यवंदन

अश्वसेनह अश्वसेनह जास जिन तात... १

वामा माता जनमिया मोह मद मान कंदण,
प्रभावती हंसगामिनी जिन भविअ रंजण... २

लंछन सरप सोहामणो वाणारसी नो वास,
जिन **जिराउल** मंडणो भवियां पुरो आश... ३

स्तवन

जीरावल्ली पासजी प्यारा,
प्रणमुं प्रेमे पाय तमारा... जीरा० १

सुधा सदन सम सुरत सारी,
आनंद उलसे हृदये हमारा... जीरा० २

प्रगट प्रभावक परम पुरुष तुं,
ध्यान धरुं धरी नेह अपारा... जीरा० ३

त्रिभुवन तारक तरण तारण तुं,
घोर भवोदधि पार उतारा... जीरा० ४

नाथ निरंजन नाम तमारुं,
काटे क्रुर कलिमल मारा... जीरा० ५

पूरव पुन्ये हुं पायो आजे,
दर्शन देव दयाळु तारा... जीरा० ६

महेर करी प्रभु **मणिविजय**ना,
मारो मोह मदन धुतारा... जीरा० ७

स्तुति

(राग - पार्श्वजिणंदा वामानंदा जब गरभे फली.)

पास जीरावल पूजो प्रणमो, खंभायत बंदरे,
केसर अरची टोडर विरची, आंगी अनोपम करे;
नाटिक नाची सेवा साची, करे प्रभु चित्त धरे,
वांछित दाता [१]परभव घाता, थइ मन मंदिरे. ...१

राता धोला नीला पीला, समरुं वली सामला,
[२]खिजमत कीजे लाहो लीजे, मेल्ही मन [३]आमला;
अे प्रभु जपीये पूरा तपीये, थइअे अति निरमला,
जे जिन गाये नवनिधि पाये, वाधे अधिकी कला. ...२

समोसरण सिंहासण बेसी, आवी मिली [४]परखदा,
छत्र विराजे चामर ढाले, वाजे दुंदुभि तदा;
सहुअे तरसे वाणी वरसे, सुणतां सुखसंपदा,
प्रभुजी सोहे सुर नर मोहे, नयणे निरखे मुदा. ...३

रुप मनोहारी शोभे सारी, तेजे अति दीपती,
मली साहेली मोहनगारी, हिंडे वली मलपती;
पद्मावतीदेवी धरणे सेवी, चरण दल दीपती,
वीरमुनि भाखी शरणे राखी, शासननायक जीपती. ...४

१. परभव नाशक, अजन्मा करनार. २. सेवा.
३. अहंकार-द्वेष. ४. पर्षदा.

३ श्री दोकडीया पार्श्वनाथ

चैत्यवंदन

अरिहंत देवा चरणनी सेवा, पंदर भेद सिद्ध प्रणमेवा,
आयरिय उवज्झाय सर्व साधुना नाम, अे पंच जोगे करुं प्रणाम.
... १

अतीत अनागत ने वर्तमान, संप्रति काले वीश विहरमान,
उत्कृष्ट काले अेकसो सित्तेर जिननां नाम, अे पंच जोगे करुं प्रणाम.
... २

बार देवलोके नव ग्रेवयके, पंच अनुत्तर पाताल लोके,
तिर्छा लोक मांहे जे जिन नाम, अे पंच जोगे करुं प्रणाम.
... ३

शाश्वता भुवन जे जिनना कहीअे, शाश्वती प्रतिमा शुं नाम लहीअे,
शाश्वता अशाश्वता अभिराम, अे पंच जोगे करुं प्रणाम.
... ४

दीन न दीठा श्रवणे न सुणीया, भेट्या न भेट्या भावे ज भणीया,
ज्ञानविमल कहे प्रभु समरथ देवा, भवोभव देजो तुम पद सेवा.
... ५

स्तवन

(कजोडी आगली रही - अे देशी)

पार्श्वनाथ त्रेवीसमा, सेवो भक्ति भावे रे;
अंग पूजा पहेली करो, जिम शिव लीला थावे रे. पार्श्व० १

अग्र पूजा बीजी कही, निवेद फल मुंकीजे रे;
प्रभुजीना मुख आगळे, मानवभव फल लीजे रे. पार्श्व० २

भाव पूजा त्रीजी करो, तिहां गुण भगवंतना गावो रे;
त्रण्य प्रकारी पूजा रचो, जो होइ शिवपुर जावो रे. पार्श्व० ३

इम वली अष्ट प्रकारनी, श्री जिनजीअे भाखी रे;
सूत्र सिद्धांत मांहे कही, तिहां रायपसेणी, ते साखी रे. पार्श्व० ४

नाटक कीजे रंगशुं, वाजे ताल मृदंग रे;
जिम समकित उज्वल करो, **जयसौभाग्य** वाधे रंग रे. पार्श्व० ५

स्तुति

(राग - वीरजिनेश्वर अति अलवेसर.)

श्री शंखेसर पास जिनेसर, केशर चरचित कायो जी,
सकल सुरासुर किन्नर नरवर, विद्याधर गुण गायो जी;
अश्वसेननृप वंशविभूषण, जनमनवंछित दायो जी,
भट्टारक श्री विजयाणंदसूरि, प्रणमे प्रभुना पायो जी. ...१

विद्रुम परे दोय राता जिनवर, मरकत जिन दो नीला जी,
चंद्रतणी परे दोय जिन धोला, सोल जिनवर पीला जी;
कज्जलवरणा दोय जिनेसर, टाळे भवदु:ख फंदा जी,
अे चोवीश जिन अहनिशि सेवे, श्री विजयराजसूरींदा जी. ...२

इग्यार अंग ने बार उपांगा, निरमल गंग तरंगा जी,
छ छेद ने चार मूल सूत्र, नय निक्षेपे अभंगा जी;
नंदीसूत्र अनुयोगद्वार, दश पयन्ना सार जी,
विजयमानसूरीसर मुखथी, सुणतां सुख उदार जी. ...३

पउमावइ देवी विघन हरेवी, जिनपदपंकज सेवी जी,
श्री विजयऋद्धिसूरींदना संघने, ऋद्धि वृद्धि करेवी जी;
सकल पंडित मंडलीमंडण, हंसविजय बुधराय जी,
तस शीश सेवक **धीरविजय**ने, मनवंछित सुख थाय जी. ...४

४ श्री केसरीया पार्श्वनाथ

चैत्यवंदन

सेवो पास शंखेश्वरो मन शुद्धे,
नमो नाथ निश्चे करी अेक बुद्धे;
देवी देवलां अन्यने शुं नमो छो ?
अहो भव्य लोको भूला कां भमो छो ? ...१

त्रिलोकना नाथने शुं तजो छो ?
पड्या पासमां भूतने कां भजो छो ?
सुरधेनु छंडी अजा शुं अजो छो ?
महापंथ मूकी कुपंथे व्रजो छो ? ...२

तजे कोण चिंतामणि काच माटे ?
ग्रहे कोण रासभने हस्ती साटे?
सुरद्रुम उखाडी कुण आक वावे ?
महामूढ ते आकुला अंत पावे. ...३

किहां कांकरो ने किहां मेरुशृंग ?
किहां केसरी ने किहां ते कुरंग ?
किहां विश्वनाथं किहां अन्य देवा ?
करो अेकचित्ते प्रभु पास सेवा. ...४

पूजो देवी प्रभावती प्राणनाथं,
सहु जीवने जे करे छे सनाथं;
महातत्त्व जाणी सदा जेह ध्यावे,
तेनां दु:ख दारिद्र दूरे पलावे. ...५

पामी मानुषभवने वृथा कां गमो छो ?
कुशीले करी देहने कां दमो छो ?
नहि मुक्तिवासं विना वीतरागं,
भजो भगवंतं तजो द्रष्टिरागं. ...६

उदयरत्न भाखे सदा हेत आणी,
दयाभाव कीजे प्रभु दास जाणी;
आज माहरे मोतीडे मेह वुठ्या,
प्रभु पास शंखेश्वरो आप तूठ्या. ...७

स्तवन

(राग - मुज अवगुण मत देखो)

पास रंग लग्गा चोलरंग लग्गा,
लग्गा रे दिल लग्गा... (अे आंकणी)

तुंहि जगतके दिलका ज्ञानी, तुंहि परम शिवमग्गा;
अकल अरुपी सिद्ध सरुपी, परम पुरुष जगमग्गा. पास० १

अवर देव तुझ अंतर मोटो, जिण परी हंस ने बग्गा;
बिहुंको नाम कहत जन पंखी, ज्युं कोयल ने कग्गा. पास० २

कंठ वहुं प्रभु की गुणमाला, ज्युं बंभण गले धग्गा;
मेरे मनमां तुंहि ज वसीयो, ज्युं पट अंतर [1]तग्गा. पास० ३

मोह मिथ्यात करत कहा अबथे, चालत नहीं तस ठग्गा;
नाथ निरंजन ध्यान धरंता, दूरे दोहग दग्गा. पास० ४

परमानंद परमसुख पायो, भावठ भवभय भग्गा;
ज्ञानविमल प्रभु सुजस भणंते, भाग्यदिन अब जग्गा. पास० ५

---

१. दोरो = धागो.

स्तुति

(राग - प्रह उठी वंदू ऋषभदेव)

प्रभु पुरिसादाणी, पारसनाथ दयाल,
प्रभु नील कदंब सम, नव कर तनु सुकुमाल;
कलियुगमांहि जस, महिमा प्रबल प्रचुर,
पूजो घसी केसर, चंदन सरस कपूर. ...१

सोवन सिंहासन, गयणं गण नितु चाले,
धर्मध्वज उन्नत, रणझण पवने हाले;
छत्रत्रय चामर, धर्मचक्र तेजाल,
अतिशय जस अेहवा, ते जिन वंदुं त्रिकाल. ...२

आगम गुण मोटा, खोटा नहिं लवलेश,
जिहां समता भाखे, सुखनो हेतु विशेष;
समता आदरिये, ममता करिये दूर,
श्री जिन नामे दहिये, दुरगति तरु अंकुर. ...३

जस अरुण वरण तनु, तेज छे झाकझमाळ,
वाहन जस कुर्कुट, गुरुतर महा विकराल;
पद्मावती देवी, शासननी रखवाल,
श्री **विजयराजसूरि**, शिष्यने मंगलमाल. ...४

५ श्री वरकाणा पार्श्वनाथ

चैत्यवंदन

त्रिभुवनपति त्रेवीसमो श्री **वरकाणो** पास,
बंधन त्रोडे भव तणा पूरे वांछित आस... १

चैत्र वदि चोथ दिने अवतर्या आधी रात,
दशमा प्राणत कल्पथी वामा जेहनी मात... २

पोष वदि दशमी दिने जनम्या पार्श्व कुमार,
अश्वसेन कुल दिनकरु उपकारी अवतार... ३

कमठ तणो मद गाळीने तार्यो नाग तिवार,
नवकारमंत्र सुणावीने आप्यो समकित सार... ४

अेकण भव ने अंतरे पामशे मुक्ति सुठाम,
पासप्रभु मोये दीजीये **कीर्तिचन्द्र** शुभ धाम... ५

स्तवन

(राग - ऋषभ जिनराज मुज आज दिन अति भलो)

पास जिनराज शिरताज त्रिभुवन तिलक,
मालिक सुर दानवा जास सेवे;
मुज [1]महिराण **वरकाणा** पुरमंडणो,
सेवका सयल संपत्ति देवे... जयो... १

रोग जिम अमृतथी तिमिर जिम तरणीथी,
[2]नीरंधरथी यथा ताप नीठे;
पाप संताप तिम दूर जाय सहु,
भविकना पास जिन दरिसण दीठे... जयो... २

अति घणा तप तपी अति घणा जप जपी,
सयल योगिसर जेह ठामे;
तेह शुभ सिद्ध वर रिद्धिने लब्धि सवि,
पास जिन ध्यानथी वेगे पामे... जयो... ३

ग्रह तणा तेज जिम तरणि मांहि भळे,
सिंधु जल जलधिमां जिम समाय;
मंत्र विद्यातणा तेम महिमा घणा,
पास जिन नाममां सर्व माय... जयो... ४

वंश ईक्ष्वाकु [3]अवतंस जिम हंसलो,
तेज अविचल तपे तरणि तोले;
दासने वास तुम पासे जो पास प्रभु,
आस करी [4]सुपरि इम **भाव** बोले... जयो... ५

---

१. राजा. २. वादळ. ३. भूषण. ४. श्रेष्ठ - उत्तम.

स्तुति

(राग - रघुपति राघव राजा राम.)

श्री **वरकाणा पास** प्रभु, मुज वंछित द्यो आनंद विभु;
ज्योति झलामल तनु अति दीपे, काने कुंडल रवि शशी जीपे. १

सुर नर किन्नर वर मोही लीधा, विण मंत्रे ते कोइ कामण कीधा;
हरि हर बंभ पुरंदर देवा, करजोडी मांगे तुज पाय सेवा. २

दरिसन दीठां बहु सुख पायो, आणंद लही रे मुज घरी आयो;
मंगलमाला मुजने दीजे, भव भय फंदा दूरे करीजे. ३

पद्मावती देवी कमला पूरो, संघतणा संकट सवि चूरो;
अरिजन व्याधि अलगा जाये, प्रणमे **जिनेन्द्रविजय** तुम पाये . ४

६ श्री अमीझरा पार्श्वनाथ

चैत्यवंदन

समवसरणमां बेसी जिनवर, देशना देता सदा,
भविक जीव उपकार करतां, नाम गोत्र खपे तदा,
शुकल ध्याननी रढ लागी, शैलेषी करता मुदा,
अघाती चउनो क्षय करी, संसारथी थाता जुदा. ...१

निर्वाण कल्याणक प्रभुनुं, विबुध वर जाणे यदा,
जगमां बधे अंधकार व्यापे, लोक भय पामे तदा,
शाश्वतो आचार जाणी, इन्द्र सहु भेला थता,
चिता रचे जिन देह काजे, आनंद दूरे खोवता. ...२

अग्नि जागे वायु वाजे, धृत मधु तिहां सिंचता,
आचारथी दाढादि लेइ, स्वर्गमांहि सिधावता,
जिन देहनी दाढा तणी, पूजा करी पधरावता,
वली आत्मशुद्धि काजे देवो, जिन गुणोने गावता. ...३

स्तवन

(माहरी सहीरे समाणी - अे देशी.)

निरमल नीरे अंग पखाली, पहिरो खीरोदक साडी रे;
माहरी सही रे समाणी.
बावन्न-चंदन भरीय कचोळी, पास पूजो [१]भंभरभोळी रे;
माहरी सही रे समाणी... १

चंपक केतकी मालती मोगर, मांहि बोलसिरी सुखकारी रे...
माहरी०
लाखीणां [२]टोडर करी जिनवर, कंठे ठवो जयकारी रे...
माहरी० २

कर ग्रही वीणा वेणु मृदंगा, हाथें दीओ अेक ताली रे...
माहरी०
नव-नव राग मेलावत गावत, जिनगुण-रंग रसालीरे...
माहरी० ३

मनवंछित-सुख सुरतरु कंदो, वामानंदन वंदो रे...
माहरी०
निरखत नेह **अमीरस** वरषत, जस मुख पुनिम चंदो रे...
माहरी० ४

प्राणपियारे मोहनगारे, माहरुं मनडुं मोहीने लीधुं रे...
माहरी०
देखत ही नयणे नेह लागो, जाणुं कामणडुं कांइ कीधुं रे...
माहरी० ५
अंतरजामी साहिब [३]सेंती, जाणुं खिण अेक दूर न थाउं रे...
माहरी०
अहनिशि चरणकमल आराहुं, [४]बलि जाउं तो सुख पाउं रे...
माहरी० ६
श्रीलावण्यविजय गुरुराया, पास परमेश्वर प्यारा रे...
माहरी०
पंडित मेरुविजय-गुरु शिष्ये, **विनीतविजय** गुण गाय रे...
माहरी० ७

---

१. सरल, भोळु. २. डमरो. ३. ने (साहिब ने जाणुं.) ४. न्यौछावर, बलिहारी.

स्तुति

(राग - वीरजिनेश्वर अति अलवेसर.)

सकल सुरासुर नर विद्याधर, पूजित पासजिणंदो जी,
सकल जिनेसर भुवन दिनेसर, पाम्या परमानंदो जी;
श्री जिनवाणी अमीय समाणी, सुणतां अतिही आणंदो जी,
धरणेन्द्र पद्मावती पूजो, प्रभु **मुनिमाणिक** चंदो जी. ...१

आ स्तुति-थोय चार वखत बोली शकाय छे.

७ श्री कुकडेश्वर पार्श्वनाथ

चैत्यवंदन

प्रथम तीर्थंकर आउखुं, पूर्व चोराशी लाख,
बीजा बहोंतेर लाख नुं, त्रीजा साइठ भाख. ...१

पचाश चालीश त्रीशने, वीश दशने दोय,
अेक लाख पूर्वतणुं, दशमा शीतल जोय. ...२

हवे चोराशी लाख वर्ष, बारमां बहोंतेर लाख,
साइठ त्रीश ने दशनुं, शांति अेकज लाख. ...३

कुंथु पंचाणुं हजारनुं, अर चोरासी हजार,
पंचावन त्रीशने दशनुं, नेम अेक हजार. ...४

पार्श्वनाथ सो वरसनुं, बहोंतेर श्री महावीर,
अेहवा जिन चोवीशनुं, आयु सुणो सुधीर. ...५

स्तवन

(राग - संभव जिनवर विनंति)

वे दिन मोहे कदी आवेगो, मनमंदिरमें जिनराज हो;
प्रेम धरी [1]पाउ धारशे, सरशे मुज वंछित काज हो.
वे दिन० १

सुमति गुप्ति सहकारना, दल तोरण बांध्या बार हो;
पीठसुबद्ध भावन भली, करुणारस छांटण वारि हो.
वे दिन० २

चंद्रोदय चारित्र झलहळे तिहां, ज्ञानदीपक बहुतेज हो;
दरिसण जाजिम शोभती, तिहां बेसे प्रभु बहु हेज हो.
वे दिन० ३

मन मोटुं छे प्रभु ताहरुं, प्रतिबिंबित लोकालोक हो;
लघु मनमां पण तुं वस्यो, अेहि ज मुज मोटी टेक हो.
वे दिन० ४

जिहां लगे हुं तुम्ह चित्तमां, न वसुं यदि सेवकभाव हो;
तब लगे तपजप सवि वृथा, जिम जलमां काणी नाव हो.
वे दिन० ५

वामानंदन वंदना, अवधारे श्री अरिहंत हो;
पुरिसादाणी पासजी, प्रभु केवल कमला कंत हो.
वे दिन० ६

जेम द्विजिह्व सुमनस कर्यो, पचतो पावक कठवास हो;
तेम भव जलणथी राखीअे, अजरामर कीजे दास हो.
वे दिन० ७

अंतरजामी जन तणो, जाणो सवि जगनी वात हो;
शुं कहेवुं सुपरीक्षने, निष्कारण जनतात हो.
वे दिन० ८

विनतडी इम चित्त धरी, मनमां वसिआ जगभाण हो;
आज थकी **ज्ञानविमल** प्रभुने, ध्याने कोडी कल्याण हो.
वे दिन० ९

---

१. पाय = चरण

स्तुति

(राग - मनोहर मूर्ति महावीर तणी.)

कुकडेश्वर पास प्रभु समरो,
अरिहंत अनंतनुं ध्यान धरो;
जिनागम अमृतपान करो,
शासनदेवी सवि विघ्न हरो. ... १

आ स्तुति-थोय चार वखत बोली शकाय छे.

८ श्री गंभीरा पार्श्वनाथ

चैत्यवंदन

सुमतिनाथ अेकासणुं, करी संयम लीध,
मल्लि पास जिनराय दोय, अट्ठमशुं प्रसिद्ध. ...१...

छठ भक्त करी अवर सर्व, लिये संयमभार,
वासुपूज्य करी चोथभक्त, थया श्री अणगार. ...२...

वर्षान्ते पारणुं करे अे, इक्षुरसे रिषहेश,
परमान्ने बीजे दिने, पारणुं अवर जिनेश. ...३...

विनीता नगरीअे लीये, दीक्षा श्री प्रथम जिणंद,
द्वारानयरी श्री नेमिनाथ, सहसावन वृन्द. ...४...

शेष तीर्थंकर जन्मभूमि, लिये संयमभार,
अणपरण्या श्री मल्लिनाथ, नेमिनाथकुमार. ...५...

वासुपूज्य पास वीरजीअे, भूप थया नवि अेह,
अवर राज्य भोगवी थया, **ज्ञानविमल** गुण गेह. ...६...

स्तवन

(राग : अमे जीवीअे रे सदा जीवन भाइ रे)

अमे सेविये रे, सदा पार्श्व जिणंदजी. (अे आंकणी)

पार्श्वने सेवी, मुक्ति छे लेवी;
ज्ञान दर्शन प्रगटे ज्यां हमाहम. अमे० १

देव नरेन्द्र सेवे, आनन्द लेवे;
नाची रही ज्यां [1]शचीओ रमारम. अमे० २

दुनियामां दु:ख छे, नहीं जरा सुख छे;
सेवो पास छोडी धमाधम. अमे० ३

नहीं राग द्वेष छे, नहीं जरा क्लेश छे;
नासी गया विचारो समासम. अमे० ४

ब्रह्मा नमे छे, विष्णु नमे छे;
महादेव करे छे, नमानम. अमे० ५

पार्श्वने प्रणमे सवी रोग शमे;
टले भवाटवीनुं भमाभम. अमे० ६

गांभु प्रभु धाम छे, पुराणुं गाम छे;
थयो विमलनो यश रमारम. अमे० ७

प्रभु आतम प्रकाशी, कमल विकाशी;
केवल ज्योति झलके छे झमाझम. अमे० ८

उपनामे **गंभीर** छे, करे भवतीरे छे;
मले **लब्धि** करती छमाछम. अमे० ९

---

१. इन्द्राणीओ.

स्तुति

स्नातस्याप्रतिमस्य मेरुशिखरे शच्या विभोः शैशवे,
नृत्यन्त्या विविधाङ्गहार रुचिरैः सङ्गीत गीतादिभिः ।
मूर्तिर्मूर्ध्नि धृता तथा करतले भालस्थले लीलया,
स श्री पार्श्व जिनो जयाय भवतां संचिन्त्य-चिंतामणिः... ।।१।।

हंसांसाहत पद्मरेणु-कपिश-क्षीरार्णवाम्भो-भृतैः,
कुम्भैः कुम्भनिभैः सुरेन्द्रकरिणः सौवर्णरुप्यादिभिः ।
येषां मेरुगिरौ सुरेश्वरगणैर्जन्माभिषेकः कृतोऽ-
तीतानागत-वर्तमान-जिनपास्तेषां तु पुण्यात्मनाम्... ।।२।।

अर्हद्वक्त्र प्रसूतं गणधर रचितं द्वादशाङ्गं विशालं,
पारावारोपमानं सुगमगममणिं सप्तभङ्गी-सुवेलम् ।
गम्भीरार्थं च नाना नयविषमगिरिं बुद्धि-मत्यर्थपोतं,
भूयान्मे लब्ध्यपारं सुविहितभगव-त्कर्णधार-प्रसादात्... ।।३।।

निष्पंकव्योमनील-द्युतिमलसद्दशं बालचन्द्राभदंष्ट्रं,
पार्श्वार्हत्पादपद्म-प्रणति-रतिकरं देव देवी-सुसेव्यम् ।
विघ्नौघं घातयन्तं जिनमहिम-गृहे सर्वदा जैन-सङ्घे,
कूर्मारुढं गजास्यं भुजयुगयुगलं-पार्श्वयक्षं स्मरामि... ।।४।।

९ श्री पोसीना पार्श्वनाथ

चैत्यवंदन

बार गुणो तनुथी अशोक, देव दुंदुभि वाजे;
चामर वींझे चिहुं दिशे, बार छत्र राजे. ...१

सिंहासन सपादपीठ, भामंडल दीपे;
दिव्य ध्वनि मीठाशथी, अमृतरस जीपे. ...२

कुसुमवृष्टि पंचवरणनी अे, प्रातिहार्य अड अेह;
ज्ञानविमलसूरि इम कहे, छे तेहशुं मुज नेह. ...३

स्तवन

(राग : केसरीआ थासुं प्रीत करी रे)

पोसीना पारस, प्रीत लगी है तोरे पांवकी... अे आंकणी

नगरी वाणारसीमां प्रभु जाये, दिक्कुमारी हुलरावे;
सुरगिरि पर जो सुरवर सघरे, प्रेम धरी नवरावे रे. पो० १

प्रभावतीको परण प्रभुजी, भोगावली खपाके;
संजम लेकर केवल पाये, घातीकरम कटाके रे. पो० २

मालकोशमें वाणी सुनके, हरखी परीषद सारी;
संजमधर बहु गुणीजन हुअे, अशक्त समकितधारी रे. पो० ३

इडरसे प्रभु पांच कोस पर, मूर्ति अजब सोहावे;
दर्शन करके भविजन भावे, मस्तक निज डोलावे रे. पो० ४

आत्म कमलमें प्रभु ध्यानकी, प्रीति अतिशय लागी;
लब्धिसूरिकी दु:खदाइ अब, भवभ्रमणा सब भागी रे. पो० ५

स्तुति

(राग - वीर जिनेसर अति अलवेसर.)

पोसीनामंडन समरथ साहिब, पास जिणंद अधिकारी जी,
दरिसण दीठे पाप पलाये, दूरे दूरगति वारे जी;
अे जिन सेवे ऋद्धि सिद्धि होवे, दु:ख दारिद्र्य सवि जायजी,
सोना रुपाना फुलडे वधावो, नितु नितु मंगल थाय जी. १

इणीपरे जिनने पुन्ये निरखी, पवित्र थइ अंग पूजो जी,
भाव भलो मनमांहि ध्यावो, अे समो अवर न दूजो जी;
कुल उत्तम वली समकित आपे, उतारे भवपार जी,
पास जिनेसर छे सुखदायी, मुगति तणा दातार जी. २

त्रिगडे जिनवर त्रिभुवन भाण, नर नारी पडिबोहे जी,
योजन गामिनी वाणी निसुणी, सुर नरना मन मोहे जी;
भामंडल देवदुंदुभि वाजे, नादे अंबर गाजे जी,
सिंहासन पद्मासन बेठा, अद्‌भुत अंगे छाजे जी. ३

ससीवयणी मृगनयनी देवी, पउमावइ धरणेंदा जी,
रुमझुम करती आगल नाचे, मन पामे आणंदा जी;
सकल संघ उवसग्ग निवारो, चित्त चिंता सवि चूरो जी,
पंडित रंगविजय पय प्रणमी, **विवेक** सदा सुख पूरो जी. ४

१० श्री वही पार्श्वनाथ

चैत्यवंदन

कल्याक जिन पासनुं पोष दसमी दिन जाण,
पोष वदि अग्यारसे संयम पास वखाण... १

पोष वदि नवमी थकी त्रण दिन आराधो,
पार्श्वनाथाय नमः वली अर्हते नमः साधो... २

त्रीजे दिन नाथाय नमः वीश माला कीजे,
अेकाशन के अट्ठमे **ज्ञानविमल** शिव लीजे... ३

स्तवन

(अब हम पार भये शिव साधो / श्री सिद्धाचल...)

मूरति पास जिनंद की सोहनी, मोहनी जगत उद्धारण हारी
... अे आंकणी

नील कमल दल तन प्रभु राजे, साजे त्रिभुवन जग सुखकारी;
मोह अज्ञान मान सब दलनी, मिथ्या मदन महा अघ जारी
... मूर्ति १

हुं अति हीन दीन जग वासी, माया मगन भयो सुधबुध हारी;
तो बिन कौन करे मुझ करुणा, वेगा लियो अब खबर हमारी
... मूर्ति २

तुम दरसन बिन बहु दुख पाये, खाये [१]कनक जैसे चरी [२]मतवारी;
कुगुरु कुसंग रंगवस [३]उरझयो, जानी नहीं तुम भक्ति प्यारी
... मूर्ति ३

आदि अंत बिन जग भरमायो, गायो कुवेद कुपंथ निहारी;
जिन रस छोर अन्य रस गायो, पायो अनंत महा दु:ख भारी
... मूर्ति ४

कौन उद्धार करे मुझ केरो, श्री जिन विन सहु लोक मझारी;
करम कलंक पंक सब [४]झारे, जो जन गावत भक्ति तिहारी
... मूर्ति ५

जैसे चंद चकोरन नेहा, मधुकर केतकी दल मन प्यारी;
जनम जनम प्रभु पास जिनेसर, बसो मन मेरे भक्ति तिहारी
... मूर्ति ६

अश्वसेन वामा के नंदन, चंदन सम प्रभु तत्त बुझारी;
निज **आतम** अनुभव रस दीजो, कीजो पलक में [५]प्रतनु संसारी
... मूर्ति ७

---

१. धतुरो. २. नशा मां चूर. ३. उलझ्यो, फसायो.
४. मिटाव्या, नाश कर्या. ५. क्षीण

स्तुति

जय श्री महिनो पोष हो, निर्दोष सुहावे,
वदि दशमी दिन धन्य हो, भविजन मन भावे;
इणि दिन पास जिणंद हो, जनम्या जयकारी,
तिणि कारण भविलोक हो, पूजो सुखकारी. १

आंबिल तप करी सार हो, दशमी दिन रंगे,
पूजो पासजिणंद हो, आणंद उमंगे;
त्रिभुवन तीरथराज हो, महाराज जिणंदा,
ते प्रणमो त्रिकाल हो, जगपाल सुहंदा. २

श्री जिनवचन विलास हो, रचना श्री आगम,
सुणतां श्रद्धा विशुद्ध हो, अट्ठसिद्धि समागम;
श्री जिनपासचरित्र हो, सुणो पवित्र थइनइ,
जिम लहो अभयप्रभृति हो, प्रभुता नित्य नई नई. ३

श्री जिनशासन सेव हो, कारक नागराय,
पउमावइ महामाय हो, संघने सुखदाय;
पंडित श्री जयाणंद हो, शीस कवि **गजाणंद,**
पास जिनेसर पाय हो, प्रणमे आणंद. ४

११ श्री जोटींगडा पार्श्वनाथ

चैत्यवंदन

अद्या भवत् सफलता नयन द्वयस्य,
देव त्वदीय चरणांबुज विक्षणेन,
अद्य त्रिलोक तिलक प्रतिभासते मे,
संसार वारिधिरियं चुलुक प्रमाणम् ...१...

कलेव चंद्रस्य कलंक युक्ता, मुक्तावली चारु गुण प्रपन्ना,
जगत्त्रयस्याभिमतं ददाना, जैनेश्वरी कल्पलतेव मूर्तिः २...

धन्योहं कृतपुण्योहं, निस्तीर्णोहं भवार्ण वात्,
अनादि भव कांतारे, दृष्टो येन श्रुतो मया. ...३...

अद्य प्रक्षालितं गात्रं, नेत्रे च विमली कृते,
मुक्तोहं सर्व पापेभ्यो, जिनेंद्र तव दर्शनात्. ...४...

दर्शनात् दूरित ध्वंसि, वंदनात् वांछित प्रदः,
पूजनात् पूरकः श्रीणां, जिनः साक्षात् सुरद्रुमः ...५...

स्तवन

(राग - वैष्णवजन तो)

उठो उठो रे मोरा आतमराम, जिन मुख जोवा जइये रे...
अे आंकणी

प्रभुजीनुं दरिसण छे अति दोहिलुं, ते किम सोहेलुं जाणो रे;
वारंवार मानव भव जेहवो, मिलवो मुश्कील टाणो रे....
उठो० १

चार दिवसनो चटको मटको, देखीने मत राचो रे;
विणसी जातां वार न लागे, काया घट छे काचो रे....
उठो० २

हीरो हाथ अमूलक पायो, मूढपणे मत गमजो रे;
सहज सलुणा पास जिणंद शुं, राजी थइ चित्त रमजो रे....
उठो० ३

अनंत गुणे करी भरिया जिनवर, पूरव पुन्ये पायो रे;
ते देखीने माहरा मनमां, आनंद अधिक सोहायो रे....
उठो० ४

मन गत मेरा आतमराम, करजो सुकृत कमाइ रे;
लाभ उदय **जिनचंद** लइने, वर्ते सिद्ध सवाइ रे,
वर्ते आनंद वधाइ रे. उठो० ५

स्तुति

(राग - रघुपति राघव राजा राम.)

प्रभु पुरिसादाणी पासजी, त्रिभुवनजन तो जस दास जी;
पसर्यो जगमां जस वासजी, पूरे मनवांछित आस जी ...१

सवि मिलीने बहुत्तरी ते थया, चोवीशी त्रिणना जुजुआ;
दश खेत्रे सातसें वीस मिली, ते सवि हुं प्रणमुं मन रुली. ...२

सूत्र निर्युक्ति भाष्य चुर्णी मली, वली वृत्ति सुविस्तर अति भली;
पंचांगी अर्थे संकली, ते आगम निसुणो लळी लळी. ...३

श्री धरणेन्द्र ने पद्मवाती, शासन अनुभाव देखावती;
ज्ञानविमल मति गुण गावती, बोधिबीज भविक मने वावती. ..४

१२ श्री नारंगा पार्श्वनाथ

चैत्यवंदन

प्रथम जिणंद तणा भला, भव तेर कहीजे;
शांति तणा भव बार सार, नव भव नेम लहीजे. १

दश भव पास जिणंदना, सत्तावीश श्री वीर;
शेष तीर्थंकर त्रिहुं भवे, पाम्या भवजलतीर. २

जिहांथी समकित फरसीयुं अे, तिहांथी गणीअे तेह;
धीरविमल पंडित तणो, **ज्ञानविमल** गुणगेह. ३

स्तवन

(विहरमान भगवान - अे देशी)

श्री नारंगपुर पास पधारो देहरे,
पाटण नगर मझार सुशोभित परिकरे;
उज्वल देवलमांहि जिणंद बिराजतो,
सिद्धशिलानी उपरे सिद्ध ज्युं छाजतो. १

नीलवरण तनु शुकलध्यान धारा मली,
चंद किरण सम देह तिणे थइ निरमली;
चूआ चूआ चंदन केसर मृगमद घन घसी,
भावे सुरनर नारी प्रभु पूजे धसी. २

पंच वरण शुचि फुल गले माला ठवी,
पंचाचार सुरुप अनुप बनी छवी;
धूपघटी घनश्याम कुमत अपयश गयो,
श्री जिनशासन भासन धृतदीपक जयो. ३

आहार रहित वांछाये नीर निवेदशुं,
शिवपद फल संकेत फलादिक मोदशुं;
ज्ञानादिक त्रिक आश धरी अक्षत ठवे,
मधुर स्वरे बहु भाव सहित काव्ये स्तवे. ४

स्वर्गविमान समान भुवन जिनराजनो,
सत्तर बाणुं अे वत्सर दिन अखात्रीज नो;
अमरदासने राज्य देवल शिर ध्वज चड्यो,
पटणी संघनो यश आकाशे जइ अड्यो. ५

मादलनो धौंकार अंबर गाजी रह्यो,
जैनधर्म जशवाद सुपर्व गायन कल्यो;
उत्तम विमल जगीश फली जिनराजथी,
शासनवासन देव ! देजो मुज आजथी. ६

पासे गौतम गणधार सुखाकर पादुका,
सत्यमुनि परिवार शिवश्री कामुका;
धरणवीर पउमावइ पास सेवे सदा,
खिमाविजय जिन नाम मंगळमाळा सदा. ७

स्तुति

(राग - श्री शत्रुंजय तीरथ सार.)

आंबा रायण कीजे भेलां, राजगरां [1]कुंकणीआ केळा,
बीजोरां [2]जंबीरा,
नाळीयेर नवरंग नारिंगा, डोडी दाडिम ने दोडोडिंगां,
अमृतफळ अंजीरा;
खडबूजां कोहलां सुविशाला, शकालिंगा फणस रसाला,
आंबहिडा अतिफारा,
इत्यादिक जायां फल जोउं, श्री गोडीचा आगले ढोउं,
जिम पामुं भवपारा. १

खारीक सिंगोडां अति सुंदर, नीलां श्रीफळ तणीय कचुंबर,
द्राख अखोड बदाम,
चारोली चारबीइ भेली, निमजा पिस्ता आवे मेली,
अे मेवो अभिराम;
पेंडा ने साकरीआ पापड, खाजा तेनी खास उकापड,
खातां पहुंचे हाम,

उपरे गंगा पारिपाड, मां मां करतां मूके माड,
सकल जिनेसर नाम. २

बावन पलनी थाली वारु, शालि दालि ने घीय धरारुं,
अठ्ठोतर सो शाक,
वडां वेढमी लहचूइ पूडा, हांसा गहुंना मांडां रुडा,
जेहमां झाझो वांक;
वासी उवलीय कपूरी करब, पिरसे पद्मिनि रुपे रंभ,
चंपकवरणी चंग,
अेलची वास्यां पाणी निरमल, अेह थकी जिनवाणी शीतल,
सुणीये आणी रंग . ३

पान अडागर नागरवेली, खयरसार सोपारी बेली,
तज अेलचीय लविंग,
जाइफल जावंत्री वरियाली, चीणीकबाबा चतुर निहाली,
करती टाढिक अंग;
अे तंबोल अछे गुणतेर, पुण्यवंत धनी करीय कुबेर,
लिये रसलील भुआल,
कहे गुणविजय सुकवि धरणींद, सानिध्यथकी सदा आनंद, ४
नवनिधि मंगलमाल.

---

१. कोंकण ना केळा. २. अेक प्रकारना मोटा लींबु.

१३ श्री उवसग्गहरं पार्श्वनाथ

चैत्यवंदन

उपसर्ग ने परिषह थाता, देव ने मनुज तणां,
तिर्यंच केरा जे वळी, दुस्सह भेळा मळे घणां,
सवि ते सही शुभ भावथी, जिन घाति कर्म चूरो करे,
निज बाहु वीर्य पराक्रमे, प्रभु ज्ञान केवलने वरे. ...१...

त्रण गढ रचे तिहां देवताओ, रजत स्वर्ण मणीमया,
बार पर्षदा बेसे तिहां, सवि जीव तो आनंद भया,
प्रभु देशना सुणतां तिहां, सुर मनुज ने तिर्यंच जे,
अेक वचन मांही अनेक जीवनी, शंसा प्रभु फेडंत जे. ...२...

अष्ट प्रातिहार्य वली, अगियार अतिशय उपजे,
वाणी गुण पांत्रीश तिम, तीर्थंकरोने नीपजे,
अेणी परे नाण कल्याणक, अरिहंतनुं भावे स्तवुं,
धर्मरत्न पसाय पामी, सिद्धिगति मारे जवुं. ...३...

स्तवन

(राग - कोई आज भजो कोई काल भजो/रघुपति राघव.../अब सोंप दिया...)

जिनराज नमो जिनराज नमो,
अहनिश प्रभु भावे चित्त रमो;
दु:ख दोहग दुरित मिथ्यात गमो,
चउगति भव वनमां जिम न भमो.
जिन० १

प्रभु पास जिनेसर वंदो रे, भवसंचित दुरित निकंदो रे;
प्रभु अनुभवज्ञान दिणंदो रे, समता वनिता सचि इंदो रे.
जिन० २

प्रभु में काळ अनंत गमायो रे, तुम दरिसण सार न पायो रे;
जो पायो तो न सुहायो रे, त्रिकरण शुद्धे नवि ध्यायो रे.
जिन० ३

मुजने मोह [1]महीशे रमाड्यो रे, भवनाटकमांहि भमाड्यो रे;
वळी कुगुरु कुदेवे नमाड्यो रे, युंही अवतार गमाड्यो[2] रे.
जिन० ४

शुद्धबोध नृपति सुप्रसादे रे, लह्युं समकित परम आह्लादे रे;
टळ्युं परम मिथ्यात अनादि रे, थयो सहज स्वभाव सादि रे.
जिन० ५

जब आपे आप विचार्युं रे, तब निश्चय अेहि ज धार्युं रे;
उपगार गुणे न विसार्यो रे, जब विषय कषाय निवार्यो रे.
जिन० ६

अे महिमा सर्व तुमारो रे, तुज मुज वच्चे अंतर वारो रे;
जिम सफल होवे अवतारो रे, **ज्ञानविमल** गुण दिल धारो रे.
जिन० ७

---

१. राजा. २. गुमाव्यो.

स्तुति

(राग : शत्रुंजयमंडन ऋषभ जिणंद दयाल)

मिल [1]चौविह सुरवर, विरचे त्रिगडुं सार,
अढी गाउ उंचोम, पहोलो योजन चार;
बिच कनक सिंघासन, पद्मासन सुखकार,
श्री तीरथनायक, बेसे चौमुख घार. १

तीन छत्र शिरोमणी, चम्मर ढाळे इंद,
देवदुंदुभि वाजे, भांजे कुमति फंद;
भामंडल पूंठे, झबके जाणे दिणंद,
तिहुअण जन मन, मोहे सयल जिणंद. २

द्रव्य भावसुं [3]ठव्णा, नाम निक्षेपा चार,
जिनगणधरे भाख्या, सूत्र सिद्धांत मोझार;
जिनवरनी पडिमा, जिन सरखी सुखकार,
शुभ भावे वंदो, पूजो जग जयकार. ३

दु:खहरणी मंगल, करणी जिनवर वाणी,
भव छेद कृपाणी, मीठी अमीय समाणी;
मन शुद्धे आणी, प्रतिबुझो भविप्राणी,
सुयदेवी पसाये, पामे जयति सुनाणी. ४

---

१. चतुर्विध (भवनपति-व्यंतर-ज्योतिष-वैमानिक).
२. त्रिभुवन. ३. स्थापना.

१४ श्री अलौकिक पार्श्वनाथ

चैत्यवंदन

आठ त्रिगुण जिनवर तणी, नित्य कीजे सेवा,
वहाली मुज मन अति धणी, जिम गज मन रेवा. ...१...

प्रातिहारज आठशुं, ठकुराइ छाजे,
आठे मंगल आगळे, जेह ने वळी राजे. ...२...

भांजे भय आठ मोटका अे, आठ कर्म करे दूर,
आठम दिन आराधतां, **ज्ञानविमल** भरपूर. ...३...

स्तवन

(राग - माता मरुदेवी ना नंद, देखी ताहरी मूरति)

माहरा पास जिनदेव आज ताहरे ध्यान,
माहरे आनंद थयो... अे आंकणी०
कामकुंभ कामधेनु, आवी माहरे बार;
ताहरो जिणंद आज दीठो, मीठो जब दीदार. माहरा० १

अष्टसिद्धि नवनिधि, आज ताहरे नाम;
तेजे जीती पाम्यो, जोर यादव कान्ह. माहरा० २

माता वामादेवी नंद, मुख पुनिमचंद;
अश्वसेन भूप वंश, दीपतो दिणंद. माहरा० ३

सेव सारे चित्त धारे, जेह नर ने नार;
बांह्य ग्रही तेहने तुं, तारे अे संसार. माहरा० ४

देव दानव इंद्र मानव, जख्खर रख्खस कोडी;
पाय नामी सेव सारे, ऊभा बे कर जोडी. माहरा० ५

घणा दिन चाहतां में, दीठो तुं जिणंद;
रोमे रोमे मुज जाग्यो, प्रेम परमाणंद. माहरा० ६

स्वामी अंतरयामी आज, पाम्यो में अेकांत;
दास गणीअे वयण सुणीअे, विनति वृत्तांत. माहरा० ७

आठ कर्म चोरा टाळो, गाळो सघळां पाप;
जाप ताहरे रोग सोग, नाठा सवि संताप. माहरा० ८

तुंहि तूठ्यो अमीय वूठ्यो, मेह माहरे आज;
ज्ञानविमल स्वामी माहरां, सीध्यां सघळां काज. माहरा० ९

स्तुति

श्री सर्वज्ञं ज्योतिरुपं विश्वाधीशं देवेन्द्रं,
काम्याकारं लीलागारं साध्वाचारं श्रीतारम् ।
ज्ञानोदारं विद्यासारं कीर्तिस्फारं श्रीकारं,
देवैर्वन्द्यं सानन्दं भक्त्या वंदे श्री पार्श्वम्... १

जाग्रद्दीपे जंबुद्विपे स्वार्ण शैले श्री शृंगे,
चश्चच्चक्रे ज्योतिश्चक्रे तुंङ्गत्वाढ्ये वैताढ्ये ।
श्रेयस्कारे वक्षस्कारे देवावासे सोल्लासे,
ये वर्तन्ते सार्वऽधीशास्ते सौख्यं वो देयासु... २

सम्यग्ज्ञानं शुद्ध ध्यानं श्रुत्वा ध्यानं सन्मानं,
त्रैलोक्य श्री रामा रम्यं विद्वद्गम्यं प्रागम्यम् ।
अर्हद्वक्त्राम्भोजोद्भूतं शाश्वत पूतं संगीतं,
लक्ष्मीकान्तं वर्णोपेतं वन्दे व्यक्तं सिद्धान्तम्... ३

भव्यानां भक्तानां कल्याणं कुर्वाणा बिभ्राणा,
शीर्षे शौण्डीरं कोटीरं तारं हारं वक्षोजे ।
विख्याता भोगीन्द्रोपेता सालंकारा प्रल्हादं,
यच्छन्ती पद्मादेवी सद्बुद्धिं वृद्धिं वैदुष्यम्... ४

१५ श्री अवंति पार्श्वनाथ

चैत्यवंदन

ऋषभ अजित संभव नमो, अभिनंदन जिनराज,
सुमति पद्म सुपास जिन, चंद्रप्रभ महाराज. ...१...

सुविधि शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य सुखवास,
विमल अनंत श्री धर्म जिन, शांतिनाथ पूरे आस. ...२...

कुंथु अर ने मल्लि जिन, मुनिसुव्रत जगनाथ,
नमि नेमि पारस वीर, अे साचो शिवपुर साथ. ...३...

द्रव्य भावथी सेवीअे, आणी मन उल्लास,
आतम निर्मल कीजिअे, जिम पामीजे शिववास. ...४...

अेम चोवीश जिन समरतां अे, पहोंचे मननी आस,
अमीकुमर अेणी पेरे भणे, ते पामे लील विलास. ...५...

स्तवन

श्री **अवंति** पासजी, अवंतिना शणगारजी;
उपशम रस सुशीलता, रत्नत्रयी मनोहारजी...श्री... १

लोकोत्तर पदवी लही, तार्या दुर्गुणी जन जी;
परम सुख उपार्जवा, लाग्युं तुजमां मुज मन जी...श्री... २

पारंगत परमेश्वरु, मनहर मृदुता धार जी;
कर्म कठोरने पीलवा, आव्यो तुम दरबार जी...श्री... ३

अज्ञानता मुज उपरे, वर्तावे काळो केर जी;
पूर्वभव अभ्यासथी, अरर वाळे वेर जी...श्री... ४

जन्म मरण भय पामीयो, रक्ष रक्ष देव दयाल जी;
सार संसारमां तुंही ज छे, अवर सब आळ पंपाळ जी...श्री... ५

कल्याण केली निकेतन, प्रभुपद पूजा सार जी;
मोक्ष मार्गनी दिपीका, मिथ्या तिमिर प्रहार जी...श्री... ६

प्रसन्न वदन तुज देखीने, उरमां हर्ष नवी माय जी;
विजय गुलाब सेवा थकी, **मणिना** वंछित थाय जी...श्री... ७

स्तुति

(राग-विमल केवलज्ञान कमला)

देवासमंडन दुरितखंडण, सकल मूरत पास अे,
अश्वसेननंदन त्रिजगवंदन, देह चंदन वास अे;
देव दानव असुर मानव, चरण सेवे जास अे,
जिनराज दीनदयाल महिमा-वंत लील विलास अे. १

मचकुंद मरवो मालती, केवडो चंपकमाल अे,
जासुद मोगर पेड पाडल, दमण गंध विलास अे;
बावना चंदनमांहि केशर, घसीय घणुं घनसार अे,
चोवीश जिनवर पूजंत अे, पामीये भवजल पार अे. २

सिद्धान्त सागर पुन्य आगर, भविकजीव आधार अे,
जिन कह्यो अर्थ उदार सुंदर, गुंथियो गणधार अे;
परिहार आलस मोह निंदा, जेह सुणीजे कान अे,
जिनवचन सुणतां लइअे भविकजन, निर्मल केवलज्ञान अे. ३

सारंगनयनी चंदवदनी, कंठ उज्जवल हार अे,
आनंदकरणी अशुभहरणी, विद्यानो भंडार अे;
श्री जिनशासन भविक भासन, तरणीरुप समान अे,
गुणरत्न शीश इम जंपे, दीजीये वरदान अे. ४

१६ श्री मनमोहन पार्श्वनाथ

चैत्यवंदन

प्रेमे प्रणमुं प्रह समे पार्श्व जिनेश्वर देव,
मुरति शांति दायिनी अहनिश करुं तस सेव...१

शांत सुधारस झीलती मुद्रा मोहनगारी,
आणा वहु प्रभु ताहरी कर भव जल पारी...२

तुम मुरति मन रति करे शाश्वत सुखनी अेह,
अश्वसेन वामाकुले नभमणि गुणमणि गेह...३

जगचिन्तामणी जगगुरु जगबंधव जगभाण,
सेवक उद्धरी आपनो करजो आप समान ...४

सायर देखी चन्द्रने भरति करी मलकाय,
सहज **कलानिधि** आपनो निरखी चित्त हरखाय ...५

स्तवन

(राग-तुज मुख सामुं निरखता, मुज लोयण अमीय ठरंता हो, शीतल जिनवरजी)

श्री मन मोहन स्वामी, सुणो विनति कहुं शिरनामी हो,
साहिब अरज सुणो. १

तुं दीन दयाल कहावे, मुज करुणा तो किम नावे हो, सा० २

पंचेन्द्रि पांच पडोसी, तिणे लीधो सघळो लूंसी हो, सा० ३

क्रोधादिक चार जे चोर, ते तो निशदिन दीये दुःख जोर हो, सा० ४

निद्रा विकथा दोय दासी, मोह भूपति केरी खासी हो, सा० ५

तिणे हुं बहु विध नडियो, तृष्णा बेडीमांहे जडियो हो. सा० ६

शुभ कर्मविवरथी आज, भेट्यो तुं त्रिभुवनराज हो, सा० ७

धरी आश आयो हुं चरणे, करी सेवक राखो शरणे हो, सा० ८

हरिहर ब्रह्मादिक देवा, हवे न करुं तेहनी सेवा हो, सा० ९

कुण कुकसानी करे हेवा, जे पाम्या मीठा मेवा हो, सा० १०

पाटणमां पुण्ये मळियो, अणचिंत्यो सरुतरु फळीयो हो, सा० ११

वामा राणीना जाया, प्रभु ध्यानभुवनमां आया हो, सा० १२

श्री खिमाविजय गुरुराया, जिन जितनिशाण बजाया हो, सा० १३

स्तुति

(राग - श्री शत्रुंजय तीरथ सार.)

श्री शंखेश्वर पास जिणंद, दरिसण दीठे अति आणंद,
मोहनवल्ली कंद,
प्रत्यक्ष महिमा जेहनो जाणी, आवे सुर नर उत्तम प्राणी,
भाव भक्ति मन आणी;
पुरिसादाणी [1]पुहवी प्रसिद्ध, नाम जपंता सघली रिद्ध,
दरिसणथी नवे निद्ध,
महिमावंत मनमोहन स्वामी, पूरव पुन्य पसाये पामी,
सेवो अहोनिश [2]धामी. १

सित्तर सो जिन समरण कीजे, मानवभवनो लाहो लीजे,
कारज सघळां सीजे,
पन्नर क्षेत्रे अेह जिणंद, सेव करे जस सुर नर ईंद,
टाळे दोहग दंद;
संप्रतिकाले जिनवर वीश, सीमंधरादिक नामुं शीश,
भाव भले जगदीश,
सित्तर सो जिन यंत्र पसाय, अलिय विघन सवि दूरे जाय,
मनवांछित फल थाय. २

साधु साध्वी वैमानिक देवी, अग्निखूणे अेह पर्षदा लेवी,
जिनवाणी निसुणेवी,
भुवनपति वळी व्यंतरदेवी, ज्योतिषीदेवी अेम कहेवी,
नैऋतखूणे रहेवी;
वायव्यखूणे वळी व्यंतरदेवा, भुवनपति ज्योतिषी करे सेवा,
बोधिबीज फळ लेवा,

वैमानिकदेव राजा राणी, इशानखूणे अेक कहाणी,
इम सुणे सहु जिनवाणी. ३

घमघम करती घुघरी घमके, कटी अंके [३]कटीमेखला खलके,
बांहे बहेरखां झलके,
मस्तक वेणी वांसे वसीयो, सारा शरीरे कंचुक कसीयो,
जिनचरणे चित्त वसीयो;
धरणेन्द्र [४]जाया रंग रसाली, अतिशय जाणे सार [५]मराली,
पास शासन रखवाली,
श्री तपगच्छ सुविहित सुखदाइ, **तेजरुची** विबुध वरदाइ,
द्यो दोलत मुज माई. ४

---

१. पृथ्वी. २. तीर्थाधिपति. ३. कंदोरो. ४. पत्नी. ५. हंसीणी.

१७ श्री लोढण पार्श्वनाथ

चैत्यवंदन

मेरु तणे परे धीर वीर, निरधि गंभीर,
चंद्र तणी परे सौम्य तेज, झलके जिम हीर. ...१...

राग रोष मन नहीं लगार, नहीं विषय विकार,
शांति कांति रति मति प्रमुख, गुण जलधि अपार. ...२...

दिन दिन वान वधु बहुअे, जिम कंचन परभाग,
ते भगवंतनी भक्तिथी, **दान** थयो महाभाग. ...३...

स्तवन

(राग - शी कहुं कथनी मारी राज, शी कहु कथनी मारी.)

प्रभु लोढण पार्श्वजी तारी राज, मुरती मन हरनारी;
जाणे अमृत जरनारी राज, मुरती मन हरनारी...
(अे आंकणी)

निरंजन निरामय निर्मम, निरुपाधिक निराधार;
निर्भय निर्भ्रम निष्कल निर्मल, नयनिधी निर्वीकार.
राज, मुरती० १

भवभय वारण शिवसुख कारण, वारण दिन दुखदवना;
चिंता चुरक चिंतीत दाता, त्राता सकल जगजनना.
राज, मुरती० २

योगयोगेश्वर देवदेवेश्वर, राजराजेश्वर स्वामी;
भक्ति मुक्ति परमानंद दाता, शिवरमणी ना कामी.
राज, मुरती० ३

गुणीजन ने तुं तारे प्रभुजी, तेमा अधिकता शुं तारी;
मुज सरीखा पापीने जो तारे, तो ताहरी बलीहारी.
राज, मुरती० ४

नेह नजरथी नाथ निहाली, मुज मन मंदिर म्हालो;
विजय मुक्ति पद अर्पण करवा, **गुलाब मुनी** कर झालो.
राज, मुरती० ५

स्तुति

(राग - वीर जिनेसर अति अलवेसर)

लोढणमूरति मोहनगारी, देखत जाउं बलिहारी जी,
बावना चंदन भरीय कचोली, सुगंधद्रव्य भला भेली जी;
दक्षिणसाडी पहेरे लाडी, पास पूजे लटकाळी जी,
नीलवरण जिनसेवा सुंहाली, पास दीठे दीवाली जी. १

आबु अष्टापद सुख करीयां, शेत्रुंजे अनंत जीव बहूद्धरीया जी,
शंखेश्वरो गोडी गुण भरीया, गिरनारे नेमि शिव वरीया जी;
वीशे विहरमान चित्त धरीया, वामानंदन देखी दिल ठरीया जी,
सुकृत संचे जग तणे कीरीया, जिन चोवीशे जनमन धरीया जी. २

त्रिण गढ तखते जिनजी बेठां, बार परखदा पडिबोहे जी,
चिहुं मुखवाणी शिव सेनाणी, सांभलतां मन मोहे जी;
चिहुं गति वारण सुखनो कारण, सरस सुधाथी मीठी जी,
जिनवर वाणी पीजे प्राणी, जिम वरो शिववधु राणी जी. ३

दर्भावतीमां साहेब मलीयो, मुज मनवंछित फलीयो जी,
विजयप्रभसूरि गुण मणि दरीयो, आज थकी मुज दिन वलीयो जी;
पास जिन पूजा करो रे रंगीली, देवी पद्मामती मटकाली जी,
हर्षविजय कवि दिन दिन चढती, दे दोलत देवी मयाली जी. ४

१८ श्री टांकला पार्श्वनाथ

चैत्यवंदन

मादल ताल कंसाल सार, भुंगलने भेरी,
ढोल ददामा दडवडी, शरणाई नफेरी. ...१...

श्री मंडल विणा रबाव, सारंगी सार,
तंबुरा करताल शंख, झल्लरी झणकार. ...२...

वाजिंत्र नव-नव छंदशुं अे, गाओ जिनगुण गीत,
ज्ञानविमल प्रभुता लहो, जिम होय जगे जस रीत. ...३...

स्तवन

(राग - मारो मुजरो ल्यो ने राज)

मोहन ! मुजरो लेजो राज ! तुम सेवामां रहेशुं...
अे आंकणी

वामानंदन जगदानंदन, जेह सुधारस खाणी;
मुखने मटके लोचन लटके, लोभाणी इंद्राणी...
मोहन० १

भव-पट्टण चिहुंदिशि चारे गति, चोराशी लाख चौटा;
क्रोध-मान-माया-लोभादिक, चोवटीया अति खोटा...
मोहन० २

मिथ्या-महेतो कुमति-पुरोहित, मदन-सेनाने तोरे;
लांच लइ लख लोक संतापे, मोह-कंदर्पने जोरे...
मोहन० ३

अनादि निगोदना बंदीखाने, तृष्णा तोपे राख्यो;
संज्ञा चारे चोकी मेली, वेद नपुंसक आंक्यो...
मोहन० ४

भव-स्थिति कर्म-विवर लइ नाठो, पुण्य-उदय पण वाध्यो;
स्थावर विकलेंद्रियपणुं ओळंगी, पंचेंद्रियपणुं लाध्यो...
मोहन० ५

मानवभव आरज कुल सदगुरु, विमल-बोध मल्यो मुजने;
क्रोधादिक सहु शत्रु विनाशी, तेणे ओळखाव्यो तुजने...
मोहन० ६

पाटण मांहे परमदयाळु, जगत विभूषण भेट्या;
सत्तर बाणुं शुभ परिणामे, कर्म कठिन बल मेट्या...
मोहन० ७

समकित गज उपशम अंबाडी, ज्ञान कटक बल कीधुं;
खीमाविजय-**जिन**-चरण-रमण सुख, **राज** पोतानुं लीधुं...
मोहन० ८

स्तुति

(राग - वीरजिनेसर अति अलवेसर.)

[1]पोषदशमी दिन पास जिनेश्वर, जनम्या वामामाय जी,
जनम महोच्छव सुरपति कीधो, वलीय विशेषे राय जी;
छप्पन दिगकुमरी हुलराव्यो, सुर नर किन्नर गायो जी,
अश्वसेन कुल विमल आकाशे, भानु उदय सम आयो जी. १

पोषदशमी दिन आंबिल करीअे, जेम भवसागर तरीये जी,
पास जिणंदनुं ध्यान धरतां, सुकृत भंडार भरीये जी;
ऋषभादिक जिनवर चोवीशे, ते सेवो भवि भावे जी,
शिवरमणी वरी शिव घर बेठा, परमपद सोहावे जी. २

केवल पामी त्रिगडे बेठा, पास जिनेश्वर सार जी,
मधुर गिराअे देशना देवे, भविजन मन सुखकार जी;
दान शीयल तप भावे आदरशे, ते तरशे संसार जी,
आ भव परभव जिनवर जपतां, धर्म होशे आधार जी. ३

सकल दिवसमां अधिको जाणी, दशमी दिन आराधो जी,
त्रेवीशमो जिन मनमां ध्यातां, आतम साधन साधो जी;
धरणेन्द्र पद्मावतीदेवी, सेवा करे प्रभु आगे जी,
हर्षविजय गुरु चरणकमलनी, सेवा **राज** मुनि मागे जी. ४

१. गुजराती मागशर वद दशम.

१९ श्री स्वयंभू पार्श्वनाथ

चैत्यवंदन

श्री शंखेश्वर इश्वरं, प्रणमी त्रिकरण योग;
देव नमन चउमासिये, करशुं विधि संयोग. १

ऋषभ अजित संभव तथा, अभिनंदन जिनचंद;
सुमति पद्मप्रभु सातमा, स्वामी सुपास जिणंद. २

चंद्रप्रभु सुविधि जिन, श्री शीतल श्रेयांस;
वासुपूज्य विमल तथा, अनंत धर्म वर वंश. ३

शांति कुंथु अर प्रभु, मल्ली सुव्रत स्वाम;
नमि नेमिसर पास जिन, वर्धमान गुण धाम. ४

वर्तमान जिन वंदताअे, वंद्या देव त्रिकाल;
प्रभु शुभ गुण मुक्ता तणी, **वीर** रचे वरमाल. ५

स्तवन

(राग - सेवो रे भविया ! विमल जिनेश्वर...)

पास जिनेसर प्रगट प्रभावे, पूरो सेवक आशो रे;
तुज नामे मनवंछित सीजे, नवनिधि हुवे घर वासो रे. पास० १

अश्वसेन कुल कमल दिवाकर, माता वामादे नंदो रे;
तुज प्रभावे सवि भय नासे, पामे परमानंदो रे. पास० २

तें नागने कीधो धरणेंद्रो, कमठ हठ मद गाल्यो रे;
तुम पाय सेवाथी ते पायो, समकित रयण सवायो रे. पास० ३

वाघ सिंह विषधर भय नासे, चोर ते नावे पासे रे;
तुज सेवाथी वैरी नासे, वंछित पूगे आशो रे. पास० ४

तुम नामे नवनिधि घरे आवे, पामे शिवसुख भावे रे;
ऋद्धिसिद्धि **कीर्ति** ते पावे, जे तुम गुण नित गावे रे. पास० ५

स्तुति

अनुदिन सोमविमलसूरि जपे, दीपे पास जिणंद,
पाय पद्म निरंतर रत्ता, पउमादेवी अने धरणींद;
जे पूज्यो प्रत्यक्ष [१]ईसरता पूरे, आपे अति आणंद,
सो मनने भावे भवियण वंदो, जिम पामो सुखकंद. १

चउवीश जिनेसर चंदन केशर, चरचो चतुर सुरंग,
चउतीशे अतिशय अतिशय वाणी, पांत्रीस गुणकरे जे संग;
दो राता धोला नीला काला, हेम विमल सम सोल,
ते भावे वंदु अति आणंदु, जिम पामु रंग रोल. २

जिनमुख वदन द्रहथी वहती, गौयम गंगावर्ति,
मिथ्था गिरि भेदी, हुइ त्रिपदी स्थिति;
चार बार अे दश दोय [२]अंगो वंगी, गंग हरी करम मलपंक,
दोइ ताप निवारी सुरनरनारी, सेवो श्री निकलंक. ३

[३]हंसागय गमणी हंसज बेठी, हंस समाणी कंती,
सुर किन्नर सेवी सरसती देवी, सेवो आणी खंती;
कर कनक कमंडल पुस्तक वीणा, वर देती कवि मात,
श्री **सुमति साधु** सुजननी आवी, वाणी अति विख्यात. ४

---

१. वैभव, ऐश्वर्य. २. अंग-उपांग.
३. हंस जेवी गति, हंस पर बेठी, हंस जेवी कांति.

२० श्री अमृतज्ञरा पार्श्वनाथ

चैत्यवंदन

जगन्नाथने हुं नमुं हाथ जोडी,
करुं विनती भक्तिशुं मान मोडी,
कृपानाथ संसारकुं पार तारो,
लह्यो पुण्यथी आज देदार तारो. ...१...

सोहिला मळे राज्य देवादि भोगो,
परम दोहिलो अेक तुज भक्ति जोगो,
घणा कालथी तुं लह्यो स्वामी मीठो,
प्रभु पारगामी सहु दुःख नीठो. ...२...

चिदानंद रुपी परब्रह्म लीला,
विलासी विभो त्यक्त कामाग्नि [१]कीला,
गुणाधार जोगीश नेता अमायी,
जय त्वं विभो भूतले सुखदायी. ...३...

न दीठी जेणे ताहरी योग मुद्रा,
पडया रात दिने महा मोह निद्रा,
कीसी तास होशे गति ज्ञान सिंधो,
भमंता भवे हे जगज्जीवबंधो. ...४...

[२]सुधास्यंदी ते दर्शनं नित्य देखे,
गणुं तेहनो हे विभो जन्म लेखे,
त्वदाज्ञा वशे जे रह्या विश्व मांहे,
करे कर्मनी हाण क्षण अेक मांहे. ...५...

जिनेशाय नित्यं प्रभाते नमस्ते,
भवि ध्यान होजो हृदये समस्ते,
स्तवी देवना देवने हर्ष पुरे,
[३]मुखांभोज भाळी भजे हेज उरे. ...६...

कहे देशना स्वामी वैराग्य केरी,
सुणे पर्षदा बार बेठी भलेरी,
[४]सुधांभोद धारा समी ताप टाळे,
[५]बेहु बांधवा सांभले अेक ढाळे. ...७...

लहे मोक्षनी सुख लीला अनंती,
वरक्षायिक ज्ञान भावे लहंती,
चिदानंद चित्त धरे ध्येय जाणी,
कहे **राम** नित्य जपो जिनवाणी. ...८...

---

१. क्रीडा. २. तारुं अमृत झरतुं. ३. मुख कमल.
४. अमृत भरेला वादळ नी वर्षा ५. बन्ने कान.

स्तवन

(राग - थांरे माथे पंचरंगी पाग सोनेरी छोगलो मारुजी - देशी)

तुज दरिसण निरख्युं **अमृत** सरीखुं सार रे, साहिबजी.
उमाहे चाहुं तुम गुणनो नहि पार रे; साहिबजी.
तुं अतिशयवंतो केवल कमला कंत रे, साहिबजी
तुं महिमावंतो अविनाशी अरिहंत रे. सा० १

तुं अक्षय अरुपी सहज सरुपी संत रे, सा०
नीरागी त्यागी पूरे सवि मन खंति रे; सा०
तुज सम कुण थावे मुद्रा पावे तुम तणी, सा०
जे रागी दोषी देव अनेरा निर्गुणी. सा० २

कुण सक्कर छोडी कंकर लेवे हाथे रे, सा०
त्यजी सुरतरुछाया कुण दीअे बाउल बाथ रे; सा०
लही द्राक्ष निकोली[१] कुण लींबोली खाय रे, सा०
पामी मीठा मेवा कुण खल खावा जाय रे. सा० ३

सुर चीवर मूकी कुण पहिरे लेइ गोण रे, सा०
सुर गजने वेची रासभ संचे कोण रे; सा०
सुर मणिने मूकी कहो कुण सेवे काच रे, सा०
जे बाहिर अंतर जोतां न दीअे साच रे. सा० ४

देव नाम धरावे भक्ति करावे प्रेम रे, सा०
जे आप न तरीया पर तारे कहो केम रे; सा०
दु:ख दुरित [२]अपासन शासन ताहरुं में लह्युं, सा०
संसार अनादि भमता समकित संग्रह्युं. सा० ५

तुं मोहनगारो भवि मन प्यारो अतिघणुं, सा०
सेवक दिल धारो वान वधारो अे भणुं; सा०
तुं त्रिभुवनसामी अंतरयामी माहरो, सा०
नहि दिलमां काचो सेवक साचो ताहरो. सा० ६

अश्वसेन नरिंदा तस छो तुमे नंदा शंकरा, सा०
तुज पय अरविंदा सुरनर वृंदा किंकरा; सा०
भवे भवे भमतां तुम पदसेवा में लही, सा०
जेम गज मने रेवा भूख्यां मेवा वालही. सा० ७

प्रभु लोचन लीलालहेर सुधारस सींचीअे, सा०
जिम तुम गुणरचना दोला दोरे हींचीअे; सा०
ज्ञानविमल प्रकाशी सहजविलासी तुं सदा, सा०
सेवक सुखवासी कीजे अविचल संपदा. सा० ८

---

१. श्रेष्ठ, उत्तम. २. स्पर्श थवा न देनार.

स्तुति

(राग - श्री शत्रुंजय तीरथ सार)

श्री शंखेश्वरा पास जिणंदा, पूजो भवियण नासे दु:ख दंदा,
टाळे भव भय फंदा,
सेवो तीर्थनाथ अमंदा, शाश्वताशाश्वत जिनवर वृदां,
शिवपुर नगरीना चंदा;
आगम अमृत रसनी धारा, सुणतां नासे मोहविकारा,
आदरतां भवपारा,
समकितद्रष्टिने सान्निध्यकारा, भुवनपति देव देवी उदारा,
सहायकारी थाजो अमारा. १

आ स्तुति - थोय चार वखत बोली शकाय.

२१ श्री विघ्नहरा पार्श्वनाथ

चैत्यवंदन

सरसती देवी धरी मनरंग, उलट आणी घणुं अंग,
चैत्यवंदणनो कहुं विचार, जो जो ग्रंथ तणे अनुसार. ...१

देहरे जावा मनमां धरे, चोथ लाभ ते पोते वरे,
ऊभो थावे देहरा काज, छठ लाभ कह्यो जिनराज. ...२

जिनघर जावा उद्यम करे, अट्ठमनो तप लाभे खरे,
देहरा सामा पगला भरे, दसम लाभ तप पोते वरे. ...३

जिनघर पंथ प्रवर्त्ते जिसे, द्वादशनो फल लाभे तिसे,
अर्ध पंथ जिसे अतिक्रमे, पासखमण फल तेणे समे. ...४

मासखमण फल पामे खरो, दृष्टे दीठे जिन देहरो,
जेह फल पामे छे षट्मास, तेह फल पामे देहरा पास. ...५

वर्षी तपनो जे फल सार, ते फल पामे देहरा बार,
वर्ष सहस उपवास तणो, जिन पूज्या तेहथी घणो. ...६

तीन प्रदक्षिणा ततखिण शुद्ध, दीवो दीठे बहुली बुद्ध,
आरती करतां आरत जाय, मंगल दीवे मंगल थाय. ...७

प्रभात पूजा कही जिन आप, रयणीये कीधां टाले पाप,
मध्याह्ने जिन पूजा कही, जन्म पाप हरे ते सही. ...८

सात जन्म सब कीधां पाप, संध्या पूजा टाले संताप,
जिनवर पूजा करवी सही, लाभ तणो तो लेखो नहीं. ...९

करे प्रमार्जन देहरा तणो, तेहने लाभ अछे सो गुणो,
सहस गुणो विलेपन तणो, लाख गुणो फूल माला भणो. ...१०

वर वाजिंत्रने गीत रसाल, लाभ अनंत कह्यो तत्काल,
इम जाणीने करवी भक्ति, जेहने जेहवी होवे शक्ति. ...११

जे नर उठी प्रहरने समे, अरिहंत देवने भावे नमे,
ते नर पामे संपत्ति कोड, **मानविजय** कहे कर जोड. ...१२

स्तवन

(माहरी सहीरे समाणी - अे देशी.)

वामानंदन पासजिणंदा,
मुज मन-कमळ दिणंदा[१] रे, शम-सुरतरुकंदा... १

भीम[२]-भवोदधि तरण[३] तरंडा,
जेर[४] कर्या त्रिक[५]-दंडा रे, नही व्रीडा[६]-क्रीडा... २

क्रोध मान माया ने लोभा,
करी घात थया थीर थोभा रे, लही जगमांहि शोभा... ३

निज गुण-भोगी कर्म वियोगी,
आतम अनुभव योगी रे, नही पुद्गल-रोगी... ४

मन वचनना त्रिक योगने रुंधी,
सिद्ध-विलासने साधी रे, टाळी सकळ उपाधि... ५

यथाख्यात चारित्र गुण लीणो,
केवळ-संपद पीनो रे, योगीश नगीनो... ६

सिद्ध वधु अरिहंत निरंजन,
परमेशर गतलंछन रे, साहिब सहु सज्जन... ७

पंडित गुरु श्री क्षमाविजयनो,
जिन पद-पंकज लीनो रे, छोडी मन कीनो... ८

१. दिनेन्द्र = सूर्य. २. भयंकर भव समुद्र. ३. तरवा माटे नाव समान.
४. दूर कर्या. ५. मन-वचन-काया ना अशुभ व्यापारो. ६. लज्जा.

स्तुति

(राग - श्री शत्रुंजय तीरथ सार.)

परम प्रभु परमेश जिणंद, परम सुखाकर शिवसुखकंद,
प्रणमुं पासजिणंद,
परम दयाल दयानिधि चंद, परम धरम परकास दिणंद,
पेख्या परमाणंद;
पूजित सुर नर पय अरविंद, आणा वहे सिरे इंद नरिंद,
सेवे सकल मुणींद,
वामादेवी केरो नंद, जरा निवारी जीतायो [१]गोविंद,
टाले भवभय फंद.... १

रण अटवी उज्जाड उवेखी, कांटी [२]भरु टळे नहि लेखी,
थलमां थानक रेखी,
सुंदर सुरत सुगुण सुवेखी, मूरत मीठी जाणे विशेखी,
निरखे सहु अनमेखी;
अभिगम पांचे चित्तमां वेखी, प्रणित करे पंचांग गवेखी,
मोह्या मुखडुं देखी,
मनुअ जनम सफलो ईम लेखी, समकित शुद्ध सुरंग सुवेखी,
पवित्र थया प्रभु पेखी.... २

गोडीपासजी बहुगुण खाणी, त्रेवीसमो तीर्थंकर जाणी,
आव्या इन्द्र इन्द्राणी,

सुरनर कोडि मिल्या मंडाणी, त्रिगडे तोरण श्रेणि बंधाणी,
परखदा बार भराणी;
जगगुरु तखत आव्या हित जाणी, योजन मान वखाणे वाणी,
निसुणे सहु भव्यप्राणी,
आतम अंतर अमीय समाणी, अस्थि मज्जामांहि भेदाणी,
शिवसुखनी सहि नाणी.... ३

सुरपति धरणेंदनी देवी, पउमावई अपच्छर सुर सेवी,
प्रभु गुण गीत थुणेवी,
सजी सोले सिणगार सोहेवी, अमर दिव्यांबर अंग धरेवी,
गजगति चाल चलेवी;
जे जिन ध्यान धरे नितमेवी, तेहनां वांछित सयल पूरेवी,
विघ्न हरे ततखेवी,
माता माहरी अरज मानेवी, मेघविजय गुरु सुजस वरेवी,
भाणनी जयत करेवी.... ४

---

१. कृष्ण. २. भरंठीआ.

२२ श्री स्तंभन पार्श्वनाथ

चैत्यवंदन

सिद्धाचल श्री नाभिराय-नंदन जिन नमीये,
शांतिश्वर हत्थिणाउरे, भजी भवदुःख गमीये. ...१...

गढ गिरनारे नेमिनाथ, जादव कुलचंद,
पार्श्वप्रभु **खंभायते**, दीपे दिणइंद. ...२...

श्री साचोरे शोभता अे, वीर प्रभु सुविहाण,
तीरथ पांचे नित नमो, करण **क्षमा कल्याण**. ...३...

स्तवन

सकल मूरति त्रेवीसमो स्वामी, खंभायतपुर मंडणो अे;
नवनिधि पामीये जेहने नामे, पास जिनेसर **थंभणो** अे. १

[1]जासु पसाउले करे सानिधि, धरणेन्द्र ने पद्मावती अे;
भोग संयोगनी अविहड ऋद्धि, पामी जे मन भावती अे. २

दीसे थोडला [2]कलि मझार, महिमा अवर देवता तणो अे;
इणि जगे माने वरण अढार, देव दहेरासर थंभणो अे. ३

[3]न्यान पखे किम जाणीये आज, थंभण पास [4]तुमारडी अे;
जिनगुण गाये नवले नाठी, मनने रंगे गोरडी अे. ४

जयवंत थंभण पास जिणंद, सेवक वंछित सुरतरु अे;
नयण सोहावे पुनिमचंद, भणे नन्नसूरि सेवक उद्धरु अे. ५

---

१. जेमनी कृपाथी/प्रसादथी. २. कलिकाळमां.
३. ज्ञान विना. ४. परखीने, परीक्षा करीने.

स्तुति

(राग - श्रीशत्रुंजय तीरथ सार.)

थंभणपुरवर पास जिणंदो, अश्वसेन कुल कमल दिणंदो,
[1]आमोली आभव कंदो,
मोहराय शिर पाडे दंडो, तिहुअण जास प्रताप अखंडो,
भवियण मन आणंदो;
भव भय भीड भली परे चूरो, मनवांछित सवि संपद पूरो,
प्रभु करो मोरी सारो,
वरुण ज कहीअे पश्चिमस्वामी, जिणे आराध्यो तुं शीरनामी,
[2]वछरलक्ष इग्यारो. १

अेंसी सहस संवच्छर भूतल, सेव्यो स्वामी हीयडे निरमल,
वासव विसहर स्वामी,
पछे पूज्यो ते परमेश्वर, सात मास नव दिवस निरंतर,
[३]दशरथनंदन रायो;
केतो अे काल प्रथम [४]हरि ध्यायो, द्वारिकानगरी पाछल आयो,
पूज्यो देव [५]मोरायो,
द्वारिका दाहे जलमां रहीयो, सागरदत्त शेठे संगहीयो,
कान्तिनगर मोझारो. २

नागार्जुन जोगी ते लीधो, सेढीतट तेहनो रस सीधो,
तुं विण अवर न वीरो,
[६]उवट नदीय वहे वरसाले, तुम उपर घणा वेलु वाले,
गाय झरे सीर खीरो;
अभयदेवसूरि तिहां जाण्यो, भूंय भीतरथी उपर आण्यो,
ते तस दीधी देहो,
थंभणपुरवर प्रासादे बेठो, नयनानंदन जग सहु दीठो,
निला वन जिम मेहो. ३

गुजरधर जवजवणी [७]धसकीय, खंभनगर तें [८]तैयअलंकीय,
पुहविरो प्रगट प्रमाणो,
याद तुमारी जग कुण जाणे? मति विण माणस कीशुं अवखाणे,
हुं पण सहज [९]अयाणो;
कामधेनुं तिहां [१०]पत्त घरंगण, करयल चढीयो कर चिंतामण,
फलीयो अमर विसालो,
देवदयालु भावठ भंजण, जे तुठे संपतपुरमंडण,
श्री पार्श्वनाथ चोसालो. ४

---

१. नाश करीने. २. अगियार लाख वरस. ३. राम. ४. इन्द्र. ५. कृष्ण.
६. उत्पथ. ७. ?? ८. तेज अलंकृत.९. अज्ञानी. १०. घर आंगणे प्राप्त.

२३ श्री भिलडीया पार्श्वनाथ

चैत्यवंदन

श्री शंखेश्वर गाममां श्री शंखेश्वर पास,
तिहां बेठा प्रभु पूरवे सहु केरी आस... १

ठाम ठामना तिहां मिले बहु संघ अपार,
पूजे प्रणमे ने थुणे केइ केइ करे जुहार... २

तेहना वंछित पूरवे अे प्रभुजी पास जिणंद,
देखावे महिमा घणो पउमावई धरणिंद... ३

स्तवन

भीलडीया भावे भजो, भवि आवोने,
पास प्रभु परमेश, मळीने भवि आवोने,
वायु वहे छे शांतिना, भवि आवोने,
विकसे भाव विशेष, मळीने भवि आवोने... १

जग जंजाळ जरी तजी, भवि आवोने,
ल्यो लाखेणो ल्हाव, मळीने भवि आवोने,
बे बिन्दु अमृततणां, भवि आवोने,
झीलो जाळवी दाव, मळीने भवि आवोने... २

पास प्रभु सोहामणा, भवि आवोने,
थन थन हैयु नाचशे, मळीने भवि आवोने,
शीळी शमभरी आंख, भवि आवोने,
ताळी ताननी नांख, मळीने भवि आवोने... ३

श्रद्धा रसनां छांटणा, भवि आवोने,
छांटो छातीओ पुर, मळीने भवि आवोने,
राग रंगना रोळथी, भवि आवोने,
थापो थापा उर, मळीने भवि आवोने... ४

होंश हैयानी उछळे, भवि आवाने,
उमळका अबील गुलाल, मळीने भवि आवोने,
साध्य सिद्धिना **प्रेमशुं**, भवि आवोने,
रास रमीअे लाल, मळीने भवि आवोने... ५

स्तुति

(राग - जिनशासन वंछित पूरणदेव रसाल.)

भीलडीपुरमंडण, सोहिये पासजिणंद,
तेहने तमे पूजो, नर नारीना वृंद;
तेह तुठ्यो ओपे, धण कण कंचन कोड,
ते शिवपद पामे, कर्म तणा भय छोड. १

घन घसीय घनाघन, केशरना रंगरोळ,
तेहमां तमे भेळो, कस्तुरीना घोळ;
तिणशुं तमे पूजो, चउवीशे जिणंद,
जेम दैव दुःख जावे, आवे घर आणंद. २

त्रिगडे जिन बेठा, सोहिये सुंदर रुप,
तस वाणी सुणवा, आवी प्रणमे भूप;
वाणी जोजननी, सुणजो भवियण सार,
ते सुणतां होशे, पातिकनो परिहार. ३

पाय रमझम रमझम, झांझरनो झमकार,
पद्मावती खेले, पार्श्वतणे दरबार;
संघ विघ्न हरजो, करजो जय जयकार,
अेम **सौभाग्यविजय** कहे, सुख संपत्तिदातार. ४

२४ श्री नवपल्लव पार्श्वनाथ

चैत्यवंदन

श्री सेढी तट मेरु धाम थंभण पुर ठाम,
सुरतरु सम सिरि पास सामि राजे अभिराम... १

विबुधेसर सिरि अभयदेव [1]संठविय आणंदिय,
थुइ जल सिंचिय नीलवरण फण पल्लव मंडिय... २

सुरनर सुह कुसुमावलीअे शिवफल दायक जाण,
आराहो भवि अेक मन पावे पद कल्याण... ३

१. संस्थापिने आनंदित थया.

स्तवन

(राग : जगपति नायक नेमिजिणंद)

जिनपति श्री **नवपल्लव** पास, आशा पूरण सुरमणि;
जिनपति धन्य दिवस मुज आज, पाम्यो हुं सेवा तुम तणी. १

जिनपति हरित वरण तुमा देह, अहि लंछन चरणे रह्यो;
जिनपति हरि सेवा करे खास, हरि भय तजी शिवसुख ग्रह्यो. २

जिनपति अश्वसेन नृप नंद, वामा मात उदर धर्यो;
जिनपति नयरी वाराणसी वास, नाथपणे सुरे शिर कर्यो. ३

जिनपति तुं तारक भगवान, कमठ हठी मद भंजणो;
जिनपति समकित दृष्टि लोक, थोक तणा मन रंजणो. ४

जिनपति पामी केवलनाण, मिथ्यातिमिर दूरे करी;
जिनपति तेत्रीश मुनि परिवार, समेतशिखर शिववधु वरी. ५

जिनपति पास जक्ष करे सेव, शासन सुरी पद्मावती;
जिनपति प्रभु पद पद्म निवास, **रुपविजय** पद गावती. ६

स्तुति

(राग - प्रह उठी वंदू ऋषभदेव)

अश्वसेन नरेसर, वामादेवीना नंद,
नव कर तन निरुपम, नीलवरण सुखकंद;
अहिलंछन सेवित, पउमावई धरणींद,
प्रह उठी प्रणमुं, नित प्रति पास जिणंद....१

कुलगिरि वैताढि, कणयाचल अभिराम,
मानुषोत्तर नंदी, रुचक कुंडल सुखठाम;
भुवनेश्वर व्यंतर, जोईस विमाणी धाम,
वरते ते जिनवर, पूजो मुज मन काम....२

जिहां अंग अग्यारे, बारे उपांग छ छेद,
दस पयन्ना दाख्या, मुलसुत्र चउभेद;
जिन आगम षट्द्रव्य, सत्तपदारथ जुत्त,
सांभळी सदहंता, हरे करम तुरंत....३

पद्मवाती देवी, पार्श्व यक्ष प्रत्यक्ष,
सहु संघना संकट, दूरे करवा दक्ष;
समरो जिनभक्ति, सुरी कहे अेक चित्त,
सुख **सुजस** सभावे, समकित द्यो बहुविध....४

२५ श्री कामितपूरण पार्श्वनाथ

चैत्यवंदन

श्रयामि तं जिनं सदा मुदा प्रमाद वर्जितं,
स्वकीय वाग्विलासतो जितोरु मेघ गर्जितं;
जगत्प्रकाम कामित प्रदान दक्षमक्षतं,
पदं दधान-मुच्च-कैर-कैतवोप-लक्षितं... १

सतामवद्य भेदकं प्रभूत संपदा पदं,
वलक्ष पक्ष संगतं जने क्षण क्षण प्रदं;
सदैव यस्य दर्शनं विशां विमर्दि तैनसां,
निहन्त्यशात जातमात्म भक्ति रक्त चेतसां... २

अवाप्य यत्प्रसादमाहितः पुरुश्रियो नरा,
भवन्ति मुक्तिगामिन स्ततः प्रभा प्रभा स्वरा;
भजेयमाश्वसेनिदेव देव मेव सत्पदं,
तमुच्च **मानसेन** शुद्ध बोध वृद्धि लाभदं... ३

स्तवन

(राग - उंचा उंचा शत्रुंजयना शिखरो सोहाय)

प्रबळ-प्रभावे परगडो [१]रे, पुरिसादाणी पास... भविअण! वंदो;
कामगवी[२] सुरमणी[३] परे रे, पूरे वंछित आश... भविअण ! वंदो. १

वंदो वंदो रे सुजाण, भविअण ! वंदो;
वंदो वंदो श्री जिन पास, भविअण ! वंदो. अे आंकणी

नीलकमल-दळ[४] परे भलो रे, दीपे तनु-परकाश... भवि०
हरखे नयण निरखतां रे, उपजे अधिक उल्लास... भवि०
वंदो वंदो रे० २

निरखी-निरखी हरखीये रे, साहिब सहज-सनूर... भवि०
तेज जळाहळ झळहळे रे, जाणे उग्यो सूर... भवि०
वंदो वंदो रे० ३

रत्नजडित विराजता रे, कुंडळ सोहे सनूर... भवि०
मानुं दोये सेवा करे रे, शशि-रवि आयी हजूर... भवि०
वंदो वंदो रे० ४

मणिमय मुकुट मनोहरु रे, सोहे शिर धर्यो सार... भवि०
मानुं तारा परवर्यो रे, चंद अे सेवागार[५]... भवि०
वंदो वंदो रे० ५

सुंदर शिव-रमणी वर्यो रे, [६]परवर्यो ज्ञान अनंत... भवि०
चिदानंद जिनमूरति रे, अकलंकी अरिहंत... भवि०
वंदो वंदो रे० ६

कामित[६] **कामित पूरणो** रे, पापतिमिर भर[७] भाण... भवि०
नयनविजय प्रभु दरिशणे रे, नितु नितु कोडी कल्याण... भवि०
वंदो वंदो रे० ७

---

१. प्रगट - साक्षात. २. कामधेनु. ३. चिंतामणि.
४. पांखडी. ५. सेवक ६. परिवरेलो = विंटळायेलो.
७. ईच्छेली सघळी ईच्छाओने पूरनार.
८. पापरुप अंधकार माटे सूर्य समान.

स्तुति

(राग - जिनशासन वंछित पूरण देव रसाल.)

पालणपुरणमंडण, साहिब पास जिणंद,
मुखे सोहे सुंदर, जिम पुनमनो चंद;
दीपे अति उत्तम, अधर प्रवालि कंद,
जस नामे ज लहीये, नितु नितु अति आणंद. १

श्री शेत्रुंजे सामी, कामित पूरण देव,
रैवतगिरिमंडण, कीजे तेहनी सेव;
श्री ऋषभादिक जिनवर, भूमिमंडलमां जेह,
हुं समरुं अहनिशि, मनमां आणी नेह. २

जिनवरे वखाणी, प्राणीने हित काज,
ते वाणी निसुणो, मुगति शैलनी पाज;
सुणतां तुम्हे समजो, निश्चय ने व्यवहार,
समज्याथी पामो, मुगति तणा सुख सार. ३

चउवीसे देवी, शासननी रखवाल,
मुखचंद अनोपम, अधर विद्रुम परवाल;
सुखसंपत्तिकारी, नर नारीने जेह,
कवि रंगविजयनो, **विवेक** कहे धरी नेह. ४

२६ श्री गाडलिया पार्श्वनाथ

चैत्यवंदन

जाइ जुई मालती, डमरो ने मरुवो,
चंपक केतकी कुंद जाती, जस परिमल गिरुवो. ...१...

बोलसिरि जासुद वेली, वालो मंदार,
सुरभि नाग पुन्नाग अशोक, वली विविध प्रकार. ...२...

ग्रंथिम वेढिम चउविधे अे, चारु रची वरमाल,
नय कहे श्री जिन पूजतां, चैत्री दिन मंगलमाल. ...३...

स्तवन

जिनजी त्रेवीशमो जिन पास, आश मुज पूरवे रे लो,
माहरा नाथजी रे लो,
जिनजी इह भव परभव दुःख, दोहग सवि चूरवे रे लो, माहरा०
जिनजी आठ प्रातिहार्यशुं, जगमां तुं जयो रे लो; माहरा०
जिनजी ताहरा वृक्ष अशोकथी, शोक दूरे गयो रे लो.
माहरा० १

जिनजी जानु प्रमाण गीर्वाण, कुसुम वृष्टि करे रे लो, माहरा०
जिनजी दिव्यध्वनि सुर पूरे के, वांसलीये स्वरे रे लो; माहरा०
जिनजी चामर केरी हार, चलंती अेम कहे रे लो, माहरा०
जिनजी जे नमे अम परे ते भवि, उर्ध्व गति लहे रे लो.
माहरा० २

जिनजी पाद पीठ सिंहासन, व्यंतर विरचिये रे लो, माहरा०
जिनजी तिहां बेसी जिनराज, भविक देशना दीये रे लो; माहरा०
जिनजी भामंडल शिर पूंठे, सूर्य परे तपे रे लो, माहरा०
जिनजी निरखी हरखे जेह, तेहना पातक खपे रे लो.

माहरा० ३

जिनजी देव दंदुभिनो नाद, गंभीर गाजे घणो रे लो, माहरा०
जिनजी त्रण छत्र कहे तुज के, त्रिभुवन पतिपणो रे लो; माहरा०
जिनजी अे ठकुराइ तुज के, बीजे नवि घटे रे लो, माहरा०
जिनजी रागी द्वेषी देव के, ते भवमां अटे रे लो.

माहरा० ४

जिनजी पूजक निंदक दोय के, ताहरे समपणे रे लो, माहरा०
जिनजी कमठ घरणपति उपर, समचित्त तुं गणे रे लो; माहरा०
जिनजी पण उत्तम तुज पाद, **पद्म** सेवा करे रे लो, माहरा०
जिनजी तेह स्वभावे भव्य के, भव सायर तरे रे लो.

माहरा० ५

स्तुति

(राग - आदि जिनवरराया.)

जल जलण वियोगा, भोग संग्राम योगा,
हरिय मयगल सोगा, वात चौरारी रोगा;
सवि भयहर लोगा, पामीया पास योगा,
नरक नहि योगा, पूजता भूरि भोगा. १

पेहरी वरमाला, चारु चोली रसाला,
सरस कुसुममाला, जाइ जुइ गुलाला;
निज कर लेइ बाला, भावे उठी सकाला,
सवि जिनवरमाला, पूज रे तुं विसाला. २

नरयगति निवारे, दु:खना दाह ठारे,
सवि जन आधारे, मान माया विदारे;
भवजलनिधि तारे, जिनवाणी संभारे,
तस घर अधिकारे, सार लच्छी समारे. ३

जस पय धरणिंदो, भावे पूजे सुरिंदो,
दुरित तम [1]मलिंदो, सुखनी वेल कंदो;
हरत कलुस दंदो, पास सेवे अमंदो,
अभिनव सुर चंदो, जाणे **अमृत** वंदो. ४

१. मसली नाखे.

२७ श्री रावण पार्श्वनाथ

चैत्यवंदन

सिद्धाचल गिरनार गिरि, अर्बुद अति उत्तंग,
समेतशिखर जिन वीशनां, मोक्ष कल्याणक चंग....१...

कोटिशीला अष्टापदे, मेरु रुचक समीप,
शाश्वत जिनवर गृह घणां, श्री नंदीसर द्वीप....२...

देवलोक ग्रैवेयक छे, भवनपति वर भवन,
जिनवर बिंब अनेक छे, पूजो ते सर्व सुमन....३...

विहरमान जिनवर भला, अतीत अनागत अद्धा,
नाम स्थापना द्रव्य भाव, चार निक्षेपा लद्धा....४...

सहजानंदी सुखकरु अे, परम दयाळ प्रधान,
पुन्य महोदये पूजतां, लहीअे परम कल्याण....५...

स्तवन

(वोदरि दीलदम साफर चरणा बे - देशी)

शरणां बे सांई शरणा बे,
मेरे दिल में कृपा कर शरणा बे.... अे आंकणी.
जगत उद्धरना विनति मेरे, दिल में कृपा कर शरणा बे;
वात कहुं तुम सुणीअे, में पाये तुम चरणां बे. मेरे० १

धरणाधर तुम आगळ पायो, बेठो हुं दिल धरणा बे;
तारक अवर न कोइ पेख्यो, भवजल पार ऊतरना बे. मेरे० २

वरणावरण न कोइ लागत, काळ अनंते फरणा बे;
आ संसारमें अेही दीसे, जन्म जरा ने मरणा बे. मेरे० ३

भरणा पोषण विषय कषायकी, तिणे प्रभुनाम न सरणा बे;
जे दिन जावत वहोर न आवत, ज्युं गिरिका निझरणा बे. मेरे० ४

भरणा पाप करी अे [१]पिंडा, विण तृपति रहे [२]निरणा बे;
तरणा तो अेक ताहरे ध्याने, मोहनृपति शुं लरणा बे. मेरे० ५

डरणा कोइ दु:ख दरिद्दसे, कर्मकी कोडी [३]निजरणा बे;
करुणा **ज्ञानविमल** प्रभु केरी, भवोदधि पार ऊतरणा बे. मेरे० ६

---

१. अे पोते. २. भूख्या. ३. निर्जरा.

स्तुति

(राग - रघुपति राघव राजा राम.)

पास जिनेसर जगधणी, मनवंछित पूरण सुरमणी;
मिथ्या तमोहर दिनमणी, प्रणमुं परमारथ शिव भणी. १

मंगलचैत्य यत्र द्वारे ठवी, देहरे भगति प्रतिमा वली;
शाश्वत प्रतिमा शाश्वत स्थळे, नमुं बिंब त्रिविध जाणी भली. २

गम्यागम्यादि विवेचना, आगम विण न लहे भविजना;
गणधर पण लीपीने वंदन करे, सन्मार्गो श्रुतने अनुसरे. ३

धरणेन्द्र अने पद्मवाती, पास जिननी सेवा सारती;
सवि संघना विघन निवारती, मुनि **मान** नेहे निहालती. ४

२८ श्री धिंगडमल्ल पार्श्वनाथ

चैत्यवंदन

महिमा पोष वदि तिथि दशमी अपरंपार,
पार्श्व जिनेश्वर पूजीअे जिम लहीअे भवपार... १

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ अर्हते नमः जाण,
गणणुं प्रभुना नामनुं दोय हजार प्रमाण... २

अेकासन दिन त्रण हुवे अथवा अट्ठम सार,
धर्म रत्न प्रभु पासजी तार तार भव पार... ३

स्तवन

[1]राता जेवां फुलडां ने, शामळ जेवो रंग;
आज तारी आंगीनो, कांइ रुडो बन्यो छे रंग... १
प्यारा पासजी हो लाल, दीन दयाल मने नयणे निहाल...
(अे आंकणी)

जोगीवाडे जागतो ने, मातो धिंगडमल्ल;
शामळो सोहामणो कांइ, जीत्या आठे मल्ल... प्यारा० २

तुं छे मारो साहिबो ने, हुं छुं तारो दास;
आश पूरो दासनी कांइ, सांभळी अरदास... प्यारा० ३

देव सघळां दीठा तेमां, अेक तुं अव्वल;
लाखेणुं छे लटकुं तारुं, देखी रीझे दिल... प्यारा० ४

कोइ नमे पीरने ने, कोइ नमे राम;
उदयरत्न कहे प्रभुजी, मारे तुमशुं काम. प्यारा० ५

(१. पाठभेद - राधा)

स्तुति

(राग - रघुपति राघव राजा राम.)

श्री शंखेश्वर पासजी, प्रभु पूरो वंछित आश जी;
प्रभु पोष वदि दशमी जनमीया, चोसठ इंद्र महोच्छव कीया. १

शत्रुंजय तीरथ ध्याइअे, आबु देखी नवनिधि पाइअे;
समेतशिखर तीरथ वंदीये, अष्टापद नामे आणंदीये. २

समोसरणे बेठा पासजी, प्रभु नीलवरण तनु खासजी;
पांत्रीश वाणी गुणे करी, सहु सांभले देशना हितकारी. ३

पास चरणकमल सदा सेवती, धरणींदर ने पद्मावती;
पंडित कुंवरविजय तणो, कहे **रविविजय** वंछित दीयो. ४

२९ श्री जगवल्लभ पार्श्वनाथ

चैत्यवंदन

पुरिसादाणी पार्श्वजी, पूजो भवि भावे;
रोग शोक संकट टळे, दुःख दोहग नावे... १

दोष अढार रहित प्रभु, चोत्रीश अतिशयवंत;
वाणी पांत्रीस गुणे भर्या, पूजो सवि भगवंत... २

जल चंदन कुसुमे करी, धूप दीप मनोहार;
अक्षत फळ नेवैद्यनी, पूजा अष्टप्रकार... ३

अष्टप्रकारी अेणी परे अे, पूजा करशे जेह;
अष्ट महामद टाळीने, अष्टमी गति लहे तेह... ४

सुरतरु सुरमणी सारीखो अे, श्री जगवल्लभ पास;
मोतिविजय कहे आपजो, मुजने अविचल वास... ५

स्तवन

(राग-पहेले भवे अेक गामनो रे/दुःख दोहग दूरे टळ्या रे / श्री जिनवरने प्रगट थयुं रे)

जय जय श्री गुणगण निधान रे, श्री **जगवल्लभ** पास;
मृगमद परे महके सदा रे महिमा सुजस जस वास. १

जिणंदराय निरख्ये अतिसुख थाय, जे वचनगुणे न कहाय;
जिणंदराय, निरख्ये अतिसुख थाय... अे आंकणी
नमित अमित शचीपति तणा रे, मुकुटरत्न रुचि नीर;
धौत पदांबुज जेहनां रे, भांज्या भवजंजीर. जिणंद० २

सफल जन्म दिन आजनो रे, पसरी मंगलमाळ;
नेत्र पवित्र निरखी थयां रे, गात्र नमत उजमाल. जिणंद० ३

आज मिथ्यामत-तम हण्यो रे, प्रगट्यो अनुभव सूर;
कर्म कषायबल क्षय थया रे, जब तुं ध्यान हजूर. जिणंद० ४

तुम आणा गंगाजळे रे, नाह्यो धरी उच्छाह;
अशुचि उपाधि सवि मिट्या रे, विरम्यो विषयदाह. जिणंद० ५

ज्ञान क्रिया भेद भूमिका रे, किरिया संग सरुप;
प्रगटे धर्म संन्यासथी रे, अे सवि तुंहि अनुप. जिणंद० ६

श्री अश्वसेन नृप लाडीलो रे, वामानंदन देव;
निर्विकल्प तुम सेवना रे, द्यो मुज अेहवी टेव. जिणंद० ७

ज्ञानविमल गुणथी लह्या रे, लोकालोक प्रकाश;
प्रभु महिमाथी शाश्वतो रे, अनुभव उदय विलास. जिणंद० ८

स्तुति

श्री जीरावलो पास नमीजे, अष्ट करम खय कीजे जी,
संपत्तिकारण तारण अे जिन, अष्ट महासिद्धि लीजे जी;
मांडवगढ महाराज विराजे, देखी भविजन रीजे जी,
अश्वसेन वामासुत सेवो, शान्त सुधारस पीजे जी. १

ऋषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति पद्मजिन त्राता जी,
सुपास चंद्रप्रभ सुविधि शीतल, श्रेयांस वासुपूज्य विमल अनंता जी;
श्री धर्म शान्ति कुन्थु अर मल्लि, मुनिजिन नमि नेमि पास विधाता जी,
वीरशासन सेवो भविप्राणी, जिम पामो सुखशाता जी. २

श्री जिनभाषित गणधर गूंथित, आगम भविजन वरीयो जी,
भवभय वारक तारक अे भुवि, सुख संपत्तिसुं भरियो जी;
दुरित दोहग दु:ख दूर निवारे, जीवदयानो दरीयो जी,
पतित पावन भविजन मन मोहन, शिवरामा अनुसरीयो जी. ३

धरणेंधर पद्मावतीदेवी, जिनशासन भय वारी जी,
साधु साध्वी श्रावक श्राविका, विघन हरो सुखकारी जी;
माया ममता मोह निवारी, जिन सेवो चित्त धारी जी,
भोजविमल बुद्ध शीश पयंपे, **रुचिविमल** जयकारी जी. ४

३० श्री मनोरंजन पार्श्वनाथ

चैत्यवंदन

वढीयार पवित्र धरा विषे पार्श्व शंखेश्वर सोहे,
धरण पद्मावती सेवे पाय भविजनना मन मोहे... १

नीलवरण नव हाथनो दीपे अनुपम देह,
अंतर अरिगण गमीया थया अनंत गुणगेह... २

सेवक जन सुखिया करो आपी समकित चंग,
जिन उत्तम पद **पद्मनो** रुप कहे मनरंग... ३

स्तवन

(राग - मल्हार)

मनमंदिरमें आअे जिणंदराय, मनमंदिरमें आअे;
तव में विविध जुगति समकितगुण, फुलपगर विरचाअे.
जिणंद० १

मनमंदिरमें आअे जिणंदराय, मनमंदिरमें आअे;
तव में विविध जुगति समकितगुण, फुलपगर विरचाअे.
जिणंद० १

प्रीति अध्यातम थाल भरीने, धीगुण मोती वधाअे;
चारित्रगुण चंद्रोदय सुंदर, झाकझमाल बनाअे.
जिणंद० २

सुरभि पवनसे अशुभ दुरित रज, दशदिशे दूर उडाअे;
निर्विकल्प संकल्पसुं बारे, मृदुता पाट बिछाअे.
जिणंद० ३

उचित विवेक सिंहासन उपरे, पावन पास बेठाअे;
विधि अनाशातन चामर विंझित, छत्र सुध्यान धराअे.
जिणंद० ४

ज्ञानविमल प्रभु हरखित हुअे तव, देवतमां जस वाअे;
शुद्ध सुबोध अक्षयनिधि जिन थे, सहज सकल गुण पाअे.
जिणंद० ५

स्तुति

(राग - मनोहर मूर्ति महावीर तणी.)

महेसाणामंडन पासजी, पूरे मन केरी आस जी,
सुखसंपद केरो निवास जी, सुर नर वर जेहना दास जी;
सेवो भवि मन उलास जी, जिम लहीये लच्छी खास जी,
पूजो पामी अवकास जी, शिवरामा लीलविलास जी. १

कर्मभूमि कही जिन पन्नर, पांच भरत अनुपम सुंदर,
पांच अैरावत अतिही मनोहर, पांच महाविदेहे शिवकर;
विचरंतां खेत्रे जिनवर, उत्कृष्टे काले सुखकर,
सित्तेर सो नमीये दुःखहर, अढीद्वीपे शिवरमणी वर. २

अेकेकी विदेहे बत्रीस, बत्रीस विजय छे सुजगीस,
तिहां जिनवर सोहे बत्रीस, पांचे थइ साठ सो जगदीश;
पांच भरतैरवत थइ दश, ईम सीत्तरि सो त्रिभुवन इस,
आगममांहि आगमनाधीस, भाखे ते आगम सुणी शीश. ३

धरणेन्द्र अने पद्मावती, निज गति गज हंस हरावती,
जिम पास पदांबुज सेवती, संघ सानिध करो ते वती;
जयविजय छे शारद शुभमती, सेवक बुध मेरुविजय यति,
कहे **दर्शन** दोलते दीपती, विजयपक्षनी होडो जीपती. ४

३१ श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथ

चैत्यवंदन

प्रभु पासजी ताहरुं नाम मीठुं,
तिहुं लोकमां अेटलुं सार दीठुं;
सदा समरतां सेवतां पाप नीठुं,
मन माहरे ताहरुं ध्यान बेठुं. ...१...

मन तुम पासे वसे रात दिसे,
मुख पंकज निरखवा हंस हीसे;
धन्य ते घडी जे घडी नयण दिसे,
भली भक्ति भावे करी विनवीजे. ...२...

अहो अेह संसार छे दुःख घोरी,
इंद्रजालमां चित्त लाग्युं ठगोरी;
प्रभु मानीये विनती अेक मोरी,
मुज तार तुं तार बलिहारी तोरी. ...३...

सही स्वप्न जंजालने संग मोह्यो,
घडियालमां काल रमतो न जोयो;
मुधा अेम संसारमां जन्म खोयो,
अहो धृत तणे कारणे जल विलोयो. ...४...

अेतो भमरलो केसुआ भ्रांति धायो,
जइ शुकतणी चंचुमांहे भरायो;
शुके जंबु जाणी गले दुःख पायो,
प्रभु लालचे जीवडो अेम वाह्यो. ...५...

भम्यो भर्म भूल्यो रम्यो कर्म भारी,
दया धर्मनी शर्म में न विचारी;
तोरी नर्मवाणी परम सुखकारी,
तिहुं लोकना नाथ में नवि संभारी. ...६...

विषय वेलडी शेलडी करीय जाणी,
भजी मोह तृष्णा तजी तुज वाणी;
अेहवो भलो भुंडो निजदास जाणी,
प्रभु राखीये बांहिनी छांय प्राणी. ...७...

मोरा विविध अपराधनी कोडि सहीअे,
प्रभु शरणे आव्या तणी लाज वहीअे;
वली घणी घणी विनती अेम कहीअे,
मुज मानससरे परमहंस रहीअे. ...८...

अेम कृपा मूरत पार्श्वस्वामी मुगतिगामी ध्याइअे,
अति भक्ति भावे विपत्ति जावे परम संपत्ति पाइअे;
प्रभु महिमासागर गुणवैरागर पार्श्व अंतरिक्ष जे स्तवे,
तस सकल मंगल जयजयारव **आनंदवर्धन** विनवे. ...९...

स्तवन

(राग : जय जय आरती/ दीवो रे दीवो प्रभु)

जय जय ! जय ! जय ! पास जिणंद,
अंतरीक्ष प्रभु ! त्रिभुवन तारन, भविक कमल उल्लास दिणंद.
... (अे आंकणी)
तेरे चरन शरण मैं कीनो, तुं बिन कुन तोडे भव फंद;
परम पुरुष परमारथदर्शी, तुं दीये भविककुं परमानंद.
... जय० १
तुं नायक तुं शिवसुखदायक, तुं हितचिंतक तुं सुखकंद;
तुं जनरंजन तुं भवभंजन, तुं केवल - कमला गोविंद.
...जय० २
कोडि देव मिलके कर न शके, अेक अंगुठ रुप प्रतिछंद;
अैसो अद्‌भुत रुप तिहारो, वरसत मानुं अमृत को बुंद.
... जय० ३
मेरे मन मधुकर के मोहन, तुम हो विमल सदल अरविंद;
नयन चकोर विलास करत हे, देखत तुम मुख पुनमचंद.
... जय० ४
दूर जावे प्रभु ! तुम दरिशन से, दु:ख दोहग दारिद्र अघ-दंद;
वाचक **जस** कहे सहस फलत हे, जे बोले तुम गुनके वृंद.
... जय० ५

स्तुति

(राग - रघुपति राघव राजा राम.)

अंतरीक्षपार्श्व आराधुं देव, सकल सुरासुर सारे सेव;
वामाकुखे सरोवर हंस, मुगतिनारी तणो अवतंस. १

अतीत अनागत सवि भगवंत, सवि पुरुषोत्तम छे गुणवंत;
चोत्रीश अतिशय तेहज तणा, वाणीना वळी पांत्रीश भण्या. २

सुधर्मास्वामी गणधर सार, जंबु आगल सूत्र विचार;
ते वांचना सद्दहु सही, जेहने अरपी पवित्र मही. ३

पद्मावती ते पूरे आश, सेवा करे निरंतर जास;
मनवंछित सुखसंपत्ति लहे, जे आज्ञा अरिहंतनी वहे. ४

३२ श्री भद्रेश्वर पार्श्वनाथ

चैत्यवंदन

आदिनाथ अजित देव, संभव गुणभंडार;
अभिनंदन सुमति नमुं, पद्मप्रभ सुखकार. १

स्वामी सुपास सोहामणा, चंद्रप्रभ जिनराज;
सुविधि शीतल सेवीये, श्री श्रेयांस शिरताज. २

वासुपूज्य विमल विभु, अनंत धर्म अरिहंत;
श्री शांति प्रभु सोळमा, आपे भवनो अंत. ३

कुंथु अर संभारतां, दुरित सकळ मीट जाय;
मुनिसुव्रत नमि नेमिनाथ, आनंद मंगल थाय. ४

पार्श्वनाथ त्रेवीसमा, वर्द्धमान जिनभाण;
चोवीसे चित्त धारतां, लहीये क्रोड कल्याण. ५

स्तवन

(राग - वीर जिणंद जगत उपकारी)

समय समय सो वार संभारुं, तुज शुं लगनी जोर रे;
मोहन मुजरो मानी लीजे, ज्युं जलधर प्रीति मोर रे....
समय० १

माहरे तन धन जीवन तुंही, अेहमां जूठ न जाणो रे;
अंतरजामी जगजन नेता, तुं किहां नथी छानो रे....
समय० २

जेणे तुजने हियडे नवि धार्यो, तास जनम कुण लेखे रे;
काचे राचे ते नर मूरख, रतन ने दूर उवेखे रे....
समय० ३

सुरतरु छाया मूकी गहरी, बाउल तळे कुण बेसे रे;
ताहरी ओलग लागे मीठी, किम छोडाये विशेषे रे....
समय० ४

वामानंदन पास प्रभुजी, अरजी चित्तमां आणो रे;
रुप विबुधनो **मोहन** पभणे, निज सेवक करी जाणो रे...
समय० ५

स्तुति

पास जिणंदा दिल्लआणंदा, मुखडुं पूनमचंदा जी,
सुरत जेहनी केवलकंदा, पारकर देश वशंदा जी;
चइतर वद चोथे ते चवीने, वामाउरे जग जयकारी जी,
चउद सुपन रयणी अवलोक्यां, पोष वदि दशमी जन्म धारी जी. १

काशीदेश वणारसनगरी, अश्वसेनराया कुलनंदा जी ,
छप्पनकुमरी महोच्छवहंदा, चोसठ इन्द्र सुर मल्लंदाजी;
मेरुअे महोच्छव मनोरथ माले, गाले गाढ कर्म प्रजाली जी,
कमठ मरदन नाग दु:खभंजन, नवकारमंत्र दयाली जी. २

पद्मावती धरण पद पाया, पास प्रभुने पसाया जी,
अगीआरस पोष वदनी दीक्षा चइतर वद चोथे केवल पाया जी;
मणि सिंहासन गढ त्रिगडासन, चोसठ सुर नर बलीया जी,
सत्प्रातिहार्यन्त भामंडले विराजित, परखदा बारे मलीया जी. ३

सर्पलंछन प्रभु चरणे नीला, आयु सो वरसनुं कीधुं जी,
आसो सुद आठमने दहाडे, सिद्ध सुमति गीर लीधुं जी;
पद्मावती परता बहु पूरे, धरणेन्द्र सवि दु:ख दूरे जी,
परमपद रत्न पसाये **वनीतविजय** कर्म चकचूरे जी. ४

३३ श्री करेडा पार्श्वनाथ

चैत्यवंदन

सेवो पार्श्व चिंतामणी शंखेश्वर श्रीकार,
वरकाणे वंदु सदा आपे रिद्धि अपार... १

थंभणपुर वंदु वली जीरावलो जगनाथ,
अमीझरो पंचासरो आपे शिवपुर साथ... २

डुआ पार्श्वजिन पेखतां फलवरधी करे आप,
अंतरिक्ष त्रिभुवन धणी टाळे पाप संताप... ३

मक्षी मंडन पासजी मालव देश मझार,
शमीनो सुशोभे सदा मेवाडे श्रीकार... ४

करेडा पारस पेखतां नाकोडे वली जाण,
अजाहरो प्रभु भेटता आपे पद निरवाण... ५

पार्श्व प्रभु जिनराजनां नाम तणो नहीं पार,
गुण गाया गोडी तणां आहोर नयर मोझार... ६

इगताली आसोज में पूनम दिन प्रसिद्ध,
कीर्तिचन्द्र ध्यावे सदा, आपो अविचल रिद्ध... ७

स्तवन

(नदी जमना के तीर उडे दोय पंखीया - अे देशी)

वामानंदन अेह सुणीजे विनती,
होंश घणी जिनराज के मुज मनमें हुंती;
आयो अवसर आज कहुं [१]वायक इसा,
दिलरंजण सुभनयण देखो सेवक दसा. १

हुं भमीओ भवमांह घणा भव हारीओ,
भज्यो नही भगवान कै धंधै भारीओ;
लालच वायो जीव हुओ बहु लोभीओ,
थापण मोसा माहि घणुं मन थोभीओ. २

पापें नजर भराय देखी ने स्त्री पारकी,
मदनतणी वळी फोज जीती नही मार की;
दया नवि पाली मूल न को इंद्री दमी,
खोयो नर अवतार रंगे खेली रमी. ३

कीधा क्रोध अपार मायामे दिल कीयो,
लोक तणो बहु माल अन्याये लुटी लीयो;
कीधा सघळां पाप कहुं हवे केटला,
जाणे तुं जगदीस कह्या मे जेटला. ४

तारक साहिब नाम ताहरुं सांभळी,
आयो हुं तुम पास कै [२]मोसर अटकली;
दीजे दरसण देव हवे करीने दया,
मो पर श्री जिन पास सही कीजे मया. ५

बाह्य ग्रहीने आप तारो बहु हित करी,
दास तणी अरदास अेवी चित्तमां धरी;
आणो मन बहु भाव घणी वळी आसता,
सुंदरने सिववास दीजे सुख शाश्वता. ६

---

१. संदेश, समाचार. २. अवरस जोईने.

स्तुति

(राग - विमल केवळज्ञान कमला)

वामादेवी नंदन विश्व वंदन, श्री शंखेश्वर पास,
अश्वसेन भूपति कुल कमल दिनकर, पूरे ते वंछित आस;
सोहे ते लंछन नाग नामे, पाम्युं ते केवलज्ञान,
नीलवर्ण कांति कृपासागर, करे कोडि कल्याण. ...१

संसारसागर तरणतारण, आदि ते आद्यजिणंद,
वर्द्धमान अंते वली वंदु, ईम चोवीस जिणंद;
समंधरादिक संप्रति कालि, विहरमान जिन वीस,
केशर चंदन कुसुम पूजा, महानंद के जगदीश. ...२

अंग इग्यारने पूरव चउद, द्वादशांगी सार,
सिद्धांतसागर धर्म आगर, भाखे वीर विचार;
अरिहंत भाषित सूत्र सघलां, सांभली कल्याण,
ईम कर्म आठे क्षय करीने, पाम्या पंचमनाण. ...३

रुप सुंदर मनहर धरती, करती झाकझमाल,
पद्मावतीदेवी दु:ख हरेवी, सकल संघ कृपाल;
श्री पासजिनवर चरणकमले, सदा जेहनो वास,
श्री **हीररत्नसूरींदसेवक**, पूरे वांछित आस. ...४

३४ श्री फलवृद्धि पार्श्वनाथ

चैत्यवंदन

विहरमान जिणंद वंदु, उदित केवल भास्करं,
असंख्य लोक निवास प्रभुना, शाश्वता अघ नाश करं. ...१

अष्टापदे समेत चंपा, नेम गढ गिरि मंडणो,
श्री वीर पावा विमल गिरिवर, केसरा दु:ख खंडणो. ...२

आबु तारणगढ सुचंगा, शिव अभंगा कारणा,
श्री अंतरीक्ष जिणंद पास, थंभणा दु:खवारणा. ...३

शंखेसरा अलवेसरा, जग पावना जीरावला,
चिंतामणी फलोधि पार्श्व, मल्लि भवोदधि नावला. ...४

वरकाण राण नाडोल नगरे, वीर धाणे गोडीये,
नाडुलाइ श्री वीर राता, वंदिये भव तोडीये. ...५

श्री पाली पाटण राजनगरे, धनोद[1] मंडण पासजी,
इम जेह थानक चैत्य जिनवर, भविक पूरे आसजी. ...६

सहु साधु गणधर केवली मुनि, संघ भवजल तारणा,
शुद्ध ज्ञान दर्शन चरण साचा, महानंदना कारणा. ...७

अे तीरथ वंदन भवनिकंदन, भविक शुद्ध मन कीजीये,
निज रुप धारो भरम फारो, अध न आतम लीजिये. ...८

---

१. धनोप ?

स्तवन

(राग : सुरंगी सुरंगी सुरंगी)

फलवर्धि फलवर्धि फलवर्धि पार्श्वनाथका;
भाग्ये मिला है दिदार, फलवर्धि पार्श्वनाथका. १

देदार क्या ही मानुं अमृतसागर, मानुं अमृतसागर;
कार्मिक विष हरनार, फलवर्धि पार्श्वनाथका. २

श्याम घटा घन भूघन निरख्यो, भूघन निरख्यो;
शिवसस्य सर्जनहार, फलवर्धि पार्श्वनाथका. ३

या कसवटीयां भाव सुवर्णकी, भाव सुवर्णकी;
रेखा अंकनहार, फलवर्धि पार्श्वनाथका. ४

चित्रवल्ली अे भाव अखंडकर, भाव अखंडकर;
कामधेनु कुंभसार, फलवर्धि पार्श्वनाथका. ५

पांखडी [1]अनुहर आंखडी सुन्दर, आंखडी सुन्दर;
अटक मटक छटादार, फलवर्धि पार्श्वनाथका. ६

वदन है शारद पूनम चंदलो, पूनम चंदलो;
भाल अष्टमी शशीकार, फलवर्धि पार्श्वनाथका. ७

रत्नसार ग्रही अंग अे घडीयो, अंग अे घडीयो;
तीन भुवन मनोहार, फलवर्धि पार्श्वनाथका. ८

भाग्य किहांसे अद्‌भुत पाया, अद्‌भुत पाया;
अचरिज यही उदार, फलवर्धि पार्श्वनाथका. ९

आत्म कमलमें जिनजी विराजे, जिनजी विराजे;
लब्धिसूरि बेडापार, फलवर्धि पार्श्वनाथका. १०

१. अनुकरण.

स्तुति

(राग - मनोहरमूर्ति महावीरतणी.)

श्री फलवर्द्धिमंडन पास धणी, प्रभु मूरित मोहन अजब बनी;
सेवा सारे स्वामीतणी, संपद पावे तेह घणी. १

दोय रत्ता दोय श्वेत वना, दोय नीला दोय श्याम घना;
सोलस कांचन कान्ति तना, भविजन पूजो अेह जिना. २

जेणे जिनवरवाणी चित्त धरी, तस गुण गावे नित्य अमरी;
भवसायर तरवा अेह तरी, विमल लच्छी लीला तेणे वरी. ३

पद्मवाती देवी पद्मकरा, संघ सहुना विघ्नहरा;
उदयसौभाग्य आणंदकरा, सा देवी देजो सुखभरा. ४

३५ श्री बलेजा पार्श्वनाथ

चैत्यवंदन

पांडुकंबल चारे शिला, अेक दक्षिण उत्तर;
दोय शिला वली जाणीअे, अेक पूरव अेक अपर. १

पूर्व पश्चिम दोय दोय, सिंहासन होय;
दक्षिण उत्तर अेक अेक, सिंहासन जोय. २

जन्मसमय दशवीशनो अे, अेकण समये जन्म;
ज्ञानविमलसूरि अेम कहे, ते वंदु शुभ सद्म. ३

स्तवन

(शी कहुं कथनी मारी राज - अे राग)

मुजने दास गणीजे राज, पार्श्वजी ! अर्ज सुणीजे;
अवसर आज पूरीजे राज, पार्श्वजी ! अर्ज सुणीजे... अे आंकणी.
वामानंदन तुं आनंदन, चंदन शीतल भावे;
दु:खनिकंदन गुणे अभिनंदन, कीजे वंदन भावे राज. पा० १

तुंही ज स्वामी अंतरजामी, मुज मननो विसरामी;
शिवगतिगामी तुं निष्कामी, बीजा देव विरामी राज. पा० २

मुरति तारी मोहनगारी, प्राण थकी पण प्यारी;
हुं बलिहारी वार हजारी, मुजने आश तुम्हारी राज. पा० ३

जे अेकतारी करे अतारी[१], लीजे तेहने तारी;
प्रीति विचारी सेवक सारी, दीजे केम विसारी राज. पा० ४

विघन विडारी स्वामी संभारी, प्रीति खरी में धारी;
शंक निवारी भाव वधारी, वारी तुज चरणारी राज. पा० ५

मिल नर नारी बहु परिवारी, पूज रचे तुज सारी;
देवचंद्र साहिब सुखदाइ, पूरो आश अमारी राज. पा० ६

---

१. शीघ्र

स्तुति

(राग - सत्तरभेदी जिन पूजा रचीजे.)

श्री शंखेश्वर पुरवर मंडन, पास जिनेसर राजे जी,
भाव धरी भवियण जे भेटे, तस घर संपत्ति छाजे जी;
जस मुख निरुपम नूर निहाली, मानुं [१]शशधर लाजे जी,
अश्वसेन नरपति कुल दिनकर, जस महिमा जग गाजे जी. १

वर्तमान जिनवर चोवीशे, अरचो भाव अपार जी,
चंदन केसर कुसुम कृष्णागरु, भेळीमांहि घनसार जी;
इणि पेरे अरिहंत सेवा करतां, मनवांछित फल साधे जी,
श्री शंखेश्वर पास जिनेसर, जेह अहनिश आराधे जी. २

श्री जिनवर भाषित आदरशे, निज घर लक्ष्मी भरशे जी,
दुस्तर भवसायर ते तरशे, केवल कमला वरशे जी;
दुर्गति दुष्कृत दूर करशे, परमानंद अनुसरशे जी,
श्री शंखेश्वर पास जिणंदने, जे नर मनमांहि धरशे जी. ३

श्री शंखेश्वर पास तणा जे, सेवे अहनिश पाय जी,
धरणराज पउमावइ सामिणी, पेखे पाप पलाय जी;
श्री राधनपुर सकल संघने, सानिध करजो माय जी,
श्रीशुभविजय सुधी पद सेवक, **जयविजय** गुण गाय जी. ४

३६ श्री अजाहरा पार्श्वनाथ

चैत्यवंदन

मरुभूति ने कमठ विप्र पहेले भव कहीअे,
बीजे गज कुरकुट अही त्रीजे भव लहीअे... १

अठम कल्प पंचमी नरक किरणवेग खग जाणुं,
महोरग सर्प चोथे भवे अच्युत सुर मन आणुं... २

पांचमी नरक पांचमे भवे छट्ठे राय वज्रनाभ,
चंडाल कुले कमठ जनित मध्यम ग्रैवेयके लाभ... ३

ललितांग देव सातमे भवे सातमी नरके लाग,
कनकबाहु चक्री थया कमठ सिंहनो माग... ४

प्राणत कल्प चोथी नरक पार्श्वनाथ भव दसमे,
कमठ तापस थयो वळी अन्य तीर्थी बहु प्रणमे... ५

दीक्षा लइ मुगते गया पार्श्वनाथ जिन देव,
पद्मविजय सुपसाउले जित प्रणमे नित्यमेव... ६

स्तवन

(राग - पुनमचांदनी खीली पुरी अहिं रे.)

सज्जन आवो नमिये, नेहे पास जिणंदने रे;
आपे जिनवर दर्शन, शिव सुख अतिही रसाल... अे आंकणी
उपसर्ग नाशक बिरुदने, धारी बेठा आप;
तो पण कनडे कर्म जे, ते टाळो नहि पाप. सज्जन० १

अट्ठारस अक्षर तणो, मंत्र जे तुज प्रसिद्ध;
कर्म झेर संहारवा, छे महिमा अे समिद्ध[1]. सज्जन० २

अपूर्व मंगल आपीने, मुजने करो सनाथ;
शिवसुख झट अर्पण करी, द्यो सेवकने साथ. सज्जन० ३

नाम जपे जे ताहरुं, शुद्ध करी मन-वच-काय;
दुरित उपद्रव उपशमे, तेहना तुम सुपसाय. सज्जन० ४

सेवक जे प्रभु ताहरा, देवगतिमां अनेक;
पुरे वंछित भक्तना, तुज भक्तिने टेक. सज्जन० ५

आप प्रतापे नित्य जे, विनये समरे नाम;
ते महिमा निधि जगतमां, पामे **शिवमणि** धाम. सज्जन० ६

संवत ओगणीसो सित्तोतरे, रुडो वैशाख मास;
पडवे रवि स्तवना करी, पुरो मुज मन आश. सज्जन० ७

---

१. समृद्ध.

स्तुति

(राग - मनोहर मूरति महावीर तणी.)

डुंगरपुर पास जिनेसरु, नित आवी पूजन सुरवरु;
कर लेइ चंदन केसरु, गुण गाइश निशदिन मनोहरु. १

जिनसंतति जगमांहे दीपती, वर पद्मश्रेणि रुचि जीपती;
मुख करी शोभा शोभती, देखी इन्द्र इन्द्राणी मोहती. २

जिन आगम सद्‌गुण सागरु, भयहरण जन्तु सुखाकरु;
शुभ अरथ संयुत सुंदरु, मन ध्याये तेहने सुखाकरु. ३

पद्मावतीदेवी सुंदरी, जिनशासननी सेवा करी;
भाणचंद्र वाचकमांही केशरी, **ऋद्धिचंद्र** कहे मंगलकरी. ४

३७ श्री मुहरी पार्श्वनाथ

चैत्यवंदन

प्रणमी श्री गुरुराज आज, जिन मंदिर केरो,
पुन्य भणी करशुं सफल, जिन वचन भलेरो. १

देहरे जावा मनकरे, चोथ तणुं फल पावे,
जिनवर जुहारवा उठतां, छठ पोते आवे. २

जावा मांड्युं जेटले, अट्ठमतणुं फल होय,
डगलुं भरता जिन भणी, दशम तणुं फल जोय. ३

जईशुं जिनघर भणी, मारग चालंता,
होवे द्वादश तणुं पुन्य, भक्ति मालंता. ४

अर्धं पंथ जिनघर तणी, पंदर उपवास,
दीठे स्वामी तणो भवन, लहिए एक मास. ५

जिनघर पासे आवतां, छ मासी फल सिद्ध,
आव्या जिनघर बारणे, वरसी तप फल लीध. ६

सो वरस उपवास पुन्य, प्रदक्षिणा देता,
सहस वरस उपवास पुन्य, जिन नजरे जोता. ७

भावे जिनवर जुहारीए, फल होवे अनंत,
तेहथी लहीए सो गुणुं, जो पूजो भगवंत. ८

फल धणुं फूलनी माल, प्रभु कंठे ठवंतां,
पार न आवे गीत नाद, केरा फल थुणंतां. ९

शिर पूजी पूजा करो, दिये धूपणुं धूप,
अक्षत सार ते अक्षय सुख, तनु करे वर रुप. १०

निर्मल तनमने करी, थुणतां इन्द्र जगीश,
नाटक भावना भावतां, पामे पदवी ईश. ११

जिनवर तणी भक्ति भणी, अे वली प्रेमे प्रकाशी,
निसुणी श्री गुरु वयणसार, पूर्व ऋषि अे भाषी. १२

अष्टकर्म ने टाळवा, जिन मंदिर जईशुं,
भेटी चरण भगवंत ना, हवे निर्मल थईशुं. १३

कीर्ति विजय उवज्झायनो, **विनय** कहे कर जोड,
सफल होजो मुज विनंति, जिन सेवा ना कोड. १४

स्तवन

(राग : लागी लगन मुने तारी)

अखी मुने लागे प्यारी प्यारी, लागे प्यारी प्यारी;
तेरी गत न्यारी लागे रे... अे आंकणी.

वामानंदन पास प्रभुकी (२) त्रिभुवन मोहनगारी;
लागे प्राण प्यारी... अखी० १

शांत सुधारस के कचोले (२) दुविध दयाकी पिटारी;
लागे अमी क्यारी... अखी० २

सुंदर समता मन अति प्यारे (२) मदनकुं तीक्ष्ण कटारी;
लागे कामणगारी... अखी० ३

महिर नजरसें कमठकुं तारे (२) अहि युगल कीअे भवपारी;
लागे दुलारी... अखी० ४

शुद्ध स्वरुप में अहोनिश खेले, (२) भाव अशुद्ध परिहारी;
लागे निर्विकारी... अखी० ५

साहिब सम सेवक अब कीजे, (२) आपको बिरुद संभारी;
लागे गुलझारी... अखी० ६

कुशलसागरजी नाथके नयनो, (२) देखत अरति विदारी;
लागे निराळी... अखी० ७

स्तुति

(राग - वीरजिनेश्वर अति अलवेसर.)

प्रणमो भविका भाव धरीने, श्री जिन पासजिणंदो जी,
अश्वसेन वामानो नंदन, भविजन नयणानंदो जी;
शंखेश्वरपुर वर प्रभु सोहे, मोहे सुरवर वृंदो जी,
वंछितदायक सुरतरु सम अे, मोहनवल्ली कंदो जी. १

अतीत अनागत ने वर्तमान, विहरमान वीश जेह जी,
रुपी नीली रुचक नंदीसर, शाश्वता जिनवर तेह जी;
शत्रुंजय आबु ने अष्टापद, समेतशिखर गुण गेह जी,
इत्यादिक तीरथ त्रिहुं काले, प्रणमुं हुं धरी नेह जी. २

अग्यार अंगे ने बार उवंगा, मूल सूत्र तिम चार जी,
छ छेदग्रंथ ने दश पयन्ना, नंदी अनुयोगद्वार जी;
केवलज्ञान लही जिन भाखे, आगम अेह उदार जी,
भाव धरी सुणतां भवि जाणी, लहीअे भवनो पार जी. ३

चरणे नेउर रमझम करती, कटिमेखल खलकार जी,
काने कुंडल रवि शशी जीपे, हियडे हार उदार जी;
सा पद्मावतीदेवी आपो, संघने ऋद्धि अपार जी,
मुक्तिविजय शिष्य **राम**ने करजो, नितु जय जयकार जी. ४

३८ श्री धृतकल्लोल पार्श्वनाथ

चैत्यवंदन

पंचसया धनुमान जाण, श्री प्रथम जिणंद;
पंचास उणा करो, शत सुविधि जिणंद. १

दश उणा करतां हुवे, जो अनंत पंचास;
[1]पंचुणा दश धनुष नेमि, नव कर छे श्री पास. २

सात हाथ तनुं वीरजी अे, अेहवा जिन चौवीश;
भाव धरीने वंदना, करे **ज्ञानविमल**सूरीश. ३

१. पांच उणा.

स्तवन

(राग - हे करुणाना घर)

प्रगट्या ते पुरण अविनाशी जीरे, काम क्रोध सर्वे गया नासी,
सुखदायकाना छो स्वामी जीरे, पल पल रुपी प्रभु अंतरजामी. १

कच्छ देश पश्चिम धाम जीरे, पावन कीधां छे सुथरी गाम,
धन धन भाग्य उदय कीधां जीरे, पार्श्व प्रभुजीअे दर्शन दीधां. २

धृतकल्लोल प्रभु परता धारी जीरे, देरुं चणाव्युं अति भारी,
देश परदेशना संघ आवे जीरे, पूजा रचावे प्रभुजीनी भावे. ३

आंगी रचावे उर धरी माला जीरे, रत्न करे छे रुडां झणकारा,
मुकुट कुंडल शिर छत्र धारी जीरे, चंद्रकला शुभ द्रष्टि तारी. ४

भावी भावनाने प्रभु पूजो जीरे, नाथ विना देव नहि दूजो,
प्रभु पूजेथी भवजल तरीअे जीरे, नाम लेतां नवनिधि वरिये. ५

अढार छयांसी चैतर मास जीरे, पुनमे प्रभुजी पूज्या पास,
प्रेमचंद गुरु ज्ञानी भावे जीरे, **धृतकल्लोलजी**ना गुण गावे. ६

स्तुति

रतनपुरी नगरी शिणगार, मोहन मूरति पास उदार,
भविजनने सुखकार,
अश्वसेन कुल कमल दिणंद, वामादेवीनो अे नंद,
जय तु पार्श्व जिणंद,
दुरगति पडतां दे प्रभु हाथ, सिद्धपुरी मां दे सुख साथ;
नील तन जिन नव हाथ;
भले लही में तुम सहाय, वंदु छुं नित मेव पाय,
जपु छुं तुजने दिन रात. १

ऋषभ अजित संभव अभिनंदा, सुमति पद्मप्रभ पाप निकंदा,
श्री सुपार्श्व सुख कंदा,
चंद्रप्रभ सुविधि जिन शीतल, श्रेयांस वासुपूज्य अति निर्मल,
भविवंदो प्रभु विमल;
अनंतनाथ जिन धर्म करंधर, शान्ति कुन्थु नमुं परमेसर,
अरमल्लि जिनेसर सुंदर,
मुनिसुव्रत नमि नेमि पास, वीर जिनेसर पूरवे आस,
मंगल कमलावास. २

अरथ अनोपम श्री जिनवाणी, समकितवंत सद्दहे भवि प्राणी,
भाखे पंचमनाणी,
गणधर गूंथे तेहने उदार, द्वादशांगीनो विस्तार,
अरथ रयण भंडार;
जे सेव्या लहीअे शिवराज, वंछित सीझे सघलां काज,
इम भाखे जिनराज,
पाप पंक धोवाने जलधर, ज्ञान प्रकाश करण जिम दिनकर,
अेहवो आगम सुखकर. ३

पास देव पद पंकज सेवा, अहनिशि चाहे जिम गज रेवा,
तिम समकित दृष्टि देवा,
धरणेन्द्र राजा पद्मावती सारी, संघ चतुर्विध विघन निवारी,
साथे ले सुखकारी;
श्री विजयप्रभसूरि इंदो, जस मुख सोहे पूनिम चंदो,
प्रभु दरसन अति आनंदो,
श्री खीमाकुशल गुरुराज पसाइ, अलिव विघन सब दूर जाइ,
शिशु **लब्धिकुशल** सुखदाइ. ४

३९ श्री सहस्त्रफणा पार्श्वनाथ

चैत्यवंदन

पास जिणंद सदा जयो मनवंछित पूरे,
भव भय भावठ भंजणो दुःख दोहग चूरे... १

अश्वसेन नृप कुलतीलो वामासुत शस्त,
वाणारसी अे अवतर्यो काया नव हस्त... २

नील वर्ण लंछन फणी अे जीवित जस शतवर्ष,
मानविजय प्रभु नामथी पामे परिगल हर्ष... ३

स्तवन

(श्री शंखेश्वर स्वामी, प्रभु जगअंतर्यामी...)

श्री **सहस्त्रफणा** प्रभु पासजी, जय त्रिभुवन स्वामी;
चरण कमल युग ताहरा, प्रणमुं शिर नामी.
जग अंतरजामी, सहस्त्रफणा प्रभु पासजी. १

श्री अश्वसेन कुलांबरे, चंदोपम धारी;
वामा कुखे अवतर्यो, जगजन हितकारी. सहस्त्रफणा० २

जिम जलमां दळ पद्मनो, तिम प्रभु संसारे;
भोगादिक सुख भोगव्यां, अविलुब्ध प्रकारे. सहस्त्रफणा० ३

चार महाव्रत आदर्यां, दुद्धर तपचारी;
केवल कमला संग्रही, वसु पद्म विहारी. सहस्त्रफणा० ४

अकळ अगोचर तुं सदा, चिद्रूप विलासी;
अव्याबाध दशा उदय, अक्षय पदवासी. सहस्त्रफणा० ५

अविनाशी मुद्रा लही, अनुभव रस भीनो;
अविकारी करुणानिलो, समता गुण लीनो. सहस्त्रफणा० ६

तुं अविचळ सुख सागरु, तुं सिद्ध स्वरुपी;
तुं उज्वल गुण आगरु, ज्यो अगम अरुपी. सहस्त्रफणा० ७

संवत सय अढारमां, शुभ सत्तावीसे;
माधव उज्जवळ द्वादशी, थाप्या सुजगीशे. सहस्त्रफणा० ८

सूरतमंडण साहिबा, करुणा हवे कीजे;
श्री **जिनलाभ** कहे मुदा, अविचल सुख दीजे,
सहस्त्रफणा प्रभु पासजी, जय त्रिभुवन स्वामी० ९

स्तुति

(राग - आदि जिनवरराया.)

जल जलण वियोगा, भोग संग्राम योगा,
हरिय मयगल सोगा, वात चौरारी रोगा;
सवि भयहर लोगा, पामीया पास योगा,
नरक नहि योगा, पूजता भूरि भोगा. १

जय चिंतामणी देवा, कीजीये ताहरी सेवा,
सहसफणानी सेवा, लीजीये पुन्य मेवा;
इत्यादि प्रभु सेवा, कीजीये अेह देवा,
अहनिशि तुम सेवा, मुजने अेह टेवा. २

श्री पार्श्वजिननी वाणी, सेवीये सार जाणी,
गणधरे चित्त आणी, ते द्वादशांगी कहाणी;
सुणी सुणी भवि प्राणी, पुन्यनी अे कमाणी,
अंगी करे प्रमाणी, पुरुष चातुर्यखाणी. ३

तुज शासनरक्षा-कारकी शुद्ध पक्षा,
जय **सौभाग्य**दक्षा, पुस्तकारधार यक्षा;
पद्मावती जे देवी, संघरक्षा करेवी,
भविक नर सुणेवी, पुन्य पोष भरेवी. ४

४० श्री कोका पार्श्वनाथ

चैत्यवंदन

जिम चैत्री पूनम तणो, अधिको विधु दीपे,
ग्रह गण तारादिक तणां, परम तेजने जीपे. ...१...

तिम लौकिकना देव ते, तुम आगे हीणा,
लोकोत्तर अतिशय गुणे, रहे सुर नर लीणा. ...२...

निर्वृत्ति नगरे जायवा अे, अेहि ज अविचल साथ,
ज्ञानविमल सूरि अेम कहे, भव-भव अे मुज नाथ. ...३...

स्तवन

(राग : संभव जिनवर विनति)

कोको कामित पूरणो, कलि कल्पद्रुम समान रे;
लंछन मिषे मागे फणि, लोभित अधिको दान रे. कोको० १

राख्यो बळती आगथी, मुज विषधरने देव रे;
दायक दूजो कोण छे, जेहनी कीजे सेव रे. कोको० २

ज्ञानरयण समता जले, सायर भूमि लुठंत रे;
तेज प्रताप प्रकाशथी, रवि आकाश अटंत रे. कोको० ३

पूरण सकल नि:कलंकता, नित्योदय मुखकांति रे;
लाज्यो विधु लांछन धरी, नाठो गयण भमंत रे. कोको० ४

संथव चाले हंसलो, हार्यो मानस जाय रे;
नील वरण नव कर तनु, मरकत मणि लज्जाय रे. कोको० ५

अनोपम अंग निहाळीने, अनंग थयो गतरुप रे;
केवलघर पण किम कहे, प्रभुनुं अकल स्वरुप रे. कोको० ६

पाटणमां पुण्यात्मा, पूजे श्रावक लोक रे;
खिमाविजय जिन पेखतां, हरखे मानव थोक रे. कोको० ७

स्तुति

(राग - श्री शत्रुंजय तीरथ सार.)

पूजो प्रणमो भवियण वंदो, पाटण प्रगट्यो पुनिमचंदो,
चिंतित सुरतरु कंदो;
जस पद सेवे सकल सुरींदो, दिन दिन वाधे अधिकाणंदो,
वंदो पास जिणंदो.

भवियां भाव धरी चित्त साचो, जिसो [1]अविहड हीरो जाचो,
जिम शुभ कर्म निकाचो;
चउवीशे जिन अविचल वाचो, उलट आणी अंगे साचो,
अवर देव म राचो.

सद्‌गुरु पद पंकज प्रणमीजे, जिन वचनामृत घट घट पीजे,
निज भव लाहो लीजे;
निरमल मन वच काया कीजे, शिवरमणीसुं रंग रमीजे,
भव दु:ख नवि देखीजे.

घमघम घमघम घुघरी वागे, रुमझुम रुमझुम झांझरी वागे,
सुरवर चरणे लागे;
पउमावई वरदेवी आगे, विघन विधातक विद्या मागे,
ऋद्धिविजय मन रागे.

---

१. दृढ

४१ श्री स्फुलिंग पार्श्वनाथ

चैत्यवंदन

शांति नमि मल्लि मेष छे, कुंथु अजित वृषभाति;
संभव अभिनंदन मिथुन, धर्म कर्क सिंह सुमति. ...१

कन्या पद्मप्रभ नेम वीर, पास सुपास तुलाओ;
[1]शशी वृश्चिक धन ऋषभदेव, सुविधि शीतल जिनराय....२

मकर सुव्रत श्रेयांसने, बारमा घट मीन लील;
विमल अनंत अर नामथी, सुखीया श्री **शुभवीर**. ...३

---

१. चन्द्रप्रभ.

स्तवन

(राग : अरजिन भवजलनो तारु)

पास जिनेसर पुण्ये मलियो, स्हेजे सुरतरु फलियो रे;
धन्य दिवस मुज आजथी वलियो, जिनशासनमां भलियो रे.
प्रभु पुरीसादाणी, अनंत गुणमणिखाणी, प्रभु पुरीसादाणी,
... (अे आंकणी)

समर्यो संकट सहुनां चूरे, साचो वांछित पूरे रे;
प्रभु पद पामी जे रहे दूरे, ते तो परभव झूरे रे. प्रभु० २

कष्ट करंता कमठने वारी, नागने थया उपगारी रे;
अंत समय पंच पद दातारी, तिणे हुओ सुर अवतारी रे. प्रभु० ३

छांडी भोग संजोग असार, आदरे महाव्रतभार रे;
कमठ कोपे मूके जळधार, ध्यानथी न चल्या लगार रे.प्रभु० ४

घाती कर्म तणो करी नाश, केवळ लही उल्लास रे;
अणहुंते कोडी अेक पास, देव करे अरदास रे. प्रभु० ५

आठ महा प्रातिहार्य बिराजे, उपमा अवर न छाजे रे;
पांत्रीस गुण वाणीये गाजे, भविना संशय भांजे रे. प्रभु० ६

अनेक जीवने पार उतारी, आप वर्या शिवनारी रे;
श्री खिमाविजय पय सेवा सारी, **जस** लेवा दिल धारी रे. प्रभु० ७

स्तुति

(राग - वीर जिनेश्वर अति अलवेसर.)

सकल सुरासुर किन्नर सेवित, प्रणमुं पास जिणंद जी,
हरि लंछन सोहे त्रिभुवन मोहे, दीठे परमाणंद जी;
सर्व सुखदायक श्री जिननायक, नीलवरण सुचंग जी,
तोडापुरमंडन वामानंदन, सेव करुं मन रंग जी. १

विमलाचलमंडन ऋषभ जिनेसर, रेवाचल नेमिनाथ जी,
अष्टापद चउवीश जिन वंदु, आबु श्री आदिनाथ जी;
समेतशिखरे वीशे जिन सेवुं, पावापुरी वर्धमान जी,
इम सकल जिनेसर भविक तमे पूजो, आणी निर्मल ध्यान जी. २

श्री भगवतीसूत्रमांहि प्रतिमाओ, अरु ठाणांग मझारी जी,
रायपसेणी सूर्याभ जिन पूजे, द्रुपदीने अधिकारी जी;
नवक्षेत्र भक्तपयन्नामांहि, श्रावक निज धन वावे जी,
इम आगमवाणी जे आराधे, ते उत्तम सुख वाधे जी. ३

श्रीपासजिनवर चरणसेवा, सानिध करे अपार जी,
धरणेन्द्र पद्मावती जाणुं, सुध समकितधार जी;
संघना ते दुरित वारे, सानिध करे अपार जी,
श्री रत्नविजय बुध शीश जंपे, **सौभाग्यविजय** सुखकार जी. ४

४२ श्री नवखंडा पार्श्वनाथ

चैत्यवंदन

(भुजंगप्रयात वृत्त)

वंदो देव वामेय देवाधिदेवं,
सुरा आसुरा भासुरा सार सेवं;
नवे खंडमां आण अखंड जेहनी,
प्रभु कांतिशी भांति नहीं विश्व केहनी. १

महादुष्ट जेह धिष्ट पापिष्ट पूरा,
प्रभुनामथी ते दोषी जाय दूरा;
आवी वाट घाटें बांधे जेह ओडा,
थाये आंधला ते घणा तो न थोडा. २

धराधीश धोखो धरी धीज दाखे,
रागी सेवकांनी प्रभु लाज राखे;
वेरी नाथ जे वातनो जोर वाध्यो,
बहु नामी बंधु पलि पास बांध्यो. ३

जूठी वात जंपी हियानी उपाई,
मेहलें साधुनें असाधु पजाई;
साचो तो बेली छे प्रभु तुं सदाई,
स्वामी तुं सधारे वधारे वडाई. ४

पडी वात वांधे प्रभु पार पीछो,
धिठां जिहां रुठां तिहां प्रभुजी धणी छो;
साचुं करी जूठुं कर्यो जोर सांसो,
वेहेरी थया वांसे राखो नाथ वांसो. ५

गुडा जे गुमानी लिये गूजमांथी,
भूंडा जे भंभेर्या भरी तीर भाथी;
करी क्रोधने जे करे घात केना,
तमें वारज्यो तातजी नाक तेनां. ६

गति गोबरा तोबरा मुखें तुच्छा,
वली वांकडा आंकडादार ओछा;
मलेच्छा यथेच्छा गछे मच्छराला,
प्रभु पार्श्व ध्यानें नमे ते मदाला. ७

क्रोधाला भूपाला हठाला कराला,
वडा धिंगत्रिसिंग महासिंधवाला;
रोसाला दोसाला मोसाला ते रुठा,
तोसाला पोसाला हुवे पास तूठा. ८

करी के सरी दाव दोजी हवाला,
रणें अर्णवें रोग महाराण पाला;
पड्या तास पास भांजि पास पास,
त्रोडी सर्व त्रास आवे ते अवास. ९

पूरे दास आशा प्रभु पास पूरी,
सदा संपदा खेल सिंचे सभूरी;
टले आपदा ने करे सार टाणे,
जयकार पामे भजी जेह जाणे. १०

उदय उवज्झाया वदे आज पाया,
विलासा सवाया सवासें वसाया;
लीलालहेर वाधे प्रभुनाम लाधां,
बोली सर्व बाधा लह्या शा अगाधा. ११

स्तवन

(राग - अय मेरे वतन के लोगों)

घनघटा भुवन रंग छाया, **नवखंडा** पासजी पाया...
(अे आंकणी)

प्रभु कमठ हठीकुं हठाया, विषधर पर जलती काया;
दिल दया धरीकुं छोडाया, सेवक मुख मंत्र सुणाया,
क्षण में धरणेन्द्र बनाया... घन... १

मे और देवनकु ध्याया, सब फोगट जनम गमाया;
सुनो वामा राणीका जाया, कुछ परमारथ नहिं पाया,
ज्युं फुटा ढोल बजाया... घन... २

सुणी [१]चामीकर भरमाया, में पित्तल हस्ते पाया;
मुजे हुवा बहु दुखदाया, करमोने नाच नचाया,
इस विध धक्के बहु खाया... घन...३

घोघा मंडन सुखदाया, जग बहु उपकार कराया;
नवखंडा नाम धराया, में सुणकर शरणे आया,
उद्धार करो महाराया... घन... ४

हुआ चातुर्मास मुज आया, किस कारण अब बेठाया,
द्यो मनवांछित सुखदाया, हुं प्रेमे प्रणमुं पाया,
सेवक का काज सराया... घन... ५

[२]शर युग निधि इन्दु कहाया, भला अश्विन मास सोहाया;
दिवाळी दिन जब आया, में आतम आनंद पाया.
अेम **वीरविजय** गुण गाया... घन...६

---

१. सोना-सुवर्ण. २. संवत १९४५.

स्तुति

(राग - वीर जिनेसर अति अलवेसर.)

घोघाबंदर गुणमणि मंदिर, श्री नवखंडा पास जी,
जीराउल चंद्रप्रभ सुविधि, शान्ति सदा सुखवास जी;
जिनपडिमा जिनसरखी परखी, पूजो आगमवाणी जी,
पउमावई देवी प्रभुपद सेवी, **खीमाविजय** जिन त्राता जी. १

आ स्तुति-थोय चार वखत बोली शकाय छे.

४३ श्री नवसारी पार्श्वनाथ

चैत्यवंदन

जिनराज दीक्षा काल थाता, अचल आसन खळभळे,
लोकांतिक नव देव तिहां, प्रभुजी पास आवी मळे,
जयकार करतां प्रभुजीनो, कर जोडी इम विनवे,
जगत जीव हित कारणे, संयम गृहो इस्यु लवे....१...

इन्द्र थकी आज्ञा लही, कुबेर जृंभक ने कहे,
जिन मात तातना नामना, सोनैया नव तिहां लहे,
षट् अतिशयवंत दान देता, प्रभुजीनी सेवा करे,
महादान जे अरिहंतनु, पावे ते भवसागर तरे....२...

निज हाथे सवि शणगार त्यागी, पंचमुष्टि लोच ने,
छद्मस्थ केरा ज्ञाननी जे, पालता प्रभु टोच ने,
मनः पर्यव ज्ञान लही, प्रभु विचरता शुभ मने,
दीक्षा कल्याणक **धर्म** गातां, **रत्न** त्रण आवे कने....३...

स्तवन

(राग : पाम्यो पाम्यो पदमणी नारी हो.)

प्यारी प्यारी निजान्दकारी हो, प्रभु पार्श्व प्रतिमा प्यारी.
(अे आंकणी०)

दु:ख दोहग सब दूर करवाने, विषय विषधर विष हरवाने;
जपो जिणंद जयकारी. हो प्रभु० १

नरक निगोदे दु:ख अपारी, सहे सकर्म चेतन बहु वारी;
पार्श्व सेवी दीयो टारी. हो प्रभु० २

कामकुंभ चिन्तामणि साचो, कामधेनु अे नित्य नित्य जाचो;
सुरतरु सुखकारी. हो प्रभु० ३

प्रभु गुण गाये गइ दुग[1] जाये, तस महिमा कहो केम कहाये;
[2]सुरगुरु पण गया हारी. हो प्रभु० ४

नवसारीमंडन सुखदाया, पुण्ये प्रभु तुम दर्शन पाया;
करो भवोदधि पारी. हो प्रभु० ५

आत्म कमल विकसित करवाने, **लब्धिसूरि** जिनपद वरवाने;
जिन शरण जग भारी. हो प्रभु० ६

---

१. बे (नरक ने तिर्यंच).२. ब्रहस्पति.

स्तुति

(राग - प्रह उठी वंदू ऋषभदेव)

अश्वसेन कुलदिपक, पार्श्व जिनेश्वर देव,
जस सुरनर किन्नर, अहोनिश सारे सेव;
नवकर तनु दीपे, झीपे मन्मथ वीर,
गुणदरियो भरियो, ज्ञान गुणे गंभीर ... १

प्रभु वामा जायो, ईंद्र ईंद्राणी गायो,
मेरुगिरि ठायो, सुरपति हरख न मायो;
जन्म महोच्छव कीधो, पुजी मातने दीधो,
ईम सघळा जिनवर, द्यो शीवमारग सीधो ... २

संसार सागरथी, भीता जे जगजीव,
भयचुरण पुरण, परम महोदय पूर;
वाणी गुणखाणी, अमीय समाणी जाणी,
जेह भावे आराधे, तेह वरे शिवराणी ... ३

पद्मावती देवी, सामानिक सुर सेवी,
प्रभु सेव करेवी, संघ उपसर्ग हरेवी;
पंडित शिरोमणी, कपुर विजय कविराय,
खीमाविजय सुपसाये, **जिनविजय** गुणगाय ...४

४४ श्री चोरवाडी पार्श्वनाथ

चैत्यवंदन

निजरुपे जिननाथके, द्रव्ये पण तिमहि,
नाम थापना भेदथी, प्रगट जगमांहि. ...१...

अध्यातमथी जोडिये, निक्षेपा चार,
तो प्रभु रुप समान भाव, पामे निरधार. ...२...

पावन आतमने करे अे, जन्म जरादिक दूर,
ते प्रभू पूजा ध्यानथी, **राम** कहे सुख पूर. ...३...

स्तवन

पास प्रभु वंछित पुरिये, चूरिये कर्मनी राश रे;
दासने फल सुख दीजिये, अेहवी दासनी आश रे...पास प्रभु.१

अमित सुख मोक्षनी प्राप्त जे, ते सफळी मुज आश रे;
ते विण आश सफळी नहीं, अेम कर जोड कहे दास रे...पास प्रभु.२

अेहवा मोक्ष सुख पामवा, होवे जेह उपाय रे;
तेह हवे सहज [१]सुभावथी, कहो पास जिनराय रे...पास प्रभु.३

ज्ञान क्रिया थकी मोक्षनी, प्राप्तिनी सिद्धि तुं जाण रे;
स्वमुख श्री जिनवर उपदेशे, इसी आगम वाण रे...पास प्रभु.४

अेहवुं आगम अनुसरी, धरे सुमति मतिमंत रे;
ते शिव साधु पदवी वरे, करे कर्म नो अंत रे...पास प्रभु.५

श्री **जिनलाभ** प्रभु आगळे, करी प्रश्न अरदास रे;
भव्य भणी सुख [२]आलिवा, कर्यो वचन प्रकाश रे...पास प्रभु.६

---

१. स्वभाव. २. आपवा.

स्तुति

(राग - आदि जिनवर राया)

मेघ मयगल बारी, नारी श्रृंगार धारी,
रतन कनक सारी, कोडी केति विचारी;
प्रभु तस परिहारी, ज्ञान चारित्र धारी,
त्रिभुवन जयकारी, पार्श्व सेवो सवारि. १

इन्द्र जिन सहु पूजो, आपणो चित्त बुझो,
अवर सह न झुझो, धर्म अेहथी न दुजो;
माहेन्द्र हृदयमां झुझो, पापथी कान ध्रुजो,
कलुष कर्म भुंजो, जेहने धर्म सुझो. २

क्षांति सरस वाणी, वीतरागे वखाणी,
अमृतरस समाणी, चित्तमां रंग जाणी;
विनय सुगुण प्राणी, जे भणे भाव आणी,
तस घर धनखाणी, सार लहे राय राणी. ३

जिनपति पाय सेवे, कामना सर्व देवे,
पार्श्वयक्ष वहेवे, पार्श्वनी आण लेवे;
विघ्न सवि हरेवे, त्रापज संघ सेवे,
भुवन सुजश देवे, संघने सुख हेवे. ४

४५ श्री पंचासरा पार्श्वनाथ

चैत्यवंदन

अतिशय चार अति भला, होय जन्मथी साथे;
रोग शोग मल खेद रहित, जस अंग सनाथ. १

पंकज परिमल सासोच्छ्वास, गोखीर सरीखा;
रुधिर मांस आहारनिहार, नहि केणे निरखा. २

घातिकर्मक्षयथी हुवे अे, अतिशय वली अगियार;
ओगणीस सुरकृत इम चोत्रीस, अतिशय **ज्ञान** भंडार. ३

स्तवन

(राग - प्रथम जिनेश्वर प्रणमीअे)

परमातम परमेश्वरु, जगदीश्वर जिनराज;
जगबंधव जगभाण बलिहारी तुमतणी,
भवजलधिमां रे जहाज... परमातम० १

तारक वारक मोहनो, धारक निज गुण ऋद्धि;
अतिशयवंत भदंत रुपाळी शिववधु,
परणी लही निज सिद्धि... परमातम० २

ज्ञान दर्शन अनंत छे, वळी तुज चरण अनंत;
अेम दानादि अनंत क्षायिकभावे थया,
गुण ते अनंता अनंत... परमातम० ३

बत्रीश वर्ण समाय छे, अेक ज श्लोक मोझार;
अेक ज वर्ण प्रभु तुज न माये जगतमां,
केम करी थुणीअे उदार... परमातम० ४

तुज गुण कोण गणी शके, जो पण केवळ होय;
आविर्भावे तुज सयल गुण माहरे,
प्रच्छन्न भावथी जोय... परमातम० ५

श्री **पंचासरा** पासजी, अरज करुं अेक तुज;
आविर्भावथी थाय दयाल कृपानिधि,
करुणा कीजेजी मुज... परमातम० ६

श्री जिन उत्तम ताहरी, आशा अधिक महाराज;
पद्मविजय कहे अेम लहुं शिवनगरीनुं,
अक्षय अविचळ राज... परमातम० ७

स्तुति

(राग - श्री शत्रुंजय तीरथ सार.)

पालनपुरवर सोहे पास, दरिसन दीठे शिवसुख वास,
पहुंचे मननी आस,
पुरसादाणी बिरुद छे जास, भावे पूजो भवि तास,
छोडावे भव पास;
समकितकरणी अे छे खास, उलट आणी सेवो उल्लास,
दु:ख दोहग जाये नास,
सुखदाइ साहिब सुविलास, अंतरजामी करुं अरदास,
आपो लील विलास. १

समेतशिखर शेत्रुंजो सार, आबु अष्टापद वैभार,
तारंगे अजित उदार,
मुक्तागिरिवर गढ गिरनार, शंखेश्वर गोडी सुखकार,
पंचासर भटेवो जुहार;
शासता अशासता जैनविहार, स्वर्ग मनुष्य पाताल विचार,
त्रिभुवनपति जयकार,
ऋषभादिक जे जिनवर चार, अतीत अनागत वर्तमान धार,
वंदो पालविहार. २

समवसरण शोभे जिनभाण, चोत्रीश अतिशय करी मंडाण,
वाणी पांत्रीस गुणखाण,
जीवाजीवादि समकित गुणठाण, समता संयम संवर संधाण,
प्रकाश केवलनाण;
परखद बारे सुणे वखाण, अरथ थकी भाखे जिनभाण,
सूत्र रचे गणधर वाण,

टाळी मिथ्यामति विन्नाण, चिदानंद चेतना सुविहाण,
जिनमति सेवे परमाण. ३

समकितधारी जेह सुरींदा, वैमानिक व्यंतर वर इंदा,
सेवा सारे नागींदा,
पउमावइदेवी धरणेंदा, पालविहार प्रभु पासजिणंदा,
दियो पालनपुर संघ सुखवृंदा;
विजय खीमासूरीसर मुणींदा, तपगच्छ शोभाकारी दिणंदा,
नामे परमाणंदा,
पंडित देवजियकवि चंदा, पासतणा गुण शीश थुणंदा,
कपूरविजय सुखकंदा. ४

४६ श्री चारुप पार्श्वनाथ

चैत्यवंदन

मंत्रादि अड अष्टबोध, पामे अड बुद्ध,
खेदादिक अड दोष छेद, पडिकमणे शुद्ध. ...१...

अद्वेषादिक आठ गुण धरी, अड मद तजीअे,
यम नियमादिक आठ जोग, गुण संपद भजीअे. ...२...

आठम दिन आराधीअे, धातकी पुष्कर अर्द्ध,
क्षमाविजय जिन विचरता, प्रातिहार्य समृद्ध. ...३...

स्तवन

(राग : बोलो बोलो रे शालिभद्र दो वरियां)

पार्श्वप्रभु मोहे दे दो शरण;
दे दो शरण, प्रभु दे दो शरण... अे आंकणी.

चारुपमंडन सवी [1]अघखंडन;
भविक जनोंको मोदकरण. पार्श्व० १

वीतराग तुं मोहनगारा;
यही विरोध मोहे विस्मयकरण. पार्श्व० २

मोहिनी मूरत तोरी है न्यारी;
राग द्वेषको करती हरण. पार्श्व० ३

दु:षम काले ज्योति स्वरुपी;
दर्शन प्रभुका है तारणतरण. पार्श्व० ४

आनन्दकारी, भवदु:खहारी;
पुण्ये मिले प्रभु पार्श्वचरण. पार्श्व० ५

दु:ख दोहग तुम नामे नासे;
कंठे धरे होय कर्म जरण. पार्श्व० ६

आत्म कमलमां **लब्धि** ल्हेरो;
मील गये टले जन्म मरण. पार्श्व० ७

---

१. पाप

स्तुति

(राग - शंखेश्वरजी पासजी पूजीये.)

शंखेश्वर पास जिनेसरु, मनवांछित पूरण सुरतरु;
तुम देजो दरिसण वार वार, मुज मन [1]उमाहो अेह अपार. १

चोवीशे जिनवर भेटीये, भवसंचित दुष्कृत मेटीये;
तुमे कृपा करी चित्त अति घणी, पदवी द्यो स्वामी आपणी. २

सिद्धांत समुद्र सोहामणो, गुण रयणे अति रळीयामणो;
मति नावा करी अवगाहीये, तस अरथ [2]अंभ नितु नाहिये. ३

पउमावइदेवी धरणराय, प्रणमे श्री पास जिणंद पाय;
लीला लक्ष्मी द्यो **लब्धिवंत**, धरणेन्द्र तुमे मुज मननी खंत. ४

१. उत्साह. २. पाणी.

४७ श्री भीडभंजन पार्श्वनाथ

चैत्यवंदन

(तूटक छंदनी चाल)

भीडभंजन भवभयभीतिहरं, जयो पार्श्व प्रभु जिन प्रीतिकरं;
सेवक मनवंछित सिद्धिप्रदं, प्रभु दर्शन कोटी गमे फलदं. १

जे आण अखंडित आप वहे, ललना लखमी ते लील लहे;
दु:ख दुरगति तेहथी दूरे रहे, कुण अपरंपरनो पार कहे. २

करकमल जोडी प्रणाम करे, धूपचंदन आरति दीप धरे;
वली कुसुम तणा जे पगर भरे, नर केवल कमला तेह वरे. ३

कुंकुम मृगमद घनसार वरं, अक्षत जल फल नैवेद्य धरं;
मधुरध्वनि मंगल पाठ रवं, सेवा शिवपद आपे विभवं. ४

कविता जे प्रभुगुण रंग कवे, तसु जय लच्छी वरमाल ठवे;
भवि नृत्य करें नवनव छंदे, वृंदारक तेहना पद वंदे. ५

खलखंडन परदल दलनं प्रभु-पूजन मुक्ति वधू मिलनं;
महा मंगल केलि कलानिलयं, कली किसल लता किसलय कलियं. ६

अति अद्‌भुत संपद सौध सदा, प्रभु पार्श्व नमो वामेय मुदा;
भगवंत भजे नहीं कष्ट कदा, होय आपद दुष्ट उच्छेद तदा. ७

खेटकपुर मंडन देव खरो, त्रिविधे सेवि संसार तरो;
प्रभु पूजी पुन्यभंडार भरो, अवसर पामीने सफल करो. ८

ॐकार भजो अहंकार तजो, माया बीजे जिनराज भजो;
अर्हं भीडभंजन पार्श्व प्रभु, नमतां आपे नवनिधि विभु. ९

अेम वाचक **उदयरतन** वदे, धरो पार्श्व प्रभुनुं ध्यान हृदे;
सघली इच्छा जेम सफल फले, टले दुर्जन सज्जन संग मले. १०

कलश

सर्व सिद्धि सदनं शिवसाधनं, पार्श्व देव पदयो आराधनं;
धृति मति कीर्ति कांति विवर्धनं, मदन मोह महा रिपुमर्दनं. ११

स्तवन

(राग : पास शंखेश्वरा सार कर सेवका - अे देशी)

भीडभंजन प्रभु भीड भांजे सदा,
नहि कदा निष्फला नाथ सेवा;
भविजन भावशु भजनमांहि लीजे,
परमपद संपदा तखत लेवा. भीड० १

भीडभंजन प्रभु भीड भांजे सदा,
नहि कदा निष्फला नाथ सेवा;
भविजन भावशु भजनमांहि लीजे,
परमपद संपदा तखत लेवा. भीड० २

काशी वाणारशी जनपद पुर जयो,
वामा-अश्वसेन सुत विश्वदेवो;
सेढी वात्रक तटे खेटकपुर तपे,
कल्पनी कोडी किरपाल जीवो. भीड० ३

भीड भवभीति भावठ सवि भंजणो,
भक्त मन रंजणो भावे भेट्यो;
आज जिनराज शुभ काज साधन सवे,
मोहराजा तणो मान मेट्यो. भीड० ४

कोडी मन कामना सुजश बहु ठामना,
सुख सवि धामना आज साध्या;
मंगल मालिका आज दीपालिका,
मुज मनमंदिरे मोद वाध्या. भीड० ५

पाठके ठाठमें काति वदी आठमे,
सत्तर अट्ठोत्तरे पास गायो;
उदय निज दासनी अेह अरदास सुणो,
हित धरी नाथजी ! हाथ साहो. भीड० ५

स्तुति

(राग - श्री शत्रुंजय तीरथ सार.)

वंदो वामासुत जिनराया, कमठ कठीन अभिमान गमाया,
जीवदया मन लाया,
जलता सापने नवकार सुणाया, तिरिय भव तस दूरे कराया,
धरणेन्द्र पद पाया;
केशर चंदन पूजा रचाया, नाटक नव नव गीत गवाया,
अहो निश मनमें आया,
उना हुआ पुर मंडनराया, भीडभंजन जिन नाम कहाया,
नित्य नित्य सेवो पाया. १

ऋषभादिक जिनवर वांदीजे, केशर चंदन मृग मद लीजे,
पूजा ते भावे रची जे,
वीशे विहरमान थुणी जे, मानव भव सफल करी जे,
समकित शुद्ध लहीजे;
अतीत अनागत देव कहीजे, प्रह उठीने पाये प्रणमीजे,
तो भव भय भांजीजे,
शाश्वता जिनवर बिंब नमी जे, सित्तरेसो अरिहंत जपीजे,
पातिक दूरे पालीजे. २

समवसरण देवेन्द्र रचंता, अष्ट महा प्रातिहार्य करंता,
सिंघासण परठंता,
ते उपरे प्रभुजी बेसंता, तेजे दिनकर जेम जपंता,
झळहळ करी झलकंता;
अमृतसम उपदेश देयंता, जाणे पुष्कर घन वरसंता,
सुरनर नाग सुणंता,
जे गणधर सिद्धान्त कहंता, संप्रति काले गुरु जे वाचंता,
सांभलजो गुणवंता. ३

पाये नेउर झांझरी झलकारा, कटि मेखल घूघरी धमकारा,
सोहे सकल शिणगारा,
अहि कुर्कुट वाहन उदारा, सुवर्ण वर्ण शरीर धारा,
करे कमल कामणगारा;
पाणी पद्ममां पाश सोहे, वाम हाथे अंकुश सोहे,
चार हाथ मन मोहे,
पद्मावती यक्षिणी सारी, भक्तोना दे दु:ख विदारी,
पार्श्व पूजकनी बलीहारी. ४

४८ श्री मक्षी पार्श्वनाथ

चैत्यवंदन

त्रेवीशमा त्रिभुवन तिलक त्रिकरण थी सेवो,
त्रिगुण सहित गुणत्रय रहित आपे शिव मेवो... १

परम पुरुष परमात्मा पावन परमेसर,
प्रगट ज्योति अविचल कला लीला अलवेसर... २

ते प्रभुना गुण गावता अे प्रगटे परम विलास,
राम प्रभुनी सेवना करता पहुंते आश... ३

स्तवन

(दासी हो ! दासी राम ! तुमारी - अे देशी.)

सुणो पास-जिणेसर ! सामी, [१]अलवेसर अंतरजामी;
हुं तो अरज करुं शिरनामी, प्रभु साथे अवसर पामी...१
हो स्वामी ! तारो ! तारो ! प्रभुजी तारो... अे आंकणी

मुजने भवसागर तारो, चिहुं गतिना फेरा वारो;
करुणा करी पार उतारो, अे विनति मनमां धारो...
हो स्वामी० २

संसारे सार न कांइ, साचो अेक तुं ही सखाइ;
ते माटे करी थिरताइ, में तुज चरणे लय लाइ...
हो स्वामी० ३

तारक तुं जगत प्रसिद्धो, पहेले पण तें जस लीधो;
सेवकने शिव-सुख दीधो, अेक मुजशुं अंतर[२] कीधो...
हो स्वामी० ४

इम अंतर ते न करेवो, सेवकने शिवसुख देवो;
अवगुण पण गुण करी लेवो, हेत[३] आणी बांहे ग्रहेवो...
हो स्वामी० ५

सेवक चूके कोइ टाणे, पण साहिब मनमां न आणे;
निज अंगीकृत परमाणे, पोतानो करीने जाणे...
हो स्वामी० ६

तुं त्रिभोवन नाथ कहेवाय, इम जाणीने जिनराय;
द्यो ! चरण-सेवा सुपसाय, जिम **हंसरतन** सुख थाय...
हो स्वामी० ७

---

१. अद्‌भुत सामर्थ्यवाळा. २. भेदभाव.
३. अंतरनो प्रेम.

स्तुति

(राग - प्रह उठी वंदु ऋषभदेव)

गलकुंडा पासे, मलकापुर ते गाम,
तिहां पास जिनेसर, सोहे अति अभिराम;
नीलुपल दल सम, नवकर काया मान,
केशर, चंदने पूजी कीजे प्रभुनुं ध्यान. १

दो राता जिनवर, दो धोला दो श्याम,
दो मरगय वन्ना, सोलस कंचन वान;
प्रह उठी भविका, अनुदिन करो प्रणाम,
अे जिनने नामे, सीझे वंछित काम. २

शुद्ध मारग दाखे, भाखे चार प्रकार,
दान शीयल तपादिक, भावना भावे सार;
चिहुं गय दु:ख वारे, सारे आतम काज,
तेह करम हणीने, पामे मुगतिनु राज. ३

रुमझुम करती, कोटे नवसर हार,
चामीकर मेहल, सोहे सार श्रृंगार;
शासन श्रुतदेवी, विघन हरे निशदीश,
कीरति सुख आपो, पुरो संघ जगीश. ४

४९ श्री शंखला पार्श्वनाथ

चैत्यवंदन

गणधर चोराशी कह्या, वली पंचाणु छेक,
दोय अधिक इगसय गणा, सोल अधिक शतअेक. १

शत सुमतिने गणधरा, इगसय अधिका सात,
पंचाणु त्राणुं तथा, अडसीइ इगसीइ व्रात. २

बहोतेर छासठ सगवन, पचास तेतालीश,
छतीस, पणतीस कुंथुने, अर गणधर तेत्रीश. ३

अडवीश अष्टादश सुण्या, नमी सत्तर गणधार,
अेकादश दश शीव गया, वीर तणा अगीयार. ४

ऋषभादिक चोवीशना अे, अेक सहस सयचार,
अधिकेरा बावन कह्या, सर्व मली गणधार. ५

अक्षयपद वरीया सवे अे, सादि अनंत निवास,
करीअे शुभ चित वंदना, जब लग घटमां सास. ६

स्तवन

(बाइजी ! तुमारो बेटडो, नणदी तुमारो वीर रे - अे देशी.)

पुरिसादाणी पासजी, अवधारो मुज अरदास रे;
प्रभु सेवाशुं मन घणुं.
अहनिशि हियडा में वस्या रही, कुसुमे जेम सुवास रे... प्रभु० १

परम-पुरुषशुं प्रीतडी, करतां आतम सुख थाय रे; प्रभु०
कामी क्रोधी लालची, नयणे दीठा न सुहाय रे... प्रभु० २

आठ पहोर चोसठ घडी, संभारुं ताहरुं नाम रे; प्रभु०
चित्तथी न करुं वेगळो, बीजुं नही माहरे काम रे... प्रभु० ३

अवनि इच्छित पूरवे, सहु सेवकनो महाराय रे; प्रभु०
महेर करीजे साहिबा, दीजे वंछित सुपसाय रे... प्रभु० ४

अविनाशी अरिहंतजी, वामानंदन देव रे; प्रभु०
श्री अखचंद सूरीशनो शिष्य, **खुशाल** करे तुज सेव रे... प्रभु० ५

स्तुति

शंखेश्वर पासजी पूजीअे, नरभवनो लाहो लीजीअे;
मनवांछित पूरण सुरतरु, जय वामासुत अलवेसरुं. १

दोय राता जिनवर अति भला, दोय धोळा जिनवर गुणनीला;
दोय नीला दोय शामल कह्या, सोळे जिन कंचनवर्ण लह्या. २

आगम ते जिनवर भाखीयो, गणधर ते हैडे राखीयो;
तेहनो रस जेणे चाखीयो, ते हुवो शिवपुर साखीयो. ३

धरणेन्द्रराय पद्मावती, प्रभु पार्श्वतणा गुण गावती;
सहु संघना संकट चूरती, **नयनविमल**नां वांछित पूरती. ४

५० श्री चंपा पार्श्वनाथ

चैत्यवंदन

अेकाकी श्री वीर पास, तेत्रीश मुनि साथे;
पंचशया छत्रीश नेमि, नवशतशुं शांति. १

पणसयशुं मल्लि सुपास, अडसयशु धर्म;
षटशत मुनिशुं वासुपूज्य, लह्यां जे शिवमर्म. २

अनंतनाथजिन सहस्सशुं अे, ऋषभने दश हजार;
पद्मप्रभने आठशें, उपर त्रण उदार. ३

विमलनाथ षट्सहस्सशुं, सिद्धा सुखकार;
ऋषभदेव अष्टापदे, नेमीश्वर गिरनार. ४

चंपा वासुपूज्य वीर-पावापुरी सार;
अष्टकर्मनो क्षय करी, पाम्या भवजल पार. ५

शेष वीश संमेतगिरिअे, शिवसुख लह्यां उदार;
ज्ञानविमल सुखसंपदा, जेने अचल अपार. ६

स्तवन

(राग - आज मारा प्रभुजी सामुं/चरणो में तेरे)

वामानंद वसंतश्युं खेले, प्रभु पुरिसादाणि;
अविचल सुख संगति मिले, गुणरयणनी खाणी. प्रभु० १

परमानंद नंदनवनमांहि, समतासुंदरी गेले;
जडता हिमपट शिशिरवती ते, अनुभव परिमल झेले. प्रभु० २

अध्यातम सुखशांति प्रसगे, प्रसरत पवन झकोले;
अरिहंत अतिशय अद्‌भुत शोभित, कुसुमवृंद कृतमेले. प्रभु० ३

पातिकपात झरत त्रिहुं जगका, शोक संतापकुं ठेलि;
चंपक लालगुलाब अजाबे, बोलसिरि ने वेलि. प्रभु० ४

ज्ञानविमल प्रभुगुण मकरंदे, मंगल कमलाकेलि;
जिन दरिसनथें दरिसण निर्मल, आज भये रंगरेलि. प्रभु० ५

स्तुति

(राग - शांति सुहंकर साहिबो संजम अवधारे.)

शंखेश्वर जिन सेवीअे, भवपार उतारे,
नारक दु:ख निवारीने, तिर्यंचनां टारे;
देव मानव भव पामतां, ज्ञान संपद धारे,
जिन अवलंबी प्राणीओ, जाय मुक्ति किनारे. १

आदिजिन अष्टापदे, मुक्ति पद पाम्या,
उज्जित शिखरे नेमिजिन, सर्व दु:खने वाम्या;
वासुपूज्य चंपापुरी, पावाअे वीर जाणो,
सम्मेतशिखरे वीश जिन, पाम्या मुक्ति प्रमाणो. २

ज्ञान अगाध जिणंदजी, आगममांहि भाखे,
तरता ते भवि प्राणीओ, जे हृदये राखे;
वर्धमान आदि तपो, अे आगम साखे,
करतां जे भवि प्राणीआ, ते शिवसुख चाखे. ३

पार्श्वयक्ष पद्मावती, शासन रखवाली,
भावे जे सिमरण करे, विघ्न तास दे टाली;
विजयकमलसूरीश्वरु, तपगच्छना वाली,
लब्धिसूरि गुण गावता, थाय भाव दिवाली. ४

५१ श्री भटेवा पार्श्वनाथ

चैत्यवंदन

जय जय श्री पार्श्वनाथ सुख संपत्ति कारी,
अश्वसेन वामा तणो नंदन मनोहारी... १

नीलवर्ण नव हस्त देह अहि लंछन धारी,
अेकसो वर्षनुं आउखुं वरी लक्ष्मी सारी... २

जन्म ठाम वाराणसीअे प्रत्यक्ष परतो देव,
सान्निध्यकारी साहिबो **रुप** कहे नित्यमेव... ३

स्तवन

(राग - गरबानी)

जयकारी जिनराय पुरुषादाणी रे,
वामासुत वरदाय, निरमल नाणी रे. १

पंचकमल प्रभु अंग, निरुपम निरख्या रे,
त्रण कमल मुज संगे, अतिशय हरख्या रे. २

वदन महोदय देखी, चंद लजाणो रे,
गगन भमे निशदिन, इम मन जाणो रे. ३

सुरमणि ज्युं सुखकार, नयन विराजे रे,
हृदय कमल विशाल, थाल ज्युं छाजे रे. ४

प्रभु कर चरण विलोकी, पंकज हार्यो रे,
ततक्षण निज संवास, जलमें धार्यो रे. ५

इम सर्वंग उदार, श्री जिन राया रे,
साचे पुण्य संजोग, साहिब पाया रे. ६

प्रभु गुण अनुभव नीर, संग सुरंगे रे,
खाल्यो पातिक पंक, आतम संगे रे. ७

वरस अढार चोत्रीस, वदि वैशाखे रे,
मनहर पांचम दिवस, सहु संघ साखे रे, ८

नगर भटेवा मांही, पास जुहार्या रे,
श्री जिनचंद मुणिंद, वांछित सार्या रे. ९

स्तुति

(राग - पुंडरीकमंडन पाय प्रणमी जे.)

चाणस्मापुरमंडन सुखकर, पास जिनेसर सोहे जी,
वंछित पूरण सुरतरु समवडी, सुर नरना मन मोहे जी;
कमठ हठी हठ भंजन गंजन, मोह महाभय भ्रांतो जी,
ते श्री पास जिनेसर पूजो, राणी प्रभावती कंतो जी. १

वर्तमान जिन पंचदश क्षेत्रे, जिनशासनना इश जी,
वली अतीत अनागत जिनवर, प्रणमो विश्वावीश जी;
सकल सुरासुर सेवित पदकज, सकल जिनेसर केरा जी,
अेक मना आराधो भवियां, जिम न होइ फेरा जी. २

चार निकायना देव मिलीने, समवसरण विरचंत जी,
सुर नर किन्नर कोडाकोडी, आवे भवि गुणवंत जी;
भवदव तापने जल सम वाणी, वरसे श्री जिनवाणी जी,
ते जिनवाणी धरी चित्त प्राणी, जिम होइ पंचमनाणी जी. ३

पास भटेवो भाव धरीने, प्रणमो भविजनवृंदा जी,
जेह पसाये विघन निवारे, पउमावइ धरणींदा जी;
सकल पंडित शिर मुगट नगीनो, दीपसागर गुरु शीश जी,
सुखसागर प्रभुपास पसाये, दिन दिन अधिक जगीश जी. ४

५२ श्री नवलखा पार्श्वनाथ

चैत्यवंदन

वृषभ गज हय कपि क्रौंच, कमल स्वस्तिक शशि मच्छ;
श्रीवच्छ खड्गीजीव महिष, सूयर तिम अच्छ. १

सेण वज्र मृग छागलो, जाति नंदावर्त;
कुंभ कच्छप नीलुं कमल, शंख फणि सिंह अदंत. २

ऋषभादिक जिनवर तणा अे, अेहवा जिन चउवीश;
ज्ञानविमल प्रभु सेवतां, सुख लहे विश्वावीस. ३

स्तवन

(राग : मथुरामां खेल खेली आया हो स्वाम)

नवलखा पार्श्व जिनराया, हो स्वाम दर्श दिखाया;
दर्श दिखाया, पालीमें पाया. नवलखा पार्श्व जिन० (अे आंकणी)

नगरी वणारसी जन्म्या जिणंदजी;
वामामाता हुलराया, हो स्वाम दर्श दिखाया. नवलखा० १

अश्वसेन प्रभु तात तुमारा;
रोम रोम हरखाया, हो स्वाम दर्श दिखाया. नवलखा० २

तीनो ही लोकमें हुआ उजाला;
नारक भी क्षण सुख पाया, हो स्वाम दर्श दिखाया. नवलखा० ३

नवकार दिलाकर नोकरसे स्वामी;
धरणेन्द्र नागको बनाया, हो स्वाम दर्श दिखाया. नवलखा० ४

प्रभावतीको परणी प्रभुने;
भोगावलीको खपाया, हो स्वाम दर्श दिखाया. नवलखा० ५

यथाख्यात प्रभु संजम पाली;
घाति करमको उडाया, हो स्वाम दर्श दिखाया. नवलखा० ६

केवल झगमग ज्योति पाइ;
समोवसरणमें सुहाया, हो स्वाम दर्श दिखाया. नवलखा० ७

दु:ख दावानल वारण कारण;
वाणीका मेघ बरसाया, हो स्वाम दर्श दिखाया. नवलखा० ८

संयमी देशव्रत समकितधारी;
लाख्खो जनोंको बनाया, हो स्वाम दर्श दिखाया. नवलखा० ९

धन्य वो नेत्र जो दर्शन पावे;
धन्य जिभा गुण गाया, हो स्वाम दर्श दिखाया. नवलखा० १०

कामगवी कामकुंभ चिन्तामणी;
सुरतरु अधिक सोहाया, हो स्वाम दर्श दिखाया. नवलखा० ११

सर्वसंवर गुण चउदमे मैं साधी;
शिवपुरीमें सिधाया, हो स्वाम दर्श दिखाया. नवलखा० १२

पालीको धर्मकी स्थाली बनाइ;
बावन जिनालय दीपाया, हो स्वाम दर्श दिखाया. नवलखा० १३

संवत ओगणी छीआणु वरसे;
कारतक पूनम दिन ठाया, हो स्वाम दर्श दिखाया. नवलखा० १४

आत्म कमलमें धर्म विकासी;
लब्धिसूरि गुण गाया, हो स्वाम दर्श दिखाया. नवलखा० १५

स्तुति

श्री नवलखा जिनेसर वामा उर मल्हार,
अश्वसेन कुल दीवो दीवबंदर शणगार;
सुख संपत्ति दाता सकल पदारथ जाण,
ते भजतां प्राणी पामे नित कल्याण. १

नवमा जिन सुविधिनाथ सदा सुखकारी,
नेमनाथने प्रणमो नवलखा पासे जय कारी;
इत्यादिक जिनवर दीव बंदरमां सोहे,
अेहवा जिन उपरे भवि जनना मन मोहे. २

रुपा सोनाना मणीमय गढ त्रणे जाण,
सिंघासन बेठा प्रभुजी करे सुवख्यान;
सुरनरने तिर्यंच बहु जाण अजाण,
अमरत पें मीठी सांभले जिननी वाण. ३

पगे रमझम करती चतुर चाले चमकंती,
पउमावती देवी पासजीनुं नाम जपंती;
पंडितवर महिमासुंदर तास पसाय,
शीश **कल्याणसुंदर** पासजीना गुण गाय. ४

५३ श्री प्रगटप्रभावी पार्श्वनाथ

चैत्यवंदन

युगला धर्म निवारीओ, आदिम अरिहंत,
शांतिकरण श्री शांतिनाथ, जग करुणावंत. ...१...

नेमिनाथ बावीशमा, बाल थकी ब्रह्मचारी,
प्रगट प्रभावी पार्श्वदेव, रत्नत्रयी धारी. ...२...

वर्त्तमान शासन धणीओ, वर्धमान जगदीश,
पांचे जिनवर प्रणमतां, वाधे जगमां जगीश. ...३...

जन्म कल्याणक पंच रुप, सोहमपति आवे,
पंच वर्ण कलशे करी, सुरगिरि नवरावे. ...४...

पंच साख अंगुठडे, अमृत संचारे,
बालपणे जिनराज काज, अेम भक्ति शुं धारे. ...५...

पांच धाव पालीज ते, जोवन वय आवे,
पंच विषय विषवेली तोडी, संजम मन भावे. ...६...

छंडी पंच प्रमाद पंच, इन्द्रिय बल मोडी,
पंच महाव्रत आदरे, देइ धन कोडी. ...७...

पंचाचार आराधतां, पाम्या पंचम ज्ञान,
पंच देह वर्जित थया, पंच ह्रस्वाक्षर मान. ...८...

पंचमी गति भरतार तार, पूरण परमाणंद,
पंचमी तप आराधतां, **क्षमाविजय** जिनचंद. ...९...

स्तवन

(राग-शंखेश्वर साहिब साचो - चार दिवसना चांदरडानी)

श्री पासजी प्रगट-प्रभावी, तूज मूरति मुज मन भावी रे....१
मन मोहनां जिनराया,
सुर-नर-किन्नर गुण गाया रे, मन मोहना जिनराया... अे आंकणी
जे दिनथी मूरति दीठी, ते दिनथी आपद नीठी[१] रे... मन० २
मटकाळुं मुख सुप्रसन्न, देखत रीझे भवि मन्न रे... मन० ३
समतारस केरां कचोळां[२], नयणां दीठे रंगरोळां[३] रे... मन० ४
हाथे न धरे हथियार, नही जपमाळानो प्रचार रे... मन० ५
उत्संगे न धरे वामा[४], जेहथी उपजे सवि कामा रे... मन० ६
न करे गीत-नृत्यना चाळा, अे तो प्रत्यक्ष नटना ख्याला रे...मन० ७
न बजावे आपे वाजां, न धरे वस्त्र जीरण-साजां[५] रे... मन० ८
इम मूरति तुज निरुपाधि, वीतराग-पणे करी साधी रे...मन० ९
कहे **मानविजय** उवज्झाया, में अवलंब्या तुज पाया रे..मन०१०

---

१. नाठी = भागी. २. कटोरा. ३. आनंदोत्स्व.
४. स्त्री. ५. जूना के नवा.

स्तुति

(राग - शत्रुंजयमंडन ऋषभजिणंद दयाल.)

जय पासजिनेसर, परमेसर परगट्ट,
जस महिमा छाजे, भाजे भवभयवट्ट;
अरि चोर उपद्रव, रोग शोग टळे कष्ट,
श्री पास पसाये, लहीये घरे [१]गहगट्ट. १

जय मंगलकारण, तारण त्रिभुवन रंग,
में पाम्या जिनवर, सेव करुं अभंग;
अतीत अनागत, वर्तमान जिनचंग,
जिनवंदन भंजन, कर्मतरु उत्तंग. २

जिनशासन भासन, शाश्वतां अंग उदार,
जिनवाणी खाणी, आणी गुणगण धार;
जग सोह चडावे, पावे जग उपगार,
अेहवी जिनवाणी, विजयदेव [२]गणधार. ३

पद्मावती पंकज, अंग ज अद्‌भुत अेह,
मनवंछित पूरे, चूरे संकट देह;
सुखदायक नायक, विजयसिंह गुरु जेह,
तेहना शिष्य बोले **गजविजय** वर देह. ४

पाठभेद १. गयगट्ट. २. जयकार

५४ श्री सेसली पार्श्वनाथ

चैत्यवंदन

अेक सहसने चारसे, बावन वळी जाणो;
सवि जिनना पुंडरीक आदि, अंते गौतम आणो. १

अडवीश लख अडयाल सहस, मुनि जिनकर दीक्षा;
लख चुंमालीस सहस छियाल, चउसय षट शिष्या. २

अे साहुणी जिनवर तणी, अे सवि हुंती जाण;
शुद्ध संयम आराधतां, **ज्ञानविमल** गुणखाण. ३

स्तवन

(राग - स्वामी तुमे कांई कामण कीधुं.)

वामानंद श्री पास, म्हारी सांभळो तुमे अरदास[१];
अमे सेवक तुमारा, तुम्हे छो साहिबजी हमारा.
... हो साहिब ससनेहा. १

सुंदर प्रभु तुम रुप, जस दीठे हार्यो रति[२] भूप;
प्रभु मुख विधु[३] सम दीसे, देखी भवियणनां मन हीसे[४].
... हो साहिब ससनेहा. १

कमल-दल[५] सम तुम नयणां, अमृतथी मीठां वयणां;
तुम अर्द्ध-चन्द्र सम भाल[६], मानुं [७]अधर जिस्या परवाळ.
... हो साहिब ससनेहा. १

[८]शांति-[९]दांति गुण भरीयो, अे तो अगणित गुणनो दरियो;
साचो शिवपुर साथ, प्रभु तुं छे अनाथनो नाथ.
... हो साहिब ससनेहा. १

अे तो भजन करवा ताहरुं, प्रभु उलस्युं छे मन माहरुं;
अे तो प्रेमविबुधनो शीश, **भाणविजय** नमे निस-दीश.
... हो साहिब ससनेहा. १

---

१. विनति. २. कामदेव ३. चन्द्र. ४. उल्लसे ५. कमल की पांखडी
६. कपाळ ७. होठ ८. समता ९. निर्विकारिता

स्तुति

(राग - शत्रुंजय मंडन ऋषभ जिणंद दयाल.)

प्रणमो भवि भावे, तोडापुरवर पास,
दु:ख दोहग चूरे, पूरे वंछित आस;
अश्वसेन नरेसरु, कुल नभ बोधन [१]हंस,
[२]वामा शुभ वामा, कूख सरोवर हंस. १

वैताढि विपुलगिरि, नंदीसर वक्षकार,
अष्टापद अर्बुद, विमलाचल गिरनार;
वैभार विंध्याचल, कुलगिरि कनकगिरींद,
शाश्वत जिनप्रतिमा, वंदुं मने आणंद. २

पणयालीस आगम, श्री जिनगणधर भाखे,
तिहां अंग इग्यारे, बार उपांग ज दाखे;
मूल सूत्र पयन्ना, छेद नंदी अनुयोग,
सांभलतां श्रवणे, लहीये सर्व संयोग. ३

रमझम पाये नेउर, कटिमेखल कटि सोहे,
रुपे रति रंभा, उमया उर्वसी मोहे;
पद्मावतीदेवी, [३]अलिय विघन [४]अघ डारे,
कवि **सुर** कहे मुज, दोलित दरश तुहारे. ४

---

१. सूर्य. २. सुंदर. ३. अप्रिय. ४. पाप.

भावना गीत

आंख मारी उघडे त्यां

आंख मारी उघडे त्यां शंखेश्वर देखुं,
मंदिरमां बेठा मारा पारसनाथ देखुं,
पारसनाथ देखुं तो मन हरखातुं,
धन्य धन्य जीवन मारुं कृपा अेनी लेखुं...

अंतरनी आंखोथी दरिशन करतां,
नयणा अमारा निशदिन ठरतां;
तारी रे मूरतीये मारुं मन ललचाणुं; धन्य धन्य...१

नवण करावी ने अंतर पखाळुं,
केशर चढावी मारा कर्मोने बाळुं;
चंदन चढावी मनने शीतल बनावुं; धन्य धन्य...२

सोना रुपाना फूलडे वधावुं,
अंतरथी हुं तारी आरती उतारुं;
भवोभव मारे शरणुं तमारुं; धन्य धन्य...३

निशदिन तारा गुणला हुं गावुं,
शिव मस्तु सर्वनी भावना हुं भावु;
ज्यारे ज्यारे याद करुं तुजने हुं देखुं; धन्य धन्य...४

आणि मन शुद्ध आसथा

आणि मन शुद्ध आसथा, देव जुहारुं शाश्वता;
पार्श्वनाथ मन वांछित पुर,
चिंतामणी मारी चिंता चूर, शंखेश्वर दादा मारी चिंता चूर... १
अणियाली तारी आँखड़ी, जाणे कमलतणी पांखडी;
मुख दीठे दुःख जावे दूर... चिंतामणी मारी चिंता चूर...२
को कोईने को कोईने नमे ,मारा मन मां तु ही रमे;
सदा जुहारुँ उगते सूर ... चिंतामणी मारी चिंता चूर...३
शंखेश्वरना साचा देव, अशुभ कर्मोने पाछा ठेल;
तुं छे मारे हाजरा हजूर... चिंतामणी मारी चिंता चूर...४
आ स्तोत्र जे मनमां धरे, तेहना काज सदाये सरे;
आधि-व्याधि दुःख जावे दूर... चिंतामणी मारी चिंता चूर...५
मुज मन लागी तुजशुं प्रीत, दूजो कोई न आवे चित्त;
कर मुज तेज प्रताप प्रचूर... चिंतामणी मारी चिंता चूर...६
भवो भव देजो तुम पद सेव, श्री चिंतामणी अरिहंत देव;
'समयसुदंर' कहे गुण भरपूर... चिंतामणी मारी चिंता चूर...७

आ पारस मारा पोताना

आ पारस मारा पोताना (२)
मारा पोताना नहिं बीजाना....

तमे वामादेवीना नंद भले, तमे अश्वसेन कुलचंद भले,
पण पारस मारा पोताना...१

तमे वढीयार देश नरेश भले, तने पूजे आखो देश भले,
पण पारस मारा पोताना... २
भले राजा महाराजा चरण नमे, तारा चोसठ इन्द्रो चरणो चूमे,
पण पारस मारा पोताना... ३
तमे वाराणसीना राजा भले, तमे त्रण भुवनना महाराजा भले,
पण पारस मारा पोताना... ४
तारा अेकसोने आठ नाम भले, तारा गामे गाम धाम भले,
पण पारस मारा पोताना... ५
तमे धरणेन्द्रना देव भले, तमे पद्मावतीना प्यारा भले,
पण पारस मारा पोताना... ६

ओ पालनहारे, निर्गुण ओर न्यारे

ओ पालनहारे... निर्गुण ओर न्यारे,
तुमरे बिन हमरा कोनुं नहि,
हमरी ये उलझन सुलझाओ भगवन्,
तुमरे बिन हमरा कोनुं नहि,
तुम्ही हमका हो सहारे, तुम्हरी हमरे रखवाले,
तुमरे बिन हमरा कोनुं नहि...

चंदा में तुम्हे तो भरी हो चांदनी, सूरज में उजाला तुम्ही से,
ये गगन है मगन, तुम्ही तो दीये हो इसे तारे,
भगवंत ये जीवन, तुम्हे ना संवारी तो क्या कोई संवारे,
जो सुनी तो कहे प्रभुजी हमरी हे बिनती...

दु:खी जन को धीरज दो, हारे नहीं तो कभी दु:ख से,
तुम निर्बल को रक्षा दो, रह पाये निर्बल सुख से,
भक्ति दो... शक्ति दो...

जग के जो स्वामी हो इतनी तो अरज सुनो,
हे पथ में अंधीयारे, दे दो वरदान मे उजीयारे,
ओ पालनहारे... ओ पालनहारे...

एवुं लागे छे आजे मने प्रभु

(राग : जिंदगी प्यार का गीत है - सौतन)

एवुं लागे छे आजे मने,
प्रभु ! आव्या छे मारा हृदयमां;
मित्र मानुं बधा जीवने,
भाव जाग्या छे मारा हृदयमां ... १

वैरवृत्तिनी ज्वाला उपर,
धारा वरसी रहो मेघनी;
कुणा कुणा क्षमा भावना,
फूट्या अंकुर मारा हृदयमां ... २

ठंडो सूरमो अंजाई गयो,
राता धगधगतां लोचन महीं;
क्रोध आव्यो तो जेना उपर,
प्रेम प्रगट्यो छे मारा हृदयमां ... ३

जेनी जागी ती ईर्ष्या मने,
एनी इच्छुं छुं प्रगति हवे;
सुख एनुं ए माणे भले,
बळूं शाने हुं मारा हृदयमां ... ४

करे नुकसान जेओ मने,
ए तो केवल निमित्तो बधा;
भाग भजवे छे मारा करम,
साचुं समजायुं मारा हृदयमां ... ५

ऊँचा अंबरथी आवोने

ऊँचा अंबरथी आवोने प्रभुजी,
दर्शन करवाने तरसे आंखडी (२)...
सुरज ने चांदलानां दीवडा प्रगटाव्या,
टमटमता तारला ने मारगे बिछाव्या,
उभो रे अधीर हुं तो जोउं वाटलडी,
...दर्शन करवाने...१
आवो तो नयनोमांथी अमीरस वरसावजो,
कापो ने कर्म अमारा भक्ति स्वीकारजो,
मुखलडुं जोवां हुं तो थयो उतावळो,
...दर्शन करवाने...२
लाख लाख दीवडाथी देरासर सजाव्युं,
हृदय सिंहासनमां आसन बिछाव्युं,
आवो मारा अंतरमां, पधारो मारा प्रभुजी,
...दर्शन करवाने...३

चोक पुरावो, मंगल गावो

(राग : उतरी है आज मेरे पिया की सवारी)

चोक पुरावो मंगल गावो, आज मेरे प्रभु मन भाये है,
आंगी रचावो मुगुट चडावो, आज प्रभु मेरे घर आये है...
एरी सखी मंगल गावो री धरती अंबर सजावो री,
उतरेगी आज मेरे प्रभु की सवारी... १
हर कोइ नाचो गावो रे, ढोल मंजीरा बजावो रे,
आज प्रभुजी मेरे मन पधारे,
आज जिनजी मेरे मन पधारे... २
खबर सुनवाजो, खुशी रे जतावजो रे,
आज प्रभुजी मेरे मन भाये हैं... ३
रीमझीम बादल वरसे, कली कली फूल खीले,
खुशीयाँ आज द्वार मेरे डाले है डेरा... ४
घनन घंट बजे, प्रभु नाम शंख रटे,
आंगन आंगन है, खुशियों का मेला,
अनहद नाद बजावो रे सब मिल नाचो गावो रे...
आज मेरे प्रभु मन भाये है... ५

तुं मने भगवान एक

(राग : बस ! यहीं अपराध)

तुं मने भगवान ! एक वरदान आपी दे,
ज्यां वसे छे तुं मने, त्यां स्थान आपी दे,

हुं जीवुं छुं ए जगतमां, ज्यां नथी जीवन,
जिंदगीनुं नाम छे बस ! बोजने बंधन
आखरी अवतारनुं, मंडाण बांधी दे...
ज्यां वसे छे...१

आ भूमिमां खूब गाजे, पापना पडघम,
बेसूरी थइ जाय मारी, पुण्यनी सरगम,
दिलरुबाना तारनुं, भंगाण सांधी दे...
ज्यां वसे छे...२

जोम तनमां ज्यां लगी छे, सौ करे शोषण,
जोम जातां कोइ अहींया, ना करे पोषण,
मतलबी संसारनुं, जोडाण कापे दे...
ज्यां वसे छे...३

जिनवर ! तारुं शासन...

(राग : चाहा है तुझको, चाहुँगा हरदम)

जिनवर ! तारुं शासन, आ जगमां छे महान,
एना आधारे, मारे तरवो आ संसार...
मने एज तारशे भवपार उतारशे,
मझधारमां नैया कांठे पहोंचाडशे,
एवी मुजने श्रद्धा छे, साचे साची श्रद्धा छे,
दृढ मुजने श्रद्धा छे, पाके पाये श्रद्धा छे...
जिनवर...१

नश्वर संबंधो ज्यारे साथ छोडशे,
त्यारे निश्चय मारो हाथ पकडशे,
समजण देशे, सांत्वना देशे, शक्ति पण देशे,
भूलो जो पडीश मुजने, मार्ग ए देखाडशे,
ढीलो जो पडीश मारुं, सत्त्व ए वधारशे...

जिनवर...२

मुंझवण थशे तो मार्गदर्शन आपशे,
अवढवमां साची मने समजण आपशे,
मोक्षमार्गनुं, एकांते, आकर्षण आपशे,
पुरुषार्थ करशे एने, आधार आपशे,
समर्पित थयेलानुं, ध्यान सदा राखशे...

जिनवर...३

अज्ञान अंधकारने ए दूर करशे,
ज्ञानना अजवाला ए जरुर करशे,
सत्त्व देशे, तत्त्व देशे, मिथ्यात्व हरशे,
अशुद्ध एवा आतमाने, शुद्ध ए बनावशे,
साधना करावी अंते, सिद्ध पण बनावशे...

जिनवर...४

शासन एकांते सहुने सुखदायी छे,
शासनथी विपरीत बधुं दु:खदायी छे,
जिनशासननी, प्रत्येक आज्ञा, शिरदायी छे,
आज्ञा जे पालशे ते, शिवसुख पामशे,
शरणे जशे जे एना, भवदु:ख भांगशे...

जिनवर...५

तुज करुणाधार मां

तुज करुणाधार मां हुं, नित्य भींजातो रहुं,
पार्श्व शंखेश्वर प्रभुजी, शरण हुं तारुं लहुं...

तुं जे छे मारुं जीवन, तारा विना चित्त ना ठरे,
नाम तारुं हरपल, मारा उरमां धबक्या करे;
वियोगनी वसमी अवस्था, कीम हुं जीवीत रहुं... १

तुं वसे छे केटले दूर, हुं अहीं सबड्या करुं,
तुं मजेथी म्हालतो, हुं अहीं तहीं भटक्या करुं;
प्राण प्यारा नही मळे तो, आयखुं पुरु करुं... २

प्रीतडी तारी ने मारी, केटली उमदा हशे,
हरघडी तुजने ना भूलुं, केवा ऋणबंधन हशे;
मन मनावुं क्यां सुधी, वियोगमां झुर्या करुं... ३

आंसुओ अेक दिवस मारा, तुजने पीगळावशे,
आश छे अेवी हृदयमां, अेक दि मळवा आवशे;
तुज भरोसे छे बाळक, अेथी वधारे शुं कहुं... ४

तुजने जोया करुं

तुजने जोया करुं, तारी सन्मुख रहुं,
तारा होठ फडफडे, अेनी राह जोऊं छुं...
तने मनथी हुं निशदिन समरतो रहुं,
तारी आशामां जुगजुगथी वाट जोउं छुं,
तारी अमिदृष्टि माटे हुं तरस्या करुं... १

ज्यारे भाव भरीने तारी भक्ति करुं,
त्यारे उन्मादे हैयुं न साचवी शकुं,
तारी आंखो पटपटे अेनी राह जोउं छुं... २

कोइ परभवनी प्रीत मारी जागी गइ,
तारी भक्तिथी भीती बधी भांगी गइ,
अेवी दिव्यदृष्टि दे के मोक्षमार्ग शोधी लउं... ३

मारा आतमने मार्ग चींध, अे ज मांगु छुं,
तारुं हैयुं मने ओळखी ले, अेज ज मांगु छुं,
तुं बांहो पसारे तो हुं समाइ जाउं... ४

तारा विरह अश्रु मारा नयणे वहे,
क्यारे दादा आवीने मारा आंसु लूछे,
तुं केम ना सुणे हुं तने रोज विनवुं... ५

मारो धन्य बन्यो

मारो धन्य बन्यो आजे अवतार
के मळ्या मने परमात्मा...
करुं मोंघो ने मीठो सत्कार
के मळ्या मने परमात्मा...

श्रद्धाना लीलुडां तोरण बंधावुं
भक्तिना रंगोथी आंगण सजावुं
हो... सजे हैयुं सोनेरी शणगार
के मळ्या मने परमात्मा...

प्रीतिनां मधमधतां फूलडे वधावुं
संस्कारे झळहळता दीवडा प्रगटावुं
हो... करे मननो मोरलियो टहुकार
के मळ्या मने परमात्मा...

उरना आसनीअे हुं तो प्रभुने पधरावुं
जीवन आखुं तारा चरणे बिछावुं
हो... हवे थाशे आतमनो उद्धार
के मळ्या मने परमात्मा...

दर्शन देजो नाथ

दर्शन देजो नाथ, दर्शन देजो नाथ... (२)
भक्तो तारा तने पोकारे, दर्शन देजो नाथ (२)

अंतरनी तमे आशा पूरजो, दु:खडा सौना हरजो
दीनदयाळु दादा मारा, रक्षा सौनी करजो,
भुलु ना तने नाथ ! छूटे ना तारो साथ... भक्तो

प्रभु तारा चरणोमां हुं मांगुं तारी सेवा
शंखेश्वरना पार्श्वप्रभुजी, हो देवाधिदेवा
लइअे तारुं नाम, धरीअे तारुं ध्यान... भक्तो

अमी भरेली आंखडी तारी, वरसे अमृतधारा
कृपानिधि, करुणा सागर, जगनां पालनहारा
देजो मोक्षनुं धाम, हैये पूरजो हाम... भक्तो

प्रभु राखजे उघाडा द्वार

प्रभु राखजे उघाडा द्वार, तारा बाळकडाने काजे... प्रभु

कोइ प्रभु प्रभु करतो आवे, कोइ पार्श्वनी धुन मचावे
करुणा करजे किरतार तारा बालुडाने काजे... प्रभु

कोइ भावे पुष्पे पूजे, कोइ प्रेम दिपक प्रगटावे
रक्षा करजे तारणहार, तारा बालुडाने काजे... प्रभु

कोइ टळवळता सुख माटे कोइ रोता हैया फाटे
तुमथी केम जोइ शकाय, तारा बालुडाने काजे... प्रभु

प्रभु पारसनाथ अमारा, अमने प्राण थकी छो प्यारा
मोक्ष मारगना देनारा, तारा बालुडाने काजे... प्रभु

तने रात-दिवस हुं याद करुं

तने रात दिवस हुं याद करुं, शंखेश्वर पारसनाथ प्रभु,
तारा दर्शननी हुं आश करुं, मारा दिलनी तने शुं वात करुं.
तने रात...

अंतरयामी जग विसरामी, सहुं जीवनो छे तुं हीत कामी,
कलिकालनो छे तुं कल्पतरु, वितराग प्रभु छे विघ्नहरु.
तने रात...

मोहे घेर्या लोचन मारा, कीधा नहीं मे दर्शन तारा,
अेथी दु:ख भर्युं जीवन मळीयुं, बहु पाप कर्म मुजने नडीयुं.
तने रात...

निरख्या हशे में ओ प्रभु तमने, सुण्या हशे वळी पूज्या हशे,
पण चित्तमां धार्या नहीं होय अरे, अे कारण आपदा पाम्या खरे.
तने रात...

हे दिनबंधु करुणासागर, शरणागतना स्नेह सुधाकर,
स्वामी भक्त बनी नमतो तुजने, दुःख मुक्त तुरंत करजे अमने.
तने रात...

तमे आवजो रे शंखेश्वर मुकामे

तमे आवजो रे शंखेश्वर मुकामे,
मारा पार्श्व प्रभुना धामे, लखजो कागळीया...
अेमां छांटजो रे, केसरना छांटणीया
अेमां कंकुना छांटणीया, लखजो कागळीया. तमे आवजो रे...
पार्श्व प्रभुनी आंगी रचजो, लइने ताजा फूल (२)
आंगी अेवी सुंदर रचजो, थाय नहीं रे भूले (२)
आंगी शोभती रे, मंदिरीया शणगारो,
अेमां दिवडीया प्रगटावो, लखजो कागळीया..तमे आवजो रे...
सोना रुपाना फूलडे आजे, पार्श्व प्रभुने वधावो... (२)
साचा देवनी भक्ति करवा, शंखेश्वरमां आवो.... (२)
थै थै नाचजो रे, पार्श्व प्रभुना द्वारे,
अेनी भक्तिना आधारे, लखजो कागळीया...तमे आवजो रे...
अवसर आ सुंदर आव्यो हेतथी उजवजो
नश्वर छे मानव तन, आ वातना विसरजो
भक्ति भावथी रे, मानवता महेकावो,
पार्श्व प्रभुना चरणमां आवो, लखजो कागळीया...तमे आवजो रे...

नागेश्वर का नाथ है हमारा तुम्हारा

नागेश्वर का नाथ है हमारा तुम्हारा, तुम्हारा हमारा
जीसके द्वारे आये उसको, मिले न जनम दुबारा...

नागेश्वर का नाथ...

इस के पास आकर मन सबका बोले
जनम जनम का साथी सबका हृदय अे तोले
तारणहारा है हमारा, सबने यही विचारा...

नागेश्वर का नाथ...

इसी तीरथ के पथ्थर, कंकर हम बन जाये
भक्त ये हम पर चलकर, दर्शन तेरे पाये
सच्चे मनसे ध्यान लगावे, होये जगसे न्यारा.

नागेश्वर का नाथ...

कैसी सुंदर काया मन सबका लोभावे
मनहर मुद्रावाळा, बेडा पार लगावें
अंतिम इच्छा पूरी होवे, जीवन हो सुखकारा.

नागेश्वर का नाथ...

नीलवरण का प्रभु ये, लीला अजब दिखाता,
काउसझा मुद्दावाला, बेडा पार लगाता
नागेश्वर मंडल का आज बोले ये इकतारा

नागेश्वर का नाथ...

तारुं नाम जगतमां

ओ शंखेश्वरना पार्श्वप्रभु तारुं नाम जगतमां व्हालुं छे
तारुं नाम जगतमां अमर छे... ओ शंखेश्वरना...
तारा शिखरे धजाओ फरके छे, तारा सोनानो घुमटो चमके छे
अे घुमटनां चमकारे आजे हैया सौना हरखे छे.
ओ शंखेश्वरना.
तारी आंगीमां हीरला चमके छे, तारी आंगीमां फुलडा महेके छे.
तारा जाप जमीने भक्तजनो सौ जीवन उज्जवळ माने छे
ओ शंखेश्वरना...
मारो जीवन पंथ छे भूल भर्यो, स्वार्थनो झंजावात नड्यो
अे स्वार्थ भर्या मुज अंतरमां प्रभु प्रेमनी ज्योत जलावोने
ओ शंखेश्वरना...
सहु जीवने मित्र बनावोने, प्रभु भवसागरथी तारो मने
हो विश्वना प्रेमना पाठक प्रभुजी फरी मने समजावोने
ओ शंखेश्वरना...

मने व्हालु लागे पारसनाम

मने व्हालु लागे पारसनाम,
तन-मन-धन प्रभुना चरणोमां...
प्रभुजीना गुणोनो पार नहीं आवे,
ध्यान धरुंतो त्यां सन्मुख आवे
दीनजनोना नाथ छो, सेवकना रखवाळ छो,
तमे मारा चित्तडाना चोर... तन-मन-धन...

प्रभुजी मारा रुदियामां वसजो,
आप आवीने मारो हाथ पकडजो,
तमारो आधार छे. अेक तारणहार छे,
भक्तोनी लेजोने संभाळ...तन-मन-धन...
भवसागरथी वाला अमने उगारजो,
डूबती बेलीने वाला पार उतारजो,
तमे छो भक्तोना बेली, अेवी अमने हैया हेली,
सेवकनी लेजो संभाळ...तन-मन-धन...

मेवा मुक्ति मेवा

सेवा ओ मुक्ति मेवा (२)
हो, मारा हैयानी सेवा स्वीकारो प्रभु
मने मुक्तिना मेवा चखाडो प्रभु सेवा अे मुक्ति मेवा...

आपुं जन्मो जनमथी परीक्षा, हवे परिणामनी छे प्रतिक्षा
मारा जन्मोनो अंत क्यारे आवे भगवंत
मारा मनडानी चिंता मटाडो प्रभु... सेवा ओ मुक्ति मेवा...

में तो राखी नथी कोइ खामी, तोअे रिझया नहीं केम स्वामी,
मारो शुं छे अपराध हुं तो शोधुं दिनरात,
मारी भक्तिनी खामी सुधारो प्रभु... सेवा ओ मुक्ति मेवा...

बोजो भवनो घणों में उपाड्यो, लांबो मार्ग प्रभु में खटाड्यो
हवे लागे छे थाक थोडो लंबावो हाथ
मारा माथेथी बोजो उतारो प्रभु... सेवा ओ मुक्ति मेवा...

आश भरीने आव्यो स्वामी

आश भरीने आव्यो स्वामी, भक्तिमां नवि राखुं खामी
पूरजो मारी आश... ओ शंखेश्वरा,
राखजो मारी लाज... ओ शंखेश्वरा
तार हो तार हो प्रभुजी... हुं तो जेवो छुं तेवो तमारो
कोइ नथी अहीं मारुं... प्रभु आपी दे मुजने सहारो
पार करो... उद्धार करो... मुज जीवन नैया... ओ शंखेश्वरा
भान भूली गयो छुं, प्रभु सन्मति मुजने देजे,
राह भूली गयो छुं, मने राह बतावी देजे...
माया केरी आ दुनियामां, रझळी पड्यो छुं आज... ओ शंखेश्वरा
परमेश्वरा ओ शंखेश्वरा, शंखेश्वरा ओ नागेश्वरा
राखजो अमारी लाझ ओ शंखेश्वरा राखजो.

हे शंखेश्वर स्वामी

हे शंखेश्वर स्वामी, प्रभु जग अंतरयामी,
तमने वंदन करीअे. (२) शिव सुखना स्वामी.
हे शंखेश्वर...१

मारो निश्चय अेक स्वामी, बनुं तमारो दास,
तारा नामे चाले (२) मारा श्वासोश्वास.
हे शंखेश्वर...२

दु:ख संकटने कापो स्वामी, वांछितने आपो,
पाप हमारा हरजो (२) शिव सुखने देजो.
हे शंखेश्वर...३

निशदिन हुं मांगु छुं स्वामी ! तुम चरणे रहेवा,
ध्यान तमारुं ध्यावुं (२) स्वीकारजो सेवा.
हे शंखेश्वर...४

रात दिवस झंखु छुं स्वामी ! तमने मळवाने,
आतम अनुभव मांगु (२) भव दुःख टळवाने.
हे शंखेश्वर...५

करुणाना छो सागर स्वामी ! कृपा तणा भंडार,
त्रिभुवना छो नायक (२) जगना तारणहार.
हे शंखेश्वर...६

मन रमे मन रमे...

(राग - मनवसी मनवसी)

मन रमे मन रमे मन रमे रे...
प्रभु तारुं नाम मुज मन रमे रे...
अंतरिक्षमां मोटुं धाम, श्रद्धा भक्तिनुं ए ठाम,
पारस पारस जपता नाम, मीटे मारा क्रोध ने काम... १
वदन शारद पूनम चंद, दरिशन देखत सुखनो कंद,
टाळे मिथ्या मोहना फंद, उल्लसे दिलमां परमानंद... २
नयन युगल तव परम विशाल, धवल दंतनी पंक्ति रसाल,
सोहे अधर ज्युं लाल गुलाल, प्रभुजी परम दयाल... ३
मुक्तिनुं तिलक चमके भाल, ना रहे संसार जंजाल,
उमटे हर्ष अंगे अंग, पूजता प्रभुने नवे अंग... ४
जे कोइ करशे पारसगान, ऋद्धि वृद्धि ने पामशे मान,
अंते लही ते केवलज्ञान, थाशे '**अजित**' आप समान... ५

पास शंखेश्वरा

पास शंखेश्वरा सार कर सेवका, देव कां ऐवडी वार लागे,
कोडी कर जोडी दरबार आगे खडा, ठाकुरा चाकुरा मान मांगे...

प्रगट था पासजी मेली पडदो परो, मोड असुराणने आप छोडो,
मुज महिराण मंजूषमां पेसीने, खलकना नाथजी बंध खोलो...

जगतमां देव जगदीश तुं जागतो, ऐम शुं आज जिनराज ऊंघे,
मोटा दानेश्वरी तेहने दाखीऐ, दान दे जेह जग काल मोंघे...

भीड पडी जादवा जोर लागी जरा, तत्क्षण त्रीकमे तु ज संभार्यो,
प्रगट पातालथी पलकमां ते प्रभु, भक्त जन तेहनो भय नवार्यो..

आदि अनादि अरिहंत तु ऐक छे, दीन दयाळ छे कोण दुजो,
'उदयरत्न' कहे प्रकट प्रभु पासजी, पामी भयभंजणो ऐह पूजो...

पार्श्वनाथ जाप स्मरण

ॐ नमो भगवते... श्री पार्श्वनाथाय, पार्श्वनाथाय प्रभु पार्श्वनाथाय
शंखेश्वर मंडण पार्श्व० जीरावला मंडण पार्श्व० नागेश्वर मंडण पार्श्व०
नाकोडा मंडण पार्श्व० चिंतामणी प्रभु पार्श्वनाथाय०
धरणेन्द्र पद्मावती परिपूजिताय, शंखेश्वरा प्रभु पार्श्व० ॐ नमो...
।। शंखेश्वर शरणं नमो जिणाणं, पार्श्वनाथ शरणं नमो जिणाणं।।

।। ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथाय नमः।।

।। ॐ ह्रीं श्रीं धरणेन्द्र पद्मावती परिपूजिताय
अर्हं श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथाय नमः।।